

INTERNATIONAL

Conference

On

Śabdārthatattvavimarsah

(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)

5 th & 6 th March, 2019

Proceedings

Editors :

Dr. Swarup Singha,

Dr. Uttam Biswas,

Rajib Sinha,

Asit Kr. Sau



Organised by :

Vidyasagar University
Sanskrit Alumni Association



In Collaboration with

Department of Sanskrit,
Vidyasagar University

**International Conference
On
Śabdārthatattvavimarśaḥ
(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)**

5 th & 6 th March, 2019

Proceedings

Editors :

**Dr. Swarup Singha, Dr. Uttam Biswas,
Rajib Sinha, Asit Kr. Sau**



**Organised by : Vidyasagar University
Sanskrit Alumni Association**



**In Collaboration with : Department of Sanskrit,
Vidyasagar University**

International Conference
On
Śabdārthatattvavimarśaḥ
(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)

प्रकाशनम्

5 th March, 2019

ISBN – 9789382-399452

मूल्यम् – ५००.००

विद्यासागरविश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागीयभूतपूर्वविद्यार्थिपरिषद्
VIDYASAGAR UNIVERSITY SANSKRIT ALUMNI ASSOCIATION
पश्चिममेदिनीपुरम्, पश्चिमवङ्गः

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषयः	लेखकाः	पृष्ठाङ्काः
1	शाब्दिकानां शब्दस्वरूपविमर्शः	जयदेवदिन्दा	1
2	स्फोटतत्त्वमीमांसा	अभिषेकमुखाज्जी	8
3	शाब्दबोधः	डा. वामदेवसेनापतिः	12
4	संक्षेपशारीरकानुसारेण वेदान्तवाक्यस्य अखण्डार्थप्रतिपादनपद्धतिः	डा. देवाञ्जनदासः	15
5	व्याकरणशास्त्रे शब्दार्थसम्बन्धः	बाबलुप्रामानिकः	17
6	साहित्यदर्पणदिशा अभिधालक्षणाव्यञ्जनाविमर्शः	भोलेश्वरप्रधानः	22
7	ध्वनिचिन्तने शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	सोमनाथ-सेनापतिः	24
8	“न्यायवैशेषिकनये शब्दतत्त्वविमर्शः”	देवार्पिता व्यानार्जी	27
9	साहित्यशास्त्रे शब्दार्थतत्त्वम्	दीपङ्करमिश्रेण	31
10	सांख्ये शब्दस्वरूपम्	गोविन्ददासः	36
11	काव्यलक्षणोदितः शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	श्रीमान् गोपाल आचार्यः	39
12	वाक्यस्फोटस्य शाब्दबोधहेतुत्वनिरासः	कृष्णगोपालपात्रः	43
13	ओम्-इति शब्दतत्त्वम् ; तदेव एव जगत्कारणम्	वाणेश्वरजाना	49
14	अलंकारचिन्तने सूर्याग्निसूक्ते	चन्दन-मण्डलेन	51
15	मीमांसानये शब्दतत्त्वविमर्शः	देवाशीषमिश्रेण	54
16	पदार्थबोधघटित-शास्त्रीयसिद्धान्तः	डा. खोकनभट्टाचार्यः	57
17	अर्थनिष्पत्तौ वैदिकस्वर-काव्यशास्त्रशक्त्योः सादृश्यपर्यालोचनम्	मौमिता खाण्डया	61
18	आस्तिकदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः	नाडुगोपालवेरा	65
19	भिक्षुशब्दानुशासनस्य कतिपयानां सूत्राणां तुलनात्मकमध्ययनम्	निर्मलकुमारराहा	69
20	साहित्यशास्त्रे अभिधा-लक्षणा-व्याञ्जनातत्त्वविमर्शः	निताइपालः	72
21	मालविकाग्निमित्रमिति दृश्यकाव्ये प्रयुक्तः वैदिकशब्दविमर्शः	पापनचन्दः	74
22	शब्दशक्तिविचारः	पापियावेरा	76
23	वर्णसमान्याः-एकं विश्लेषणम्	परमेशःभट्टाचार्यः	80
24	बौद्धार्थनिरूपणम्: एकमध्ययनम्	पारमितारायः	88
25	भिक्षुशब्दानुशासने कर्मतत्त्वविमर्शः	डॉ.प्रशान्तकुमारमहला	92
26	रुय्यककृते अलंकारसर्वस्वे व्याञ्जनाविमर्शः	डा. प्रितमरोजः	97
27	अलङ्कारस्य सप्तमवेदाङ्गत्वम्	राइचरणकामलः	102
28	शब्दानुशासनशास्त्रदिशा शब्दार्थत्वनिरूपणम्	डा. रुवेलपालः	106
29	वागर्थविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये... इत्याह्वयश्लोकप्रतिपादितशब्दार्थतत्त्वस्य विमर्शः	सनातन-दासः	112
30	श्रीप्रफुल्लकुमारमिश्रकृतिसम्भारस्य ‘तथापि सत्यस्य मुखम्’ पद्यकाव्ये शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	श्री श्यामल गोस्वामी	116
31	नामार्थतत्त्वमीमांसा	श्रीमन्तभद्रः	120
32	शाब्दबोधे तात्पर्यतात्पर्यनिर्णयः	शौमित्राचार्यः	127
33	शाब्दबोधमीमांसा	सौरभमण्डलः	134
34	चित्सुखदर्शनदिशा शब्दार्थविमर्शः	सौभिकविशबासः	138
35	शब्दस्य लक्षणाशक्तिविमर्शः	शुभमयपाहाड़ी	140
36	शब्दस्यार्थप्रकाशे शक्तेः भूमिका	उत्तमकुमारवेरा	143

37	পাণিনীয়ব্যাকরণে মাহেশ্বরসূত্রবিমর্শ:
38	শব্দ: বহোতি বিমর্শ:
39	সাহিত্যশাস্ত্রে লক্ষণাশক্তি: শাব্দবোধ
40	পূর্বমীমাংসায়াং উত্তরমীমাংসায়াস্ত্ব ধর্মশব্দস্য অর্থবিশ্লেষণ
41	দর্শনশাস্ত্রে শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ:
42	ব্যঞ্জনায়া: প্রভাব:
43	সাহিত্যশাস্ত্রে কাকোরিভ্যন্তরকত্ব
44	ন্যায়সিদ্ধান্তমুক্তাবলীসম্মতলক্ষণাবিমর্শ:
45	শাব্দিকমতে শব্দস্বরূপ
46	ব্যাকরণশাস্ত্রে শব্দদ্বৈতবাদ:
47	কাব্যশাস্ত্রিণাং মতেঃপ্রতিপাদ্যকর্তে: স্বরূপবিশ্লেষণ
48	প্রমিতাধিরণানুসারেণ শব্দব্রহ্ম
49	উত্তররামচরিতনাটকে অর্থব্যঞ্জনাবিমর্শ:
50	ব্যাকরণমীমাংসাশাস্ত্রয়ো: শব্দার্থতত্ত্বসমন্বয়
51	সাহিত্যশাস্ত্রে বৃত্তিবিমর্শ:
52	স্ফোটতত্ত্ববিচার:
53	কুন্তকনয়ে শব্দার্থতত্ত্ববিচার:-একমধ্যয়ন
54	অলংকারশাস্ত্রে ধ্বনিতত্ত্ববিমর্শ:
55	বৈশিষ্ট্যিকব্যাকরণযোর্মতে শব্দতত্ত্বসমীক্ষণ
56	অপভ্রংশেঃশাব্দবোধসমীক্ষা
57	বেদানুগামীন্যায়নয়ে শাব্দবোধকারণ
58	শব্দার্থতত্ত্বে বক্রগতি:
59	প্রমাণশব্দার্থনিরূপণ
60	শব্দ: বিভূ: নীত্ব
61	নাট্যশাস্ত্রবিবেচনে শব্দার্থবিমর্শ
62	অভিধানলক্ষণাব্যঞ্জনাবিমর্শ
63	মহাভাষ্যকার পতঞ্জলি মতে শব্দার্থবোধ
64	বৈদিক সাহিত্য ও শব্দার্থবিজ্ঞান
65	আনন্দবর্ধনের দৃষ্টিতে ব্যাচাৰ্থ - প্রতীয়মানার্থবিচার
66	ন্যায়-বৈশেষিক মতে শব্দ বিমর্শ
67	ন্যায়বৈশেষিক শাস্ত্র ও মীমাংসা শাস্ত্রে শব্দার্থতত্ত্বের তুলনামূলক আলোচনা
68	গুণশব্দার্থতত্ত্ববিবেচন
69	সাহিত্যে শব্দশক্তি : অভিধা, লক্ষণা, ব্যঞ্জনাবিমর্শ
70	বেদব্যাকরণযোগে শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ
71	ন্যায় বৈশেষিক মতে শব্দার্থ তত্ত্ব
72	ন্যায় বৈশেষিক দর্শনে বাক্যার্থ জ্ঞানের হেতু - একটি সমীক্ষা
73	মীমাংসামতে শব্দবোধ : ভাবনা ও লিঙ্ক-এর বিশেষ সম্বন্ধ
74	কাব্যপ্রকাশের-আলোকে-ব্যঞ্জনা
75	ন্যায়-বৈশেষিকদর্শনসম্মত শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ

মনোজবর্মণ:	146
সুরেনকুমারমহাপাত্র:	148
ডা. হীরালালদাস	151
পঙ্কজকুমারমহাপাত্র	
মদনপাত্র:	154
মধুসূদন দাস:	157
মৌমিতামাত্রা:	161
মৌসুমীপাল:	165
রজনমণ্ডল:	169
রাসমণি ঘোড়ই	172
সন্দীপচর্জী	175
সঞ্জয়মণ্ডল:	178
শারদাপণ্ডা	183
সোমামাইতি:	186
টুম্পা জানা	189
অনন্যাসরকার	192
গীতাঞ্জলিপ্রিয়া	200
প্রীতমমণ্ডল:	203
শশাঙ্কশেখরপাত্র:	209
সুকদেবসাহু:	212
উদয়শঙ্করখাটুয়া	215
পুষ্পেন্দ্রদাস:	222
প্রসেনজিতসূত্রধর:	225
আরতিমাইতি	234
	236
বামাপদ বাউরী	238
সোমনাথ সাহা	241
অদিতি সামন্ত	247
অরুণ সরকার	250
অভিজিৎ পণ্ডিত	257
বৈশাখী মাকাল	260
বৈশাখী কান্ডার	268
কালীপদ মন্ডল	271
কনকপ্রভা সরকার	274
মন্টু চৌবে	276
মানু মিত্র	278
মৌমিতা হালদার	280
রাজেশ প্রামাণিক	281
সঞ্জিতা পাত্র	289
শুভা সরকার	291

76	আচার্য ভর্তৃহরির মতে শব্দব্রহ্ম	শিখা বিশাই	293
77	বাক্যপদীয়ে শব্দার্থতত্ত্বচিন্তন	সুবীর দলুই	296
78	কাব্যসাহিত্যে শব্দার্থবিবেচনা	সুরত কুমার মান্না	300
79	শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শঃ	সুপর্ণা মণ্ডল	303
80	কাব্যশাস্ত্রে অভিধা লক্ষণা ব্যাঞ্জনা	সুস্মিতা পোড়িয়া	306
81	কাব্যপ্রকাশের আলোকে লক্ষণা	তরুণ কুমার ভূঞা	309
82	কিরাতার্জুনীয়ম্ মহাকাব্যে প্রথমসর্গে প্রযুক্ত শব্দসমূহের ঘণ্টাপথটীকানুসারে ব্যাকরণাত্মক বিশ্লেষণ	চন্দন মণ্ডল	312
83	মীমাংসাদর্শনে শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ	নগিতা সাহা	317
84	উপনিষদ ও শব্দব্রহ্ম	প্রসেনজিৎ মণ্ডল	323
85	গীতাসু শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শঃ	রাজীব ভট্টাচার্য	325
86	সাহিত্য শাস্ত্রে শব্দার্থ তত্ত্ব বিমর্শ	তুষার পাত্র	326
87	কাব্যপ্রকাশানুসারে অভিধা, লক্ষণা, ব্যাঞ্জনা - পর্যালোচনা	রানু কোলে	330
88	শব্দের আলোকে ব্রহ্ম	সুকন্যা সরকার	333
89	বৈয়াকরণদের স্ফোটতত্ত্ব মীমাংসা	অনিমা সাহু	336
90	শাব্দবোধের কারণসমূহ সমীক্ষা	দীনবন্ধু মণ্ডল	341
91	পরমলঘুমন্ত্রণায়াম্ শাব্দশক্তিনিরূপণম্	প্রলয়: শঙ্কর: অধিকারি	344
92	শ্রীহিবরামেন্দ্রসরস্বতীবিরচিতসিদ্ধান্তরত্নপ্রকাশস্থিতপ্রতিপদিকার্থবিচারবিমর্শঃ	সুকান্তমান্না	347
93	Vamana's notion of <i>lakṣaṇa</i> in the light of his definition of <i>vakrokti</i>	Dr. Pratim Bhattacharya	352
94	The Logico-Linguistic Analysis Of Sabda Pramana : With Special Reference To Advaita Vedanta	Dr. Rasmita Satapathy,	356
95	The word 'Tātparya' and its meaning in Indian Rhetoric Grammar	Dr. Tarak Jana,	360
96	Exploring The Meaning Of The Terms Used In The Nyāyasutra	Junashmita Bhuyan	363
97	লিঙর্থবিমর্শঃ	স্নেহালদেশপাণ্ডে:	368
98	অভিধা-লক্ষণা-ব্যাঞ্জনাবিমর্শঃ	সুপ্রিয়া বেরা	378
99	শাব্দবোধে কেচন বিপদা: ন তে শাব্দপ্রতিপাদা:	কৃষ্ণপদদাস-অধিকারি	383

आस्तिकदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः

वेदस्य प्रामाण्योपरि भारतीयदर्शनस्य भेदद्वयं प्राप्यते- आस्तिकं नास्तिकं च। वेदस्य प्रामाण्यं येन स्वीक्रियते सः आस्तिकः। वेदस्य प्रामाण्यं येन न स्वीक्रियते सः नास्तिकः। मनुना उक्तम्-

"योऽवमन्येते ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः। // स साधुभिः वहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः॥"

स्मृ- धातोः क्तिन्- प्रत्ययेन 'स्मृति' इति शब्दः जायते। अस्माकं प्रात्यहिकजीवने स्मृतेः गुरुत्वमस्ति। परन्तु स्मृतेः स्वरूपविषये दार्शनिकसम्प्रदायेषु मतभेदाः परिलक्ष्यन्ते। स्मृतिः का? स्मृतिः यथार्थज्ञानं भवितुं शक्नोति न वा इत्यस्मिन् विषये मतानैक्यं परिलक्ष्यते दर्शनशास्त्रेषु।

पश्चात्त्यमनोविद्यायां स्मृतेः लक्षणं परिलक्ष्यते। Woodward¹ इति महाभागेन स्मृतेः वैशिष्ट्यत्रयम् उल्लिखितम्। वैशिष्ट्यत्रयं यथा - L, I, R.² 'L'- इति वर्णेन 'Learning' अर्थात् शिक्षणमेव बोध्यते। यस्मिन् विषये ज्ञानम् उत्पद्यते तस्य स्मृतिः भवति। 'I'-इति वर्णेन 'Interval' अर्थात् समयव्यवधानमेव बोध्यते। अतः स्मृते उत्पादने कालस्य व्यवधानम् आवश्यकम्। कालस्य व्यवधाने अर्जितज्ञानं संरक्षितं भवति। 'R'-इति वर्णेन Reproduction अर्थात् पुनरुद्देकम् एव बोध्यते। संरक्षितविषयाणां यथासमये उद्दीपकसहायेन प्रयोग एव पुनरुद्देकम्। अतः स्मृतेः पक्षत्रयमस्ति- ज्ञानग्रहणं संरक्षणं पुनरुद्देकं च। भारतीयास्तिकदर्शनेषु स्मृतिभावना अत्र प्रकाशिता भवति।

न्यायदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः

भारतीयदर्शनस्य भिन्नशखायां स्मृतेः स्वरूपविषये भिन्नमतं परिलक्ष्यते। न्यायदर्शने स्मृतेः स्वरूपं गुरुत्वसहायेन वर्णितम्। "स्मरणन्तु आत्मनो ज्ञ स्वाभाव्यात्"³ -अस्मिन् सूत्रे गौतमेन उक्तं ज्ञानम् आत्मनः गुणः। अतः स्मरणमपि आत्मनः गुणः इति विषयः गौतमेन प्रतिपादितः। स्मरणम् आत्मगुणः इति कथनेन आत्मनः अनित्यत्वमपि निराकरोति गौतमः। बौद्धमतानुसारेण बुद्धिसन्तानमेव स्मृतेः कारणम् इति विषयः एव नैयायिकेन निराक्रियते। 'आत्मन एव स्मरणं, न बुद्धिसन्तानमात्रस्य इति'⁴ कथं स्मृतिः नित्यात्मनि उत्पद्यते? महर्षिणा उक्तम् - 'ज्ञ-स्वभाव्यात्'। अर्थात् ज्ञानमेव आत्मनः स्वभावः। नव्यन्यायनये संस्कारमेव स्मृतेः कारणम्। परन्तु गौतमेन उक्तं प्रणिधानतः अधर्मपर्यन्तमेव सप्तविंशतिः विषयाः स्मृतेः कारणम्। न्यायसूत्रे उक्तम्-"प्रणिधान-निवन्ध-अभ्यास-लिङ्ग-लक्षण-सादृश्य-परिग्रह-आश्रय-आश्रित-सम्बन्ध-आनन्तर्य-वियोग-एककार्य-विरोध-अतिशय-प्रसि- व्यवधान-सुख-दुःख-इच्छा-द्वेष-भय-अर्थित्व-क्रिया-राग-धर्म-अधर्म निमित्तेभ्यः"⁵

महर्षिमतं ज्ञानम् आत्मनः गुणः। अहम् अजानाम्, अहं जानामि, अहं ज्ञास्यामि च इत्यादिरूपेण ज्ञानम् आत्मनि उत्पद्यते। अर्थात् ज्ञानं भूतकाले वर्तमानकाले भविष्यत्काले च आत्मनि उत्पद्यते। स्मरणं त्रिकालव्यापी न भवति। केवलम् अतीतकालस्य ज्ञातविषयस्य स्मृतिः भवति। नव्यन्यायमते स्मृतिः संस्कारस्याधीना। "संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः"⁶ अर्थात् केवलं भावनाख्या-संस्कारतः सृष्टिज्ञानमेव स्मृतिः। वेगः स्थितिस्थापकः च संस्कारस्य अपरं विभागद्वयम्। परन्तु स्मृतेः जनकः भावनाख्या-संस्कारः। संस्कारोऽयं जीवात्मनि वर्तते। लक्षणस्थितेन "संस्कार" इति शब्देन भावनाख्या-संस्कारः एव बोध्यते। लक्षणस्थितेन "ज्ञानं" इति पदेन संस्कारध्वंसे अतिव्याप्तिः निवारिता भवति। संस्कारध्वंसं प्रति संस्कारमेव कारणं भवति। परन्तु संस्कारध्वंसः ज्ञानं न। "ज्ञानं" इति पदभिन्नलक्षणं संस्कारध्वंसे प्रयुक्तं भविष्यति। अतः "ज्ञानं" इति पदेन संस्कारध्वंसे अतिव्याप्तिः निवारिता भवति। "संस्कारजन्यम्" इति पदेन घटादिप्रत्यक्षे अतिव्याप्तिः निवारिता भवति।

प्रत्यक्षज्ञानं इन्द्रियेण सह विषयस्य सन्निकर्षेण उत्पद्यते संस्कारतः न। अतः घटादिप्रत्यक्षे अतिव्याप्तिवारणाय "संस्कारजन्यम्" इति पदं सन्निवेशितं भवति। लक्षणे "मात्र" इति पदेन प्रत्यभिज्ञायामतिव्याप्तिः निवारिता भवति। प्रत्यभिज्ञा स्मरणजन्यं भवति। परन्तु केवलं स्मरणजन्यं न भवति। तत्र इन्द्रियेण सह विषयस्य सन्निकर्षः अपि तिष्ठति। स्मृतिः केवलं संस्कारतः सृष्टिर्भवति। अतः "मात्र" पदेन प्रत्यभिज्ञायामतिव्याप्तिः निवारिता भवति।

स्मृतेः उत्पत्तिः केवलं संस्कारतः न भवति। यतः स्मृतिः भावपदार्थः। संस्कारम् अत्र निमित्तकारणम्। केवलं निमित्तकारणतः भाववस्तुः सृष्टिः न भवति। स्मृतिः एकं ज्ञानम्। अतः स्मृतेः उत्पत्तिः आत्मनि भवति। आत्मा अत्र समवायीकारणम्। आत्ममनसंयोगः अत्र असमवायीकारणम्। कालादिविषयः अत्र निमित्तकारणम्। निमित्तकारणेषु अन्यतमः संस्कारः। अतः केवलं स्मृतेः उत्पत्तिः संस्कारतः न भवति। नीलकण्ठमहाशयेन उक्तम् स्मृतिलक्षणे "केवलं संस्कारं" इति पदद्वयं यदि उक्तम् तर्हि अत्र असम्भवप्रसङ्गागच्छति। अतः "संस्कारमात्रजन्यम्" इति पदेन प्रत्यभिज्ञायाः निषेधः भवति। प्रत्यभिज्ञायां विषयस्य प्रत्यक्षं भवति। परन्तु स्मृतौ विषयस्य प्रत्यक्षं न भवति। न्यायबोधिनीकारेण उक्तम्-"वहिरिन्द्रियाजन्यत्वविशिष्ट संस्कारजन्यत्वविशिष्टज्ञानत्वं स्मृतेः लक्षणम्"⁷

“बुद्धिर्मेनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः। // प्रेक्षोपलब्धिश्चित् संवित् प्रतिपज् जसिचेतनाः”।

सांख्यदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः — सांख्यदर्शनं प्रमेयशास्त्रं न तु प्रमाणशास्त्रं न्यायदर्शनवत्। सांख्यदर्शने प्रधानरूपेण अस्ति-प्रकृतिः पुरुषः च। तत्त्वद्वयोः प्रतिष्ठानं सांख्यदर्शनस्य मुख्योद्देशः। परन्तु प्रमाणं विना प्रमेयसिद्धिः न भवति। “त्रिविधं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धिः”^{१९} सांख्यमते प्रमाणं त्रिविधम्-प्रत्यक्षम् अनुमानं शब्दश्च। प्रमायाः असाधारणकारणं प्रमाणम्। मुदीकारेण उक्तं-“प्रमीयते अनेन इति निर्वचनात् प्रमां प्रति करणत्वं गम्यते।” अतः प्रमाणनिर्वचनम् आवश्यकम्। सांख्ये क्षणमुक्तं- “असन्दिग्धाविपरीतानधिगताविषया चित्तवृत्तिः”^{१०} अर्थात् असन्दिग्धा अविपरीता अनधिगता च चित्तवृत्तिः। संशयज्ञाने अतिव्याप्तिनिवारणार्थं ‘असन्दिग्धा’ इति पदं प्रदीयते। एकाधिकरणे विरुद्धधर्मद्वयज्ञानमेव संशयः। संशये विरुद्धज्ञानं परन्तु प्रमाणेन निश्चितज्ञानं भवति। वाधितविषयकभ्रमज्ञाने अतिव्याप्तिनिवारणार्थं ‘अविपरीता’ इति विशेषणं प्रदीयते। अनेन अतिव्याप्तिनिवारणार्थम् ‘अनधिगता’ इति विशेषणम् अत्र प्रदीयते। स्मृतौ पूर्वानुभूतविषयः अस्ति। अतः स्मृतिः विषयकज्ञानम्। प्रमाणेन नूतनज्ञानं भवति। अत्र पूर्वानुभूतविषयः नास्ति। तत्त्वकौमुदीकारेण उक्तं “एतेन पर्ययस्मृतिसाधनेषु अप्रसङ्गः”।

योगदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः -- महर्षिणा पतञ्जलिना योगसूत्रे 'योगः' इति शब्दस्य अर्थः क्रियते चित्तवृत्तिनिरोधः। 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'।^{११} व्यासदेवेन व्यासभाष्ये उक्तम्- 'योगः समाधिः'। अर्थात् योगशब्दस्य अर्थः समाधिः। योगदर्शने चित्तवृत्तिः पञ्चविधा-प्रमाणम् विपर्ययः विकल्पः निद्रा स्मृतिश्च। पतञ्जलिना उक्तम्- 'प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः'। पञ्चचित्तवृत्तिनिरोधः योगः। स्मृतिविषये पतञ्जलिना उक्तम्- 'अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः'।^{१२} 'असम्प्रमोषः' शब्दस्य अर्थः प्रकाशम्। प्रमाणादिसहायेन ज्ञातविषयः अनुकूलप्रसङ्गे पुनरुद्रेकः स्मृतिः। पितृधने यथा पुत्रस्य अधिकारः वर्तते तथैव प्रमाणादिसहायेन ज्ञातविषये स्मृतेः अधिकारः वर्तते। यथा पितृधनग्रहणेन पुत्रस्य चौर्षापराधः न भवति तथा प्रमाणादिसहायेन ज्ञातविषयः ग्रहणेन स्मृतेः चौर्षापराधः न भवति। अनुभवस्यातिरिक्तविषयः स्मृत्या न गृह्यते। अनेन ज्ञायते स्मृतिः अनुभूतविषयस्य भवति। अनुभवस्य विषयः सम्पूर्णरूपेण अज्ञातः भवति। परन्तु स्मृतेः विषयः ज्ञातः भवति। प्रत्यभिज्ञायाः विषयः कश्चित् ज्ञातः कश्चित् अज्ञातः भवति। अतः प्रत्यभिज्ञा स्मृतिः न। प्रत्यभिज्ञा स्मृत्यनुभवसहायेन जायते।

(66)

ज्ञानाकाररूपेण च स्मृतिः जायते। योगमते ज्ञानस्य अंशद्वयम् अस्ति विषयांशः ज्ञानांशः च। 'अयं घटः'- इत्यत्र ज्ञानस्थले घटः (वहिरांशः) विषयांशः घटप्रकाशं स्फुरणं वा(येन घटः जायते)ज्ञानांशः। ज्ञानशब्देन प्रकाशः बोध्यते। अत्र उभययोः स्वरूपतः भेदो नास्ति। विषयभेदेन ज्ञानभेदः भवति। ज्ञानांशः सदा प्रत्यक्षं भवति। परन्तु विषयांशः प्रत्यक्षं परोक्षं च भवति। अनुभवतः संस्कारं जायते। संस्कारतः स्मृतिः जायते। अतः स्मृतेः विषयः ज्ञानं घटादिविषयः च भवति। अतः अनुभूतविषयस्य संस्कारतः चित्ते पुनरुद्रेकं हि स्मृतिः।

योगभाष्ये उक्तं स्मृतिः द्विविधा- भावितस्मर्तव्या अभावितस्मर्तव्या चा। स्वप्रकालिकस्मृतिः भावितस्मर्तव्या अर्थात् कल्पिता। जाग्रतदशायां स्मृतिः अभावितस्मर्तव्या अर्थात् यथार्थस्मृतिः। 'सा च द्वयी- भावितस्मर्तव्या चाभावितस्मर्तव्या चा। स्वप्ने भावितस्मर्तव्या , जाग्रत्समये त्वभावितस्मर्त- व्येति'।^{१४} स्मृतेः विभागः अन्यत्र न परिलक्ष्यते। यथा स्मृत्या योगं प्रति श्रद्धा जायते सा अक्लिष्टस्मृतिः। तद्विपरीतं क्लिष्टस्मृतिः। यतः वृत्तयः क्लिष्टाक्लिष्टभेदेन द्विविधा- 'वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः'।

मीमांशादर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः -- मीमांसादर्शने स्मृतिस्वरूपं न परिलक्ष्यते। परन्तु स्मृतेः प्रामाण्यविचारं परिलक्ष्यते। मानमेयोदयकारः प्रमालक्षणं कृतम्- 'प्रमा च अज्ञाततत्त्वार्थज्ञानमेव'।^{१५} अर्थात् अज्ञातपदार्थस्य यथार्थज्ञानमेव प्रमा। पूर्वकाले अज्ञातरजते रजतत्वरूपेण 'इदं रजतम्' इत्याकारेण ज्ञानमेव प्रमा। अस्य ज्ञानस्य विषयः रजतं पूर्वकाले अज्ञातः आसीत्। अतः 'इदं रजतम्' इति रूपेण ज्ञानमेव अज्ञातस्य ज्ञापकम्। रजते स्थितं रजतत्वं अस्मिन् ज्ञाने रजतत्वप्रकारकरूपेण प्रकाशितं भवति। अतः ज्ञानमिदं अज्ञातस्य ज्ञापकं तथा च यथार्थम्। अनेन कारणेन ज्ञानमिदं प्रमा।

'अज्ञातज्ञापक' इति पदसहायेन स्मृतिज्ञाने अतिव्याप्तिं निवारयति। स्मृतिः ज्ञातविषयस्य ज्ञानम्। अर्थात् स्मृतिः अज्ञातस्य ज्ञापका न भवति। अनुभवस्य विषय एव स्मृतेः विषयः भवति। अतः स्मृतिः ज्ञातस्य ज्ञापका न तु अज्ञातस्य ज्ञापका। अतः स्मृतिः न प्रमा। स्मृतेः प्रामाण्यं मम आलोच्यविषयः न।

वेदान्तदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः -- वेदान्तदर्शने स्मृतिविषये भिन्नोल्लेखः नास्ति। परन्तु प्रमालक्षणस्य व्याख्यानवसरे स्मृतेः व्याख्यानं प्राप्यते। धर्मराजाध्वरीन्द्रेण 'वेदान्तपरिभाषा' ग्रन्थे प्रमायाः लक्षणद्वयं कृतम्। स्मृतिः प्रमायाः अन्तर्भुक्ता इत्यवलम्ब्य प्रमायाः लक्षणम्। स्मृतिः प्रमायाः अन्तर्भुक्ता न इत्यवलम्ब्य प्रमायाः लक्षणम्। तत्र स्मृतिव्यावृत्तं प्रमालक्षणम्- 'प्रमात्वं अनधिगतावाधितार्थविषयकज्ञानत्वम्'।^{१६} अर्थात् यत् पूर्वकाले न ज्ञातम् तस्य विषयस्य ज्ञानलाभार्थं यदि बाधा न आगच्छति तर्हि तत् यथार्थज्ञानं प्रमा वा। लक्षणानुसारेण ज्ञातविषयस्य ज्ञानं प्रमा न, ज्ञातविषयस्य ज्ञानं स्मृतिः। यथा पूर्वं घटज्ञानं अभवत्, अद्य घटस्मरणं भवति। अद्य घटघटज्ञानं स्मृतिः।

परन्तु अस्य लक्षणस्य अव्याप्तिस्थलम् अस्ति। यत्र क्रमानुसारेण घटादिज्ञानं भवति तत्र लक्षणं न प्रयुक्तं भवति। यतः द्वितीयादिक्षणे घटज्ञानस्थले पूर्वादिक्षणे प्राप्तस्य घटज्ञानस्य स्मरणं भवति। सिद्धान्तिपक्षे उक्तम्- धारावाहिकज्ञाने विषयस्य परिवर्तनं समयपरिवर्तनेन भवति। अतः सर्वक्षणे अनधिगतविषयस्य ज्ञानं भवति। अतः अत्र अव्याप्तिस्थलं नास्ति।

ये जनाः प्रमायाः अन्तर्भुक्ता स्मृतिः मन्यन्ते तेषां मतानुसारेण प्रमालक्षणम्- 'स्मृति-साधारणन्तु अवाधितार्थविषयकज्ञानत्वम्'।^{१७} अर्थात् यस्मिन् विषये ज्ञानलाभे कापि बाधा नास्ति तत् ज्ञानं प्रमा। बाधा अर्थात् प्रतिकूलज्ञानम्। प्रमा-शब्दस्य अर्थः प्रकृतज्ञानम्। एषां मतानुसारेण प्रकृतज्ञानम् अत्र अवाधितज्ञानम्। अतः स्मृतिः यदि अवाधिता भवेत् तर्हि सा प्रमा। स्मृतिः यदि प्रमा भवति तर्हि तत्पूर्ववर्तिज्ञानं तस्य करणरूपेण स्वीकार्यम्। परन्तु पूर्वाचार्येण विषयोऽयं न स्वीकृतः।

विशिष्टाद्वैतवादिभिः प्रमालक्षणं कृतम्- 'यथावस्थितव्यवहारानुगुणं ज्ञानं प्रमा'। अर्थात् यथार्थव्यवहारस्य अनुकूलज्ञानं प्रमा। अत्र 'ज्ञानम्' इति पदेन स्मृतिः अनुभवः च इति विषयद्वयम् अभिधीयते। अतः विशिष्टाद्वैतवादिनः स्मृतेः प्रमात्वं मन्यन्ते। परन्तु वेदान्तकौमुदीकारः स्मृतेः प्रमात्वं न स्वीकरोति। तत्त्वचिन्तामणिकारेणापि उक्तम्- 'यत्र यदास्ति तत्र तस्यानुभवः प्रमा'। अत्र यथार्थानुभवस्य प्रमा स्वीक्रियते। अतः स्मृतेः प्रमात्वम् अत्र न स्वीक्रियते। अनेन प्रकारेण वेदान्तदर्शने स्मृतिविषये व्याख्यातम्।

निष्कर्षः -- भारतीयास्तिकदर्शने स्मृतेः प्राधान्यमस्ति। न्याय-वैशेषिक-योगप्रभृतिषु दर्शनेषु स्मृतिस्वरूपं यथार्थरूपेण वर्णितम्। परोक्षरूपेण सांख्य-मीमांसा-वेदान्तप्रभृतिषु दर्शनेषु स्मृतिविवरणं प्राप्यते। न्याय-वैशेषिक-योग-अद्वैतवेदान्तप्रभृतिषु दर्शनेषु स्मृतेः प्रमात्वं स्वीकृतम्। परन्तु मीमांसादर्शने स्मृतेः प्रमात्वं न स्वीकृतम्। अनेन ज्ञायते आस्तिकदर्शनसम्प्रदायेषु स्मृतेः अधिकं प्राधान्यमस्ति। योगमूत्रकारेण स्मृतेः गुरुत्वम् अधिकरूपेण प्रदीयते। चित्तस्य वृत्तिरूपेण उपस्थाप्य स्मृतेः प्राधान्यं प्रकाशयति। अस्माकं जीवने अपि स्मृतेः प्राधान्यम् अस्ति। ज्ञातविषयस्य यथार्थसमये स्मरणेन कार्यसिद्धिः भवति। स्मृतिः आवश्यकी परन्तु विस्मृतिरपि आवश्यकी। विस्मृतिसहायेन जनाः पुनः नवरूपेण ज्ञातविषयस्य स्मृतिं कर्तुं शक्यन्ते। अनेन प्रकारेण भारतीयदार्शनिकाः स्मृतेः विवरणं प्रदीयन्ते। परन्तु अत्र स्मृतिसृष्टिविषये समानता अस्ति। स्मृतेः पक्षत्रयं सर्वेषु आस्तिकदर्शनसम्प्रदायेषु स्वीकृतमस्ति। यथा- ज्ञानग्रहणं संरक्षणं पुनरुद्रेकं च। का अपि विद्वत्जनाः उक्तवन्तः- "Memory is when the perceived objects do not slip away and through impressions come back to consciousness". इति॥

तथ्यसूत्रम्-

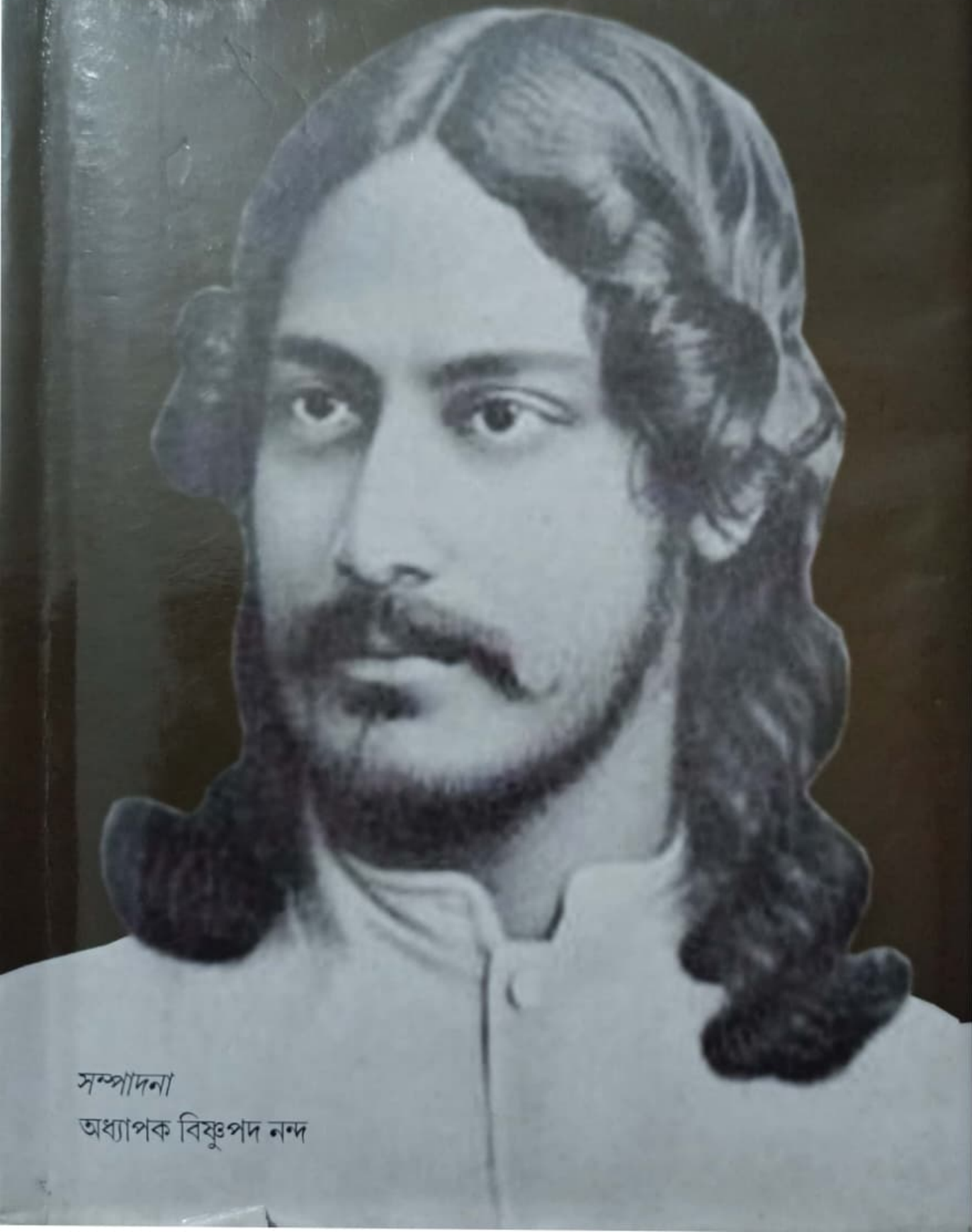
१. मनुसंहिता - २/१।
२. Psychology by Woodward।
३. न्यायसूत्रम् ३/२/४।
४. फणीभुषण तर्कवागीश सम्पादित न्यायदर्शन ओ वात्सायनभाष्य.पृ: ३६।
५. न्यायसूत्रम् ३/२/४।
६. श्री नारायणचन्द्रगोस्वामी, तर्कसंग्रह, पृ. २६०।
७. नारायणरामाचार्य कृत न्यायबोधिनी, पृ: १७।
८. प्रशस्तपादभाष्य, बुद्धिप्रकरण।
९. सांख्यकारिका, कारिका - ४।
१०. नारायणचन्द्रगोस्वामी, सांख्यतत्त्वकौमुदी, पृ: ४०।
११. पातञ्जलयोगदर्शन, समाधिपाद - सूत्रम् ।
१२. पातञ्जलयोगदर्शन, समाधिपाद - सूत्रम् १।
१३. व्यासभाष्यम्, पातञ्जलयोगदर्शन, समाधिपाद - सूत्रम् १।
१४. व्यासभाष्यम्, पातञ्जलयोगदर्शन, समाधिपाद - सूत्रम् १।
१५. मानमेयोदयो, कारिका-।
१६. शरच्चन्द्रघोषाल, वेदान्तपरिभाषा, पृ: ३।
१७. शरच्चन्द्रघोषाल, वेदान्तपरिभाषा, पृ: ३।

ग्रन्थपञ्जी-

- १) अत्रंभट्टः, तर्कसंग्रहः, सम्पा.नारायणचन्द्रगोस्वामी, कलकाता, संस्कृत पुस्तक भाण्डार, १४१३ वङ्गाब्दः २००६ आङ्गलाब्दः (तृतीयसंस्करणस्य पुनर्मुद्रणम्)।
- २) अमरसिंहः, अमरकोषः(सटीकानुवादः), सम्पा.गुरुदासविद्यानिधिः, कलकाता, संस्कृत- पुस्तकभाण्डारः, १४१७ वङ्गाब्दः २०१० आङ्गलाब्दः।
- ३) ईश्वरकृष्णः, सांख्यतत्त्वकौमुदी(अध्यापनासहिता), सम्पा.नारायणचन्द्रगोस्वामी, कलकाता, संस्कृत पुस्तक भाण्डार, १४०६ वङ्गाब्दः, १९९९ आङ्गलाब्दः।
- ४) तर्कवागीशः, फणिभुषणः, न्यायपरिचयः, कलकाता, पश्चिमवङ्गराज्यपुस्तक पर्षद्, २००६(तृतीयमुद्रणम्)।
- ५) गौतमः, न्यायदर्शनम्(प्रथमखण्ड), अनुवादकः व्याख्याता च फणिभुषण- तर्कवागीशः कलकाता, पश्चिमवङ्गराज्यपुस्तक पर्षद्, २०१४(पञ्चमप्रकाशनम्)।
- ६) गौतमः, न्यायदर्शनम्(वात्सायन कृत भाष्यसह), अनुवादकः व्याख्याता च कालीवरवेदान्तवागीशः, कलकाता, संस्कृत पुस्तक भाण्डार, २०१६ आङ्गलाब्दः।
- ७) पाणिनिः, अष्टाध्यायी, सम्पा.तपनशङ्करभट्टाचार्यः, कलकाता, संस्कृत बुक डिपो, २०१२(प्रथमसंस्करणस्य पुनर्मुद्रणम्)।
- ८) प्रशस्तपादः, प्रशस्तपादभाष्यम्(द्वितीय भागः), सम्पा. ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य, कलकाता, संस्कृत बुक डिपो, २०१७, (द्वितीयमुद्रणम्)।
- ९) सदान्द्रयोगीन्द्रः, वेदान्तसारः, सम्पा.लोकनाथचक्रवर्ती, कलकाता, पश्चिमवङ्ग राज्य पुस्तक पर्षद्, मार्च २०१४ (द्वितीयमुद्रणम्)।
- १०) पतञ्जलिः, पातञ्जलयोगदर्शनम्(योगभाष्यटीकासहिता), सम्पा.श्रीमद् हरिहरानन्दआरण्य, कलकाता पश्चिमवङ्गराज्य पुस्तक पर्षद्, डिसेम्बर २०१५(सप्तमसंस्करणम्)।
- ११) भट्टाचार्यः समरेन्द्रः, भारतीयदर्शनम्, कलकाता, बुक सिण्डिकेट प्राइमेट लिमिटेड, २०१०(पुनर्मुद्रणम्)।
- १२) धर्मराजाध्वरीन्द्रः, वेदान्तपरिभाषा, सम्पा.करुणासिन्धुदासः, कलकाता, संस्कृत पुस्तक भाण्डार, २०१५(पुनर्मुद्रणम्)।

नाडुगोपालदासः, शोधकर्ता, विद्यासागरविश्वविद्यालयः।

সর্বভোমুখী রবীন্দ্রনাথ



সম্পাদনা

অধ্যাপক বিষ্ণুপদ নন্দ

সর্বতোমুখী রবীন্দ্রনাথ

সম্পাদক
অধ্যাপক বিষ্ণুপদ নন্দ

সম্পাদকমন্ডলী
ড. মুক্তিপদ সিনহা, ড. দেবশীষ মুখা,
ড. ললিত ললিতাভ মহাকুড়, ড. সমীর চক্রবর্তী,
ড. মায়া গুপ্তা, শ্রীমতী সোমা দত্ত, শ্রীমতী অন্তরা মিত্র



শিক্ষা বিভাগ
যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়



প্রতাপচন্দ্র কলেজ অফ এডুকেশন

বিবিধ প্রসঙ্গ: বিষয়: সর্বতোমুখী রবীন্দ্রনাথ

Sarbatomukhi Rabindranath

ISBN : 978-93-83660-55-1

প্রকাশকাল : ৯ অগ্রহায়ণ, ১৪২৬

নভেম্বর ২৬, ২০১৯

প্রকাশক : রেজিস্ট্রার, যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়

আর্থিক সহযোগীতা : প্রতাপচন্দ্র কলেজ অফ এডুকেশন

প্রচ্ছদ : ট্রেড কন্

মুদ্রক : ট্রেড কন্ (৯১২৩০১৮৭৬৬)

প্রাপ্তিস্থান : শিক্ষাবিভাগ, যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়

মূল্য : ৯৯৯.০০ টাকা

২৯	রবীন্দ্রনাথ এক তীর্থ দর্শন পতিতপাবন কর	৩০৫
৩০	ঠাকুর বাড়ির সাজগোজ- রূপচর্চা অমল কান্তি পাণ্ডে	৩১৪
৩১	রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর: চিকিৎসা বিজ্ঞানের প্রেক্ষিতে জাহান আলি পুরকাইত	৩১৯
৩২	রাগ-রাগিণী ও রবীন্দ্রনাথ শ্রেয়া সেন	৩২৮
৩৩	রবীন্দ্রনাথের ঋতু-প্রকৃতির গান ও রাগসংগীতের সময়তত্ত্ব শম্পা মিশ্র	৩৪১
৩৪	প্রসঙ্গ— কয়েকটি রবিগান এর প্রেক্ষিত বিদ্যুৎ কান্তি চৌধুরী	৩৭০
৩৫	সঙ্গীত সৃজনে রবীন্দ্রনাথ তারা প্রামাণিক	৩৭৯
৩৬	শিলাইদহ পর্বে রবীন্দ্র ছোটগল্প: নিসর্গ ও মানুষ স্বপন কুমার আশ	৩৯০
৩৭	ছোট গল্পের নারী চরিত্র- চিত্রায়নে রবীন্দ্রনাথ সুপর্ণা সরকার ও বিশ্বজিৎ সরকার	৩৯৮
৩৮	কিশোর পাঠ/ ব্যাকরণ চর্চায় রবীন্দ্রনাথ সুবিমল মিশ্র	৪০৩
৩৯	রাবীন্দ্রিক সনেট মনোতোষ দাশগুপ্ত	৪১৭
৪০	আধুনিকতার আলোকে রবীন্দ্রনাথের শিক্ষাচিন্তা ও নারীভাবনা সোমনাথ রায়	৪৩৬
৪১	রবীন্দ্র ভাবনায় বর্তমান শিক্ষা-সংস্কৃতি মধুমিতা দাস	৪৪২
৪২	রবীন্দ্রচেতনায় বিজ্ঞান সোমা অধিকারী	৪৪৬
৪৩	রবীন্দ্রসাহিত্যে ইকোফেমিনিজম (Eco- feminism): রক্তকরবী অদिति মুখোপাধ্যায়	৪৫১

রবীন্দ্রচেতনায় বিজ্ঞান সোমা অধিকারী

‘আকাশ ভরা সূর্য তারা বিশ্বভরা প্রাণ,
তাহারি মাঝখানে আমি পেয়েছি মোর স্থান,
বিস্ময়ে তাই জাগে আমার গান’ —

রবীন্দ্রনাথের এই অনন্ত জিজ্ঞাসা— একজন বিজ্ঞানীরও জিজ্ঞাসা। একবিংশ শতাব্দীতে আজ আমরা এসে পৌঁছেছি। আজ বিজ্ঞান অভাবেগীরূপে এগিয়ে গেছে। ইতিমধ্যে রবীন্দ্রনাথের জন্মের পর দেড়শ বছর অতিবাহিত হয়ে গেছে। স্বাভাবিকভাবে তাই প্রশ্ন আসে- রবীন্দ্রনাথ বিজ্ঞান সম্বন্ধে কী ভাবতেন? তাঁর চিন্তা ও চেতনায় কি বিজ্ঞানের স্থান ছিল? তিনি কী শুধুই কবি-বিশ্বকবি? উত্তরে বলা যেতে পারে, তাঁর কবিসত্তার সঙ্গে বিজ্ঞানের কোনো দ্বন্দ্ব ছিল না, বরং একে অপরের সম্পর্ক ছিল সম্পৃক্ত।

বিজ্ঞানের আবির্ভাব আগে, পরে শিল্প। মানুষ যখন আত্মরক্ষার ব্যাপারে নিজেকে কিছুটা সুস্থির করার চেষ্টা করেছে তখন তার মনে সুখের কথা উদ্ভিত হয়েছে। বিজ্ঞানের দুই মূর্তি— একটি হল আটপৌরে, অন্যটি হল সৌখিন। যেখানে যন্ত্রের সাহায্যে মানুষ অভাব মোচনের চেষ্টায় নিযুক্ত হয়েছে সেখানে সে আটপৌরে, আর যেখানে দায়মুক্ত হয়ে বিশ্ব রহস্য উদ্ঘাটনের প্রচেষ্টা সেখানে সে সৌখিন, কল্পনাবিলাসী। কাব্য ও বিজ্ঞান সেখানে যমজ সন্তান। নিউটন, শেক্সপিয়ার, আইনস্টাইন, রবীন্দ্রনাথ একই কল্পনা রাজ্যের অধিবাসী। যথার্থ কবি যেমন দার্শনিক, যথার্থ বিজ্ঞানীও তেমনি দার্শনিক। উভয়েরই কল্পনা যেমন অভ্রভেদি তেমনি অতলস্পর্শী। রবীন্দ্রনাথ নিজেই বলেছেন— ‘কবিতা, বিজ্ঞান ও দর্শন ভিন্ন ভিন্ন পথ দিয়া চলিতেছে, কিন্তু একই জায়গায় আসিয়া মিলিবে।’

রবীন্দ্রনাথ বিজ্ঞান সাধক ছিলেন না সে কথা বলা বাহুল্য, কিন্তু শৈশব থেকেই একটি বিজ্ঞানের মেজাজ তাঁর মধ্যে গড়ে উঠেছিল। এ কাজে সহায়তা করেছেন তাঁর পিতৃদেব। দেবেন্দ্রনাথ আপন পরিবারে যে শিক্ষা ব্যবস্থা প্রবর্তন করেছিলেন, তার মধ্যেও বিজ্ঞান একটি বিশিষ্ট স্থান পেয়েছিল। তাঁর পাঠ্যসূচীর মধ্যে ছিল কাব্য-সাহিত্য, পাটীগণিত, বীজগণিত, রেখাগণিত এবং প্রকৃতি বিজ্ঞান। সীতানাথ দত্ত নামে একজন শিক্ষক মাঝে মাঝে আসতেন বিজ্ঞানের তত্ত্ব হাতে কলমে শেখাবার জন্য। মেডিক্যাল কলেজের একজন ছাত্র আসতেন শরীরের হাড় চেনাবার বিদ্যা শেখানোর জন্য। তাঁর পাশের ঘরে একটি কক্ষাল যে সারাক্ষণ ঝুলত একথা তিনি অক্ষয়কুমার দত্তের ‘তত্ত্ব বোধিনী’

এবং বর্তমানে তিনি যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়ে ইংরেজী বিভাগের অধ্যাপক। তাঁর গবেষণার বিষয় ছিল 'Reinterpreting Tagore: Society, Culture and Decolonization'. সেক্সপীয়র, পোস্ট-কলোনিয়াল তত্ত্ব, রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর এবং অক্ষমতা চর্চা বিষয়ে তিনি বহু প্রবন্ধ প্রকাশ করেছেন। তিনি যুগ্ম ভাবে 'Education and Awareness among Persons with Disability in the Sundarban Areas: A Survey of four selected blocks' (যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়) বই এর লেখক এবং Higher Education, Universities and Excellence: The Bengal Narrative (যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়) বই এর সম্পাদক।

পতিতপাবন কর (জন্ম, ১৯৯৪) বর্তমানে রাজা নরেন্দ্রলাল খান মহিলা মহাবিদ্যালয়, মেদিনীপুর-এ শিক্ষাবিভাগে অতিথি শিক্ষক পদে কর্মরত। শ্রী কর একজন স্বভাব কবি। তাঁর প্রকাশিত কাব্যগ্রন্থগুলি হল 'বসন্ত বাতাসে বর্ণালী' (ভাষাচিত্র), 'স্বপ্নহীন অন্ধকারে যখন একাকী' (সাহিত্যশ্রী), 'অবিচ্ছেদ্য প্রেম অন্তহীন নীরবতা' (পত্রলেখা)। শ্রী কর-এর সম্পদনায় প্রকাশিত প্রবন্ধ পুস্তকটি হল— 'শিক্ষা-সাহিত্য-সংস্কৃতি বীক্ষণ' (লালমাটি)।

সৌরভী আটা (জন্ম, ১৯৯৪) যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষাবিভাগে ইউ.জি.সি. জুনিয়র রিসার্চ ফেলো হিসাবে গবেষণারত। তাঁর গবেষণার বিষয় 'Mind Mapping'। অক্ষমতা চর্চা বিষয়ে তিনি নিয়মিত মননশীল প্রবন্ধ প্রকাশ করে থাকেন।

তারা প্রামানিক (জন্ম, ১৯৮১) বর্তমানে বিবেকানন্দ মহিলা মহাবিদ্যালয়, কলিকাতা-তে শিক্ষা বিভাগে বিভাগীয় প্রধান পদে কর্মরত। তিনি যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়ে শিক্ষাবিভাগে 'বৃদ্ধাশ্রম' বিষয়ে গবেষণা রত। জাতীয় এবং আন্তর্জাতিক স্তরের গবেষণাধর্মী বিভিন্ন পত্রিকা এবং বইতে নিয়মিত লেখিকা।

সোমা অধিকারী (জন্ম, ১৯৯২) যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষাবিভাগে 'ভগিনী নিবেদিতা' বিষয়ে গবেষণারত। তিনি নন্দীগ্রাম স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়-এ শিক্ষাবিভাগে সহকারী অধ্যাপিকা পদে কর্মরত। ভারতীয় বিভিন্ন শিক্ষাদার্শনিকদের উপর তিনি নিয়মিত মননশীল প্রবন্ধ প্রকাশ করছেন।

ড. অভ্যেদানন্দ পাণিগ্রাহী (জন্ম, ১৯৭০) নেতাজী সুভাষ মুক্ত বিশ্ববিদ্যালয়ে বি.এড. কোর্সে সঞ্চালক পদে রয়েছেন। সুবক্তা ড. পাণিগ্রাহী বিশেষ শিক্ষা বিষয়ে নিয়মিত গবেষণা মূলক প্রবন্ধ প্রকাশ করে থাকেন।

INTERROGATING CULTURES OF COMPLICITY AND RESISTANCE

A Women's Studies Compendium



Edited by
Aparna Bandyopadhyay

Interrogating Cultures of Complicity and Resistance

A Women's Studies Compendium

Edited by
Aparna Bandyopadhyay

Advisory Editorial Board

Parna Ghose
Nandini Jana
Sudarshana Sen
Sutapa Sengupta
Aparajita Dhar

Editorial Assistant

Shreya Roy

PAIOLCK
Kolkata, 2019

*Interrogating Cultures of Complicity and Resistance:
A Women's Studies Compendium*

Edited by
Dr. Aparna Bandyopadhyay

First Published: 2019

Copyright © P.A.I.O.L.C.K. 2019

No portion of this publication may be reproduced or transmitted by any means in part or whole by any method of reproduction or copying whether electronic/digital or otherwise, without the express, prior and written permission of the author and the publisher. The responsibility for the facts stated, opinions expressed and conclusions reached is entirely that of the author of the publication and the Paschimbanga Anchalik Itihas O Loksanskriti Charcha Kendra, as a body, accepts no responsibility for them.

ISBN 978-93-88207-72-0 (Paper Back)
978-93-88207-73-7 (E-Book)

Published by
Malay Das for
P.A.I.O.L.C.K.,
Baruipur, Kolkata - 700 144
<anchalikitihhas@gmail.com>

Printed at
S. P. Communications Pvt. Ltd,
31B, Raja Dinendra Street, Raja Ram Mohan Roy Sarani,
Kolkata - 700 009

Price
₹ 500/-

<i>Vijay Kailas Shirture</i>	
Representation of Domestic Violence and Social Class in Upmanyu Chatterjee's <i>Way to Go</i>	75
<i>Shubhra Singh Sardar</i>	
Relocating Women in Nationalist Movements: A Study of Tahmima Anam's <i>The Golden Age</i> from the Gender Perspective	84
<i>Anindita Sarkar</i>	
Negotiating with the Triple Jeopardy of Migration, Motherhood and Patriarchy in Jhumpa Lahiri's <i>The Namesake</i>	94
<i>Putul Sathe</i>	
Reading Representation of Dalit Masculinities in Dalit Narratives	103
<i>Asmi Basu</i>	
Understanding Motherhood: Investigating a History of Glorification, Repression and Appropriation	111
<i>Hiya Chatterjee</i>	
Friendships beyond Class: Female Desire in <i>The End of Innocence</i> and <i>Sister of My Heart</i>	122
<i>Promita Roy</i>	
Experiencing <i>Bangla'r Upokatha</i> through a Gender Lens: An Alternative Perspective on Bangla Folklore	132
<i>Tanima Dutta</i>	
From Bane to Boon: A Feminist Study of the Classic Fairytale-Myths of Cinderella Complex in Garry Marshall's <i>Pretty Woman</i>	138

About the Authors

Aisarya Dutt Roy is Ph.D Research Scholar, Centre for Women's Studies, University of Hyderabad.

Anindita Sarkar is M.Phil Research Scholar, Comparative Literature, Jadavpur University.

Ankita Mookherjee is Lecturer in English, WB National University of Juridical Sciences, Kolkata.

Arunima Rayalu is Assistant Professor, Shivaji Science College, Nagpur.

Asmi Basu is Assistant Professor, Dinabandhu Andrews Institute of Technology and Management, Kolkata.

Hiya Chatterjee is Assistant Professor, Department of English Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya.

Jana Bandyopadhyay is Associate Professor, Department of Sanskrit, Hooghly Women's College.

Poulami Aich Mukherjee is Professor in History, Assumption College Autonomous, Mahatma Gandhi University, Kottayam, Kerala.

Promita Roy is pursuing MA at the Department of Sociology, University of Calcutta.

Purbasha Auddy is Ph.D Research Scholar, School of Cultural Texts and Records, Jadavpur University, Kolkata.

Friendships beyond Class: Female Desire in *The End of Innocence* and *Sister of My Heart*

Hiya Chatterjee

The primary agenda of South Asian feminist scholarship, since its very emergence, has been to carve a niche for itself first to dispel the charges of being a West-derived discourse, much like Partha Chatterjee labels nationalism to be, and second, to establish its difference from Western hegemonic discourse which mostly tends to homogenize the Third World Woman under a single, monolithic category. The 'burden of authenticity', as Ania Loomba calls it, weighed down on Indian feminism for a long time, until works like Susie Tharu and K. Lalitha's *Women's Writings in India* offered evidence that feminist tracts existed in India even before colonial rule.¹ Moreover, feminist activism in India, during and after colonial rule was distinct in each region, separately addressing the immediate and specific needs of each geographical area. Post-independence, one of the major issues which brought these regional women's organisations together was the response to the Shiv Sena's attack on Deepa Mehta's 1998 film *Fire*, a pathbreaking film in its depiction of women's sexuality and lesbianism. C. Shah remarks that "[t]he women's movements were the first to articulate concern over the control over sexuality and the societal constructions of gender and are hence the closest link and support for the nascent 'queer' movements in the country."² Although homosexuality has been condemned as a corrupting influence of the West, and as profane products of globalization, funded by transnational organisations, it has been well-established that same-sex love and relations are in no way borrowed concepts but are integral to the literary and cultural tradition of South Asia. In their seminal anthology *Same-Sex Love in India*, Ruth Vanita and Saleem Kidwai show the different traditions of homosexuality

Book Chapter Published in the Year: 2020

HUMANISM IN INDIAN EDUCATION

(Peer Reviewed)

(Proceedings of the International Seminar)

Chief Editor

Prof. (Dr.) Swagata Das Mohanta

Hon'ble Principal,

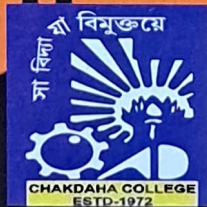
Chakdaha College, West Bengal, India

Editor

Dr. Shiladitya Satpathi

Assistant Professor

Department of Sanskrit, Chakdaha College, West Bengal



Chakdaha College

(Affiliated to the University of Kalyani)

Estd: 1972  **Govt. Sponsored**  **Re-accredited by NAAC 'B+'**

Chakdaha, Nadia, West Bengal, India

2020

HUMANISM IN INDIAN EDUCATION

(Proceedings of the International Seminar)

(Peer - Reviewed)

Chief Editor

Prof. (Dr.) Swagata Das Mohanta

Hon'ble Principal, Chakdaha College, West Bengal, India

Editor

Dr. Shiladitya Satpathi

Assistant Professor

Department of Sanskrit, Chakdaha College, West Bengal, India



Chakdaha College

(Affiliated to the University of Kalyani)

Estd: 1972 ❁ Govt. Sponsored ❁ Re-accredited by NAAC 'B+'

Chakdaha, Nadia, West Bengal, India

2020

Humanism in Indian Education

(Proceedings of the International Seminar)

(Peer - Reviewed)

© Chakdaha College

ISBN: 978-93-82399-69-8

Published by: **The Principal**, Chakdaha College,
P.O. - Chakdaha, Dist- Nadia, West Bengal, Pin-741222

Published: November, 2020

Printed at: Dove Publishing House
9/4, Tamer Lane, College Street, Kolkata- 700009

Price: ₹ 700/-



Chakdaha College
(Affiliated to the University of Kalyani)
Estd: 1972 ☼ Govt. Sponsored
☼ Re-accredited by NAAC 'B+'
Chakdaha, Nadia, West Bengal, India

N. B. All views and opinions expressed in the paper are the sole responsibility for the author concerned, neither the Editor or nor the publisher can in any-way, be held responsible for them.

CONTENTS

A Prefatory Note

- Professor Swagata Das Mohanta i

Foreword

- Professor Gopalchandra Misra ii

Message

- Professor Tapati Mukherjee iii

Message

- Professor Bithika Banik iv

Message

- Dr. I Ketut Donder v

Message

- Professor V. Vasanthakumari vi

Editor's Note

- Dr. Shiladitya Satpathi vii

Peer Reviewed Papers

धर्मव्याधस्याचरणं मानवतावादः

- Dr. K.V.R.B. Varalakshmi 1

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्योपाख्यानेषु मानवतावादः

- Dr. Biplab Chakrabarty 5

संस्कृतसाहित्ये मानववादः

- Dr. Gagan Chandra De 10

मनुष्यत्वोद्धोधनमेव धर्मस्य लक्ष्यम्

- Dr. Swapan Majhi 18

भारतीयशिक्षायां मानवतावादः

- Amit Sarkar 22

মানবতাবাদের আদর্শ শিক্ষা

➤ Dr. Sabina Jesmin

162

উপনিষদের শান্তিপাঠে মানবধর্ম

➤ Dr. Sandhya Sarkar

168

পুরাসাহিত্যে নারীশিক্ষা : নৈতিক মনস্তত্ত্ব

➤ Dr. Dipankar Patra

173

শ্রীচৈতন্যদেব : মানবতাম্বদ্ধ জীবনচেতনার এক মূর্ত প্রতীক

➤ Dr. Nabanita Basu

178

উনিশ শতকীয় নবজাগরণের আলোকপ্রভায় বিদ্যাসাগরের মানবতাবাদ

➤ Dr. Subir Ghosh

189

মানবজীবনে উপনিষদের প্রভাব

➤ Dr. Anup Kumar Ray

195

সর্বঙ্গীণ বিকাশ সাধনে সঙ্গীবনী সংস্কৃত ভাষার অনবদ্যতা

➤ Arunima Ghosh

202

উত্তরাধুনিকতার আলোকে ভারতের শিক্ষা

➤ Aliul Hoque

211

পুঁথি : মূল্যবোধ ও মানবতা

➤ Amal Kumar Kar

219

✓ স্মৃতিশাস্ত্রে মানবতাবাদের অন্বেষণ

➤ Prasad Ranjan Chakrabarti

231

কৌটিল্যের অর্থশাস্ত্রে মানবতাবাদ : একটি প্রাথমিক আলোচনা

➤ Bappa Datta

237

ভারতীয় দর্শনে মানবতাবাদের প্রভাব

➤ Oishi Bhattacharjee

245

ইতিহাসের প্রেক্ষাপটে শূদ্রকের 'মুচ্ছকটিক' ও মানবতাবাদ

➤ Dr. Kajari Pradhan

250

ঔপনিষদিক মহামন্ত্রের আলোকে কবিগুরুর বিশ্বমানবতার দর্শন

➤ Dolan Ghosh

258

স্মৃতিশাস্ত্রে মানবতাবাদের অন্বেষণ

Prasad Ranjan Chakrabarti

Assistant Professor, Department of Sanskrit,
Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya, West Bengal.

প্রবন্ধসার:

মানবতাবাদ-এই শব্দটি আমাদের নিকট অত্যন্ত পরিচিত হলেও এই বিষয়টিকে সংজ্ঞায়িত করা খুবই দুষ্কর। তবে বিষয়টিকে বিশ্লেষণের দ্বারা কিছুটা সংজ্ঞায়িত করা যেতে পারে। মানব-এর মধ্যে মানবোচিত ভাব বা গুণাবলী বিদ্যমান থাকলে তাকে বলে মানবতা। কাজেই মানবতা বা মানবত্ব-এর অর্থ হল মানবের মধ্যে থাকা ধর্ম, গুণ বা ভাব। অতএব, প্রতিটি মানুষ তার নিজস্ব কর্তব্য এবং কর্মের মধ্য দিয়ে তার অন্তর্নিহিত সদগুণাবলীগুলিকে সর্বদা অনুশীলন করে চলবে-এইরূপ ধারণাই হল মানবতাবাদ।

মানবতার প্রকাশক সদগুণাবলীর সংখ্যা বা নাম নির্দিষ্ট করে বলা কঠিন। তবে সাধারণ ভাবে বলা যেতে পারে যে, ধৈর্য, ক্ষমা, অহিংসা, দয়া, দান-প্রবৃত্তি, সেবা-প্রবৃত্তি, সত্যকথন, উদারতা, অনুশোচনা, সহমর্মিতা প্রভৃতি গুণাবলীর উপস্থিতি এবং অনুশীলন একটি মানুষের অন্তর্নিহিত মানবতা কে প্রকাশিত করে। পূর্ববাক্যে 'অন্তর্নিহিত' শব্দটি প্রয়োগ করার কারণ এই যে, মানুষের মধ্যে মানবতা এবং অমানবতা এই দুটি বিষয়ই অন্তর্নিহিত থাকে। এদের জন্ম দেওয়া যায় না, অগর্হিতকর পালনীয় কর্তব্য-কর্মের দ্বারা কেবল একে প্রকাশ করা যায়। তাই বলা যায় যে মানবতা এবং অমানবতা হল মানবের অন্তর্নিহিত সত্ত্বা, যা পূর্ব হতেই তার মধ্যে বিদ্যমান। মানবতা প্রকাশিত হলে অমানবতা অন্তর্নিহিত হয়ে পড়ে, আবার অমানবতা প্রকাশিত হলে মানবতা অন্তর্নিহিত হয়ে পড়ে। যখন মানবকূলের মানবতা অন্তর্নিহিত হয়ে পড়ে, তখনই সমাজের বুকে নানা ধরনের বিশৃঙ্খলা, অশান্তি, যুদ্ধ ইত্যাদি সামাজিক ব্যাধির প্রকোপ চোখে পড়ে। আবার সমাজে বসবাসকারী সিংহভাগ মানুষের মধ্যে যদি এই মানবতা জাগ্রত হয় তবেই সমাজ সুস্থ থাকে। এই মানবতার প্রকাশেই মানুষ সত্যিকারের মনুষ্যপদবাচ্য হয়।

মানবতার বিষয়টি দৃষ্টান্তের দ্বারা কিছুটা উপলব্ধি করা যেতে পারে। যেমন, আমরা ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর মহাশয়ের জীবনী দিকে তাকালে দেখতে পাই যে, ওনার মধ্যে দয়া, দানশীলতা, উদারতা, সহমর্মিতা, ক্ষমা, সেবা-মনস্কতা, নিঃস্বার্থপরতা, মাতাপিতার প্রতি অসীম ভক্তি ও সেবা প্রভৃতি গুণাবলী বিদ্যমান। ফলতঃ এই সমস্ত গুণাবলীর মধ্য দিয়ে ওনার মানবতা প্রকাশিত হয়েছে বলেই বিদ্বজ্জনেরা ওনাকে 'মহামানব' আখ্যায় ভূষিত করেছেন। মানবতার প্রকাশক এই সমস্ত গুণাবলীর শিক্ষা আমরা যেমন সমাজ থেকে পাই তেমনি পাই বিভিন্ন গ্রন্থ থেকে। বলা বাহুল্য, এই শিক্ষার শুরু সেই সুপ্রাচীন বৈদিক যুগ থেকে। এই মানবতার শিক্ষা প্রদান করেছে বেদানুসারী মনু, পরাশর প্রমুখ স্মৃতিকার কর্তৃক প্রণীত স্মৃতিশাস্ত্রগুলিও। বেদের বচনসমূহের তাৎপর্যার্থকে অণুসরণ করেই স্মৃতিশাস্ত্রগুলি রচিত হয়েছে। স্মৃতিশাস্ত্রগুলি ধর্মশাস্ত্র নামেও পরিচিত। তাই মনুসংহিতাগ্রন্থে মনু বলেছেন যে, বেদ হল ঋতি এবং ধর্মশাস্ত্রের অপর নাম স্মৃতি। স্মৃতিশাস্ত্রের প্রণেতারূপে অনেকেই প্রসিদ্ধ। তবে এই বিষয়ে দ্বিধাত্ব প্রদর্শনার্থে মহর্ষি যাজ্ঞবল্ক্য স্বরচিত যাজ্ঞবল্ক্যসংহিতার মধ্যে যে কুড়িজন স্মৃতিকারের নামোল্লেখ করেছেন তাঁরা হলেন-১) মনু, ২) অত্রি, ৩) বিষ্ণু, ৪) হারীত, ৫) যাজ্ঞবল্ক্য, ৬) উশনঃ ৭) অঙ্গির, ৮) যম, ৯) আপস্তম্ব, ১০) সংবর্ত্ত ১১) কাত্যায়ন, ১২) বৃহস্পতি, ১৩) পরাশর, ১৪) ব্যাস, ১৫) শঙ্খা, ১৬) লিখিত, ১৭) দক্ষ, ১৮) গৌতম, ১৯) শাতাতপ এবং ২০)

১. ঋতিস্তু বেদো বিজ্ঞেয়ো ধর্মশাস্ত্রস্তু বৈ স্মৃতিঃ।... (মনুসংহিতা ২.১০)

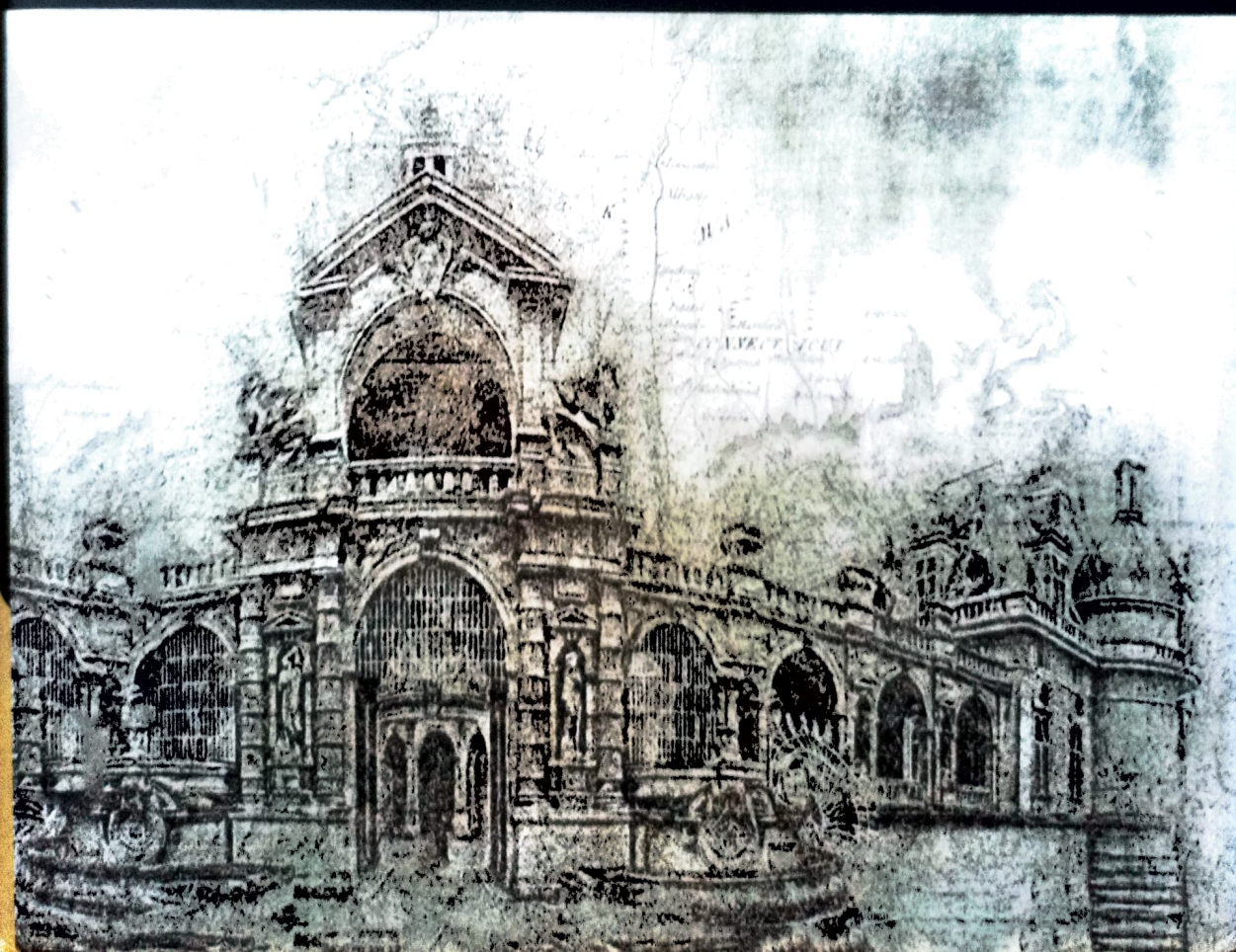
Book Chapter Published in the Year: 2021



THE EMPIRE AND AFTER

Trends, Issues and Perspectives

Edited by
BHASKAR CH SARKAR



Worldwide Circulation through Authorspress Global Network

First Published in 2021

by

Authorspress

Q-2A Hauz Khas Enclave, New Delhi-110 016 (India)

Phone: (0) 9818049852

E-mail: authorspressgroup@gmail.com

Website: www.authorspressbooks.com

**The Empire and after:
Trends, Issues and Perspectives**

ISBN 978-93-90588-07-7

Copyright © 2021 Bhaskar Ch Sarkar

Concerned authors are solely responsible for their views, opinions, policies, copyright infringement, legal action, penalty or loss of any kind regarding their articles. Neither the publisher nor the editor will be responsible for any penalty or loss of any kind if claimed in future. Contributing authors have no right to demand any royalty amount for their articles.

Printed in India at Thomson Press (India) Limited

Contents

<i>Foreword</i>	7
<i>Acknowledgement</i>	11
<i>Introduction</i>	13
1. Perpetuation of the Greco-Roman Colonial Evil as seen in Amitav Ghosh's <i>The Glass Palace</i> Shripad A. Samant	21
2. Representation of Women in Jokhra Altharhi's <i>Celestial Bodies</i> : A Feminist Perspective Dr. Henrieata Huda	27
3. Subjugated Womanhood: Contextualising Deepa Mehta's <i>Water</i> as a Feminist Critique of Indian Nationalist Movement Sudipta Bag	33
4. Folklores, Fiction and Collective Memory in Easterine Kire's <i>Son of the Thundercloud</i> Gracy Samjetsabam	42
5. Mahasweta Devi's <i>Draupadi</i> (Translated by Gayatri Chakravorty Spivak): A Postcolonial Gendered Narrative Ambuja Routh	49
6. Interrogating the Question of Female Agency, Identity and Subjecthood: A Post-colonial Reinterpretation Priyampa Mitra	53
7. The Trauma of Being 'Ugly': A Semiotic Reading of Steven Spielberg's <i>The Color Purple</i> Ananya Mukherjee	58
8. Colonial Accounts on Costumes in India: Distinctions and Binaries Athira B.K.	65
9. Exploring the Self in the Era of Transnational Corporation: A Comparative Analysis of Don De Lillo's <i>Cosmopolis</i> and Salman Rushdie's <i>Fury</i> Nabanita Karanjai	73

10. Islamisation and the Process of Othering, and the Crisis of Identity in Qasim Rasid's <i>The Wrong Kind of Muslim</i> Tapan Mandal	80
11. Quest for Identity in a Patriarchal Society: Reading <i>Midnight's Children</i> as Women's Struggle against the Gender Stereotypes Deepa Thomas	89
12. Incarnation of an 'in-between space': Quest for the Uncharted Terrain of Cultural Hybridity in Amitav Ghosh's <i>The Shadow Lines</i> Debolina Byabartta	95
13. Marginalised Women and Non-Human Animals: Postcolonial Ecofeminism in Perumal Murugan's <i>Poonachi: Or the Story of a Black Goat</i> Priya Chakroborty	102
14. Modernity, Colonialism and Response in India: A Freedom Incomplete Soumi Mukherjee	106
15. Liberal Feminism in India: Role of Pandit Iswar Chandra Vidyasagar Sujit Samanta	115
16. Destruction of Humanity: An Attempt of Failed Resistance in <i>Things Fall Apart</i> Babul Pramanik	125
17. Within and Beyond: Women and Their Dreams, Desires and Questions Brintika Das	130
18. Arundhati Roy's <i>The God of Small Things</i> : Voice of Subaltern Women Swagatalakshmi Basu	136
19. "Muffled Voices": A Study of Marginal Identity in Raja Rao's <i>Kanthapura</i> and Arundhati Roy's <i>The Ministry of Utmost Happiness</i> Sabuj Sarkar and Wasim Akram	142
20. <i>Gora, Home and the World</i> and <i>Four Chapters</i> : Women's Striving for New Paradigm in the Nationalist /Colonialist Discourse of Modern Bengal Sandip Dolui	152
21. The Presentation of Women through the Marginal Lens: a Critical study of Rohinton Mistry's <i>A Fine Balance</i> Bhaskar Ch Sarkar	158
<i>List of Contributors</i>	163
<i>Index</i>	165

Arundhati Roy's *The God of Small Things*: Voice of Subaltern Women

Swagatalakshmi Basu

The term "Subalternity" has attained much popularity in Postcolonial social studies. The concept of 'Subalternity' has disturbed the doctrinal boundaries of contemporary discourse. As a theoretical venture, subaltern revises and extends the Marxian proletarian discourse as well as strengthen its positions based on poststructuralist concept of 'difference'. The term Subalternity refers to a condition of subordination brought about by colonisation or other forms of economic, social, racial, linguistic, gender and cultural dominance. The 'Subaltern' owes its origin to Antonio Gramsci's writings and it indicates a subordinate position in terms of caste, class, gender and culture. Gramsci criticizes the classical Marxist thinking that culture and ideology are extensions and reflections of the economic reality. In Gramsci's perception, capitalism sustains its exploitation of the subaltern through the hegemony of culture. He also emphasizes the fact that the nature and structure of the subaltern consciousness very form one social context to another, owing to the difference in their experience of capitalist exploitation and the subaltern response to it. The term 'subaltern' is used in the ground of history, geography, sociology and literary criticism as post-colonial study. Indian scholar Gayatri Chakrobarty Spivak borrows this term from Gramsci to refer to the unrepresented group of people in society. Indian unconventional writer Arundhati Roy raises her voice for subaltern women through her masterpiece *The God of small Things* (1997).

Suzanna Arundhati Roy, one of the ambassadors of the Indian renaissance and socio-political activist and famous postcolonial writer of Indo-Anglia Literature, who is best known for her debut *The God of small Things* (1997). Arundhati Roy was born 24th November 1961, shillong, Meghalaya, India. Roy's father Rajib Roy was a Bengali and mother Mary Roy, a Syrian Christian who worked on women's rights in Kerala. She spent her childhood in Aymanam in Kerala. Roy's literary career was interrupted by controversy. Roy's literary output largely consisted of politically oriented nonfiction, addressing the problems faced by her homeland in the age of global capitalism. Her publications were: *power Politics* (2001), *Public power in the Age*

দাড়াইতে
দেউটিগণ



বিভাজন
স্বকল্প
এবং বেখায়

সম্পাদনা

অরীন্দ্রজিৎ ব্যানার্জী
রানা ভট্টাচার্য

পাঠান্তরে ছোটগল্প বিভাজন পূর্ববর্তী রূপরেখায়

সম্পাদনা

অরীন্দ্রজিৎ ব্যানার্জী রানা ভট্টাচার্য



Pathantar Chotogalpa Bivajaner Purbabarti Ruparekha
Edited by : Arindrijit Banerjee & Rana Bhattacharyya
Published by Joyjit Mukhopadhyaya. **Sopan**
206, Bidhan Sarani, Kolkata-700 006
(033) 2257-3738 / 9433343616 / 9836321521
E-mail : sopan1120@yahoo.com/publisopan@gmail.com
Website : www.sopanbooks.in

প্রথম প্রকাশ

২০২১

© অরিন্দ্রজিৎ ব্যানার্জী ও রানা ভট্টাচার্য

সর্বস্বত্ত্ব সংরক্ষিত

প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনও অংশেরই কোনওরূপ পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না, কোনও যান্ত্রিক উপায়ের (গ্রাফিক, ইলেকট্রনিক বা অন্য কোনও মাধ্যম, যেমন ফোটোকপি, টেপ বা পুনরুদ্ধারের সুযোগ সংবলিত তথ্য-সঞ্চয় করে রাখার কোনও পদ্ধতি) মাধ্যমে প্রতিলিপি করা যাবে না বা কোনও ডিস্ক, টেপ, পারফোরেটেড মিডিয়া বা কোনও তথ্য সংরক্ষণের যান্ত্রিক পদ্ধতিতে পুনরুৎপাদন করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা যাবে।

প্রকাশক

জয়জিৎ মুখোপাধ্যায়

সোপান

২০৬, বিধান সরণি, কলকাতা-৭০০০০৬

ফোন : (০৩৩) ২২৫৭-৩৭৩৮/৯৪৩৩৩৪৩৬/৯৮৩৬৩২১৫২১

E-mail : sopan1120@yahoo.com/publisopan@gmail.com

Website : www.sopanbooks.in

মুদ্রক

রবীন্দ্র প্রেস

১১এ, জগদীশ নাথ রায় লেন

কলকাতা-৭০০০০৬

মূল্য : ৪৯৯ টাকা

ISBN : 978-93-90717-33-0

সূচিপত্র

রবীন্দ্র ছোটগল্পে ঔপনিবেশিক মন ও জীবন	সায়ন মণ্ডল	১১
পরিবেশকেন্দ্রিক ভাবনার প্রেক্ষিতে রবীন্দ্রনাথের ছোটগল্প	রূপায়ণ রায়	১৭
রবীন্দ্রনাথ : পোস্টমাস্টারের বেদনা রংহীন	নির্মল কুমার বর্মন	২৪
রবীন্দ্রনাথের তিন সঙ্গীর তিনটি গল্প : নারীচেতনার এক ব্যতিক্রমী পাঠ	উত্তম পালুয়া	২৮
প্রকৃতি ও মানবজীবনের সমন্বয়ে রবীন্দ্র ছোটগল্প	চঞ্চলকুমার মণ্ডল	৪২
রবীন্দ্রনাথের ছোটগল্পে আধুনিকতার অনুসন্ধান	দিবাকর বর্মন	৪৮
রবীন্দ্র ছোটগল্পে উপেক্ষিতা নারী	সুরজিৎ মণ্ডল	৫৮
রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের অতিথি : বিশ্লেষণের আলোকে	সঞ্জয় কুমার	৬৬
লিপিকা'র নির্বাচিত গল্প : অবদমিত মায়া ও সংযুক্ত কায়	অরীন্দ্রজিৎ ব্যানার্জী	৭২
রবীন্দ্র ছোটগল্পে কিশোর কিশোরী	কৃষ্ণময় দাস	৮০
রবীন্দ্র গল্পে নারীর প্রতিবাদী সুরের অনুরণন	সৌভিক রাজ	৮৬
রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের শাস্তি গল্প অবলম্বনে চন্দ্রার নীরব প্রতিবাদ	তুহিনা পারভীন	৯৩
রবীন্দ্রনাথের নির্বাচিত ছোটগল্প : শিশু মনস্তত্ত্বের ছবি	শেলি দত্ত	৯৭
অচলায়তন ভাঙার কারিগর - সোহিনী	অণুশীলা সাহা	১০৭
সুবোধ ঘোষের 'সুন্দরম' ও রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের কঙ্কাল	পৃথা দে	১১৭
সত্য শিব সুন্দরের এক নিবিড় পাঠ	সৌরভ সাহা	১২২
ছোটগল্প অন্য ভুবন : রবীন্দ্রনাথের 'গিন্নি' ও 'স্বীর পত্র'	কাজী রিংকু মন্ডল	১৩০
মানববর্জিত সমাজে প্রকৃতিকন্যা সুভার বুকে বেদনার শেল	বাপী কুশারী	১৩৫
শরৎচন্দ্রের 'মহেশ' : প্রসঙ্গ অন্ত্যজ সমাজজীবন	শ্রীপর্ণা ঘোষ	১৪২
প্রভাতকুমার মুখোপাধ্যায়ের দেবী		
প্রভাতকুমার মুখোপাধ্যায়ের আদরিণী :	উজ্জ্বলা পাইক মণ্ডল	১৪৮
প্রসঙ্গ স্নেহ ও বাৎসল্য রস	দীপঙ্কর মণ্ডল	১৫৪
বরযাত্রী : হাস্যরসের ধারায় ব.ভ.ম.-র অবদান	রীতা রানী দে	১৬১
বনফুলের 'দ্রষ্টলগ্ন' গল্পে প্রেম এবং পরিণয়	কুশল চ্যাটার্জী	১৬৭
কিন্নর দল, বিশ্লেষণে ও ব্যাখ্যায়	প্রীতম চক্রবর্তী	১৭৮
সংসার সীমান্তে ও হিঙের কচুরি : ছোটগল্পে পতিতা প্রসঙ্গ	রাখিমা দাস	১৮৫
প্রেমেন্দ্র মিত্রের ছোটগল্পে মনস্তাত্ত্বিক টানাপোড়েন		
প্রেমেন্দ্র মিত্রের 'শুধু কেরানি' : চিরাচরিত সংসার বৃত্তের	পবিত্র বিশ্বাস	১৯০
বাইরের জীবনকাহিনী		

রবীন্দ্র ছোটগল্পে উপেক্ষিতা নারী সুরজিৎ মণ্ডল

রবীন্দ্র সাহিত্যের আঙিনায় নারী চরিত্রের অবাধ বিচরণ। কখনো মাতা রূপে, কখনো কন্যা রূপে, কখনো বধূ রূপে কখনো বা প্রেয়সী রূপে। বিশেষতঃ ছোটগল্পগুলিতে নারী চরিত্র সৃষ্টিতে রবীন্দ্রনাথের বহুমুখী ভাবনার প্রতিফলন লক্ষ্য করা যায়। সমকালীন সমাজ বাস্তবতার নিরিখে রবীন্দ্রনাথ এই চরিত্রগুলিকে গড়ে তুলেছেন। পুরুষতান্ত্রিক সমাজব্যবস্থায় অবহেলিত নারীর বেদনার্ত জীবনের মর্মান্তিক কাহিনী ফুটে উঠেছে ছোটগল্পগুলিতে। এক্ষেত্রে উল্লেখযোগ্য চরিত্রগুলি হল, ‘দেনাপাওনা’ গল্পের নিরুপমা; ‘পোস্টমাস্টার’ গল্পের রতন; ‘সুভা’ গল্পের সুভা; ‘স্ত্রীর পত্র’এ মৃণাল ও বিন্দু; ‘হৈমন্তী’ গল্পের হৈমন্তী প্রভৃতি।

‘দেনাপাওনা’ গল্পের নিরুপমা পিতামাতার আদরের ধন। সামাজিক পণপ্রথার অভিশাপে ক্ষতবিক্ষত সে। নিরুপমার জীবনের মর্মবেদনা স্থানলাভ করেছে এই গল্পে। দশহাজার টাকা ও বহু দানসামগ্রীর শর্তে নিরুপমার বিবাহ পাকাপাকি হয়। জীবন পণ করে পিতা রামসুন্দর কিছু টাকা সংগ্রহ করলেও ছয়-সাত হাজার টাকা বাকি থেকেই যায়। এই পনের টাকা বাকি থাকার কারণে নিরুপমার শাশুড়ি তাকে ক্রমশঃ তীব্র ভাষায় আক্রমণ করতে থাকে। খাওয়া পরার যত্ন ক্রমশঃ হ্রাস পেতে থাকে। কারণ, “বাপ যদি পুরা দাম দিত তো মেয়ে পুরা যত্ন পাইত। সকলেই এমন ভাব দেখায় যেন বধূর এখানে কোন অধিকার নাই, ফাঁকি দিয়া প্রবেশ করিয়াছে।”^১

বাড়ীর দাস-দাসীরাও তাকে নিচু নজরে দেখতে থাকে। রামসুন্দর মেয়ের বাড়ীতে এসে কোন দিন নিরুপমার দেখা পান, কোন দিন আবার পান না। এমতাবস্থায় লোকচক্ষুর অন্তরালে নীরবে নিভুতে অশ্রু বিসর্জন নিরুপমার নিত্য সঙ্গী। নিরুপমার জীবন যেনন টাকার সমতুল্য।

এ গল্পে শুধু নিরুপমা নয়, তার পিতাও পনের দায়ে জর্জরিত, মর্মান্বিত। তিনি কখনো বেশি সুদে অল্প অল্প টাকা ধার করেছেন, কখনো বা বসত বাড়ী বিক্রি করে পনের টাকা শোধ করতে চেয়েছেন কন্যার মঙ্গলের জন্য। কিন্তু নিরুপমার পিতার অসহায় অবস্থার কথা জানে। তাই সে পিতাকে নিরস্ত্র করতে বলেছে, “বাবা তুমি যদি আর এক পয়সা আমার স্বশুরকে দাও তাহলে আর তোমার মেয়েকে দেখতে পাবেনা, এই তোমার গা ছুঁয়ে বললুম।”^২

লেখক পরিচিতি

১. সায়েন মণ্ডল, সায়েন মন্ডল, গবেষক (এম.ফিল), বাংলা বিভাগ, বিশ্বভারতী বিশ্ববিদ্যালয়
২. রূপায়ণ রায়, সহশিক্ষক বিধান নগর হাই স্কুল। গবেষক, উত্তরবঙ্গ বিশ্ববিদ্যালয়।
৩. ড. নির্মল কুমার বর্মণ, ডি. লিট। অধ্যাপক। বহুগ্রন্থের প্রণেতা, প্রখ্যাত গল্পকার
৪. ড. উত্তম পালুয়া, সহকারী অধ্যাপক, বাংলা বিভাগ, গুরুচরণ কলেজ, শিলচর
৫. ড. চঞ্চল কুমার মণ্ডল, সহকারী অধ্যাপক, সবংসজনীকান্ত মহাবিদ্যালয়।
৬. দিবাকর বর্মণ, পি এইচ ডি গবেষক, বাংলা বিভাগ, কল্যাণী বিশ্ববিদ্যালয়
৭. সুরজিৎ মণ্ডল - কবি ও প্রাবন্ধিক। স্যাক-১ স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়।
৮. সঞ্জয় কুমার, প্রাক্তন ছাত্র, সিধো-কানহো-বীরসা বিশ্ববিদ্যালয়, পুরুলিয়া, পশ্চিমবঙ্গ
৯. অরীন্দ্রজিৎ ব্যানার্জী, পি এইচ ডি গবেষক, কাজী নজরুল বিশ্ববিদ্যালয়, সম্পাদক, এই অবগাহন। কবি, প্রাবন্ধিক, গ্রন্থকার। গ্রন্থের সংখ্যা, ১৪টি।
১০. কৃষ্ণময় দাস, স্নাতকোত্তর, কল্যাণী বিশ্ববিদ্যালয়।
১১. সৌভিক রাজ, সহকারী অধ্যাপক, জে সি বোস ইন্সটিটিউশন অব এডুকেশন। প্রাবন্ধিক।
১২. তুহিনা পারভীন, কবি ও প্রাবন্ধিক, বাংলা বিভাগ, ছাত্রী (স্নাতকোত্তর) যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়।
১৩. শেলি দত্ত, সহকারী অধ্যাপক, আসাম।
১৪. অণুশীলা সাহা, গবেষক, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়।
১৫. পৃথা দে, প্রাবন্ধিক, স্নাতকোত্তর, যাদবপুর বিশ্ববিদ্যালয়।
১৬. সৌরভ সাহা, গবেষক ও প্রাবন্ধিক।
১৭. কাজী রিংকু মন্ডল, কবি ও প্রাবন্ধিক, প্রাক্তন ছাত্রী, পশ্চিমবঙ্গ রাষ্ট্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়
১৮. বাপী কুশারী, গবেষক কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়, কলেজ শিক্ষক, উমেশচন্দ্র কলেজ (স্যাক-১)
১৯. শ্রীপর্ণা ঘোষ, প্রাবন্ধিক প্রাক্তন ছাত্রী, কোচবিহার পঞ্চানন বর্মা বিশ্ববিদ্যালয়



প্রতিফলন

সম্পাদনা
মনোজ মাইতি
ননী গোপাল দাস

প্রতিফলন
PRATIFALLAN

প্রতিফলন প্রবন্ধ সংকলন
PRATIFALLAN PRABANDHA SANKALAN

প্রথম প্রকাশ আগস্ট ২০২১

গ্রন্থস্বত্ব
প্রতিফলন প্রবন্ধ সংকলনটির সমস্ত লেখক-লেখিকা বৃন্দ

প্রচ্ছদ

প্রকাশক: ইচ্ছেবাতি সাহিত্য পত্রিকা ও প্রকাশনী
ব্যান্ডেল নলডাঙ্গা নারায়নপুর, ব্যান্ডেল - ৭১২ ১২৩

Publishedby : ICCHEBATI PUBLISHER'S

Publisher's Address : BANDEL NALDANGA NARAYANPUR NEAR

BARUN DECORATOR HOUSE &

NANDI PRESS. BANDEL, 712123

Mobile : 9123088576 / 8910899621

E-mail : icchebatimagazinepublishers222@gmail.com

Printer's Details : MONDAL DESIGN & PRINTER'S
Address : DHARAMPUR, CHINSURAH, HOOGHLY 712101

EditionDetails : 1ST EDITION

ISBN:



Copyright:©ICCHEBATIPUBLISHER'S

প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের
কোন অংশেরই কোনো পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না।

মূল্য - ১৫০ টাকা

প্রতিফলন

প্রবন্ধ সংকলন

Monoj Maiti
(Editor of the Book)

M.Sc. in 'Human Physiology' with Special Paper 'Endocrinology, Reproductive Physiology and Family Welfare', Advance Diploma in Computer Applications (ADCA).

State Aided College Teacher (SACT) in Department of Physiology of Bajkul Milani Mahavidyalaya, Bajkul, 721655, Purba Medinipur, West Bengal. Former Guest Teacher in Department of Physiology of Yogoda Satsanga Palpara Mahavidyalaya, Palpara, 721458, Purba Medinipur, West Bengal and Former Guest Teacher in Department of Physiology of Mahishadal Raj College, Mahishadal, 721628, Purba Medinipur, West Bengal, India.

Nanigopal Das
(Join - Editor of the Book)

M. A. in Philosophy with Special Paper Advanced logic and Philosophy of Cognitive Science, Certificate in Computer Application (CITA) State Aided College Teacher and acting Head in Department of Philosophy of Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya, Amdabad, 721650, Purba Medinipur, West Bengal, India.

সূচীপত্র

- মন ও মননে সংগীতের প্রভাব, মধুশ্রী মাইতি শাসমল।
- শিশুদের মানসিক বিকাশ ও কাউন্সেলিং, জয়দেব বেরা
- হাবিব তনবীর : ভারতীয় নাট্য-সাহিত্যের অন্যতম অধ্যায়, ড. চন্দন বারিক।
- ফুটবল খেলা প্রসঙ্গে স্বামী বিবেকানন্দ-একটি অজানা দিক, সনাতন দাস।
- কোভিড -১৯ এর যুগে আর্থসামাজিক ও মানসিক স্বাস্থ্যের অবস্থান, অতীন কুমার মাইতি।
- দর্শনের মূল্য কোথায় ?, ননীগোপাল দাস।
- সংস্কৃতির রক্ষায় প্রাচীন সংস্কৃত সাহিত্য, অমিতাভ পাহাড়ি।
- ভারতের 'বারমুডা ট্রাইএঙ্গেল', নারায়ণ চন্দ্র বেরা।
- করোনা ভাইরাস কি কি শেখালো, মনোজ মাইতি।
- মনের ক্রিয়ায় শরীরের প্রতিক্রিয়া, শীতলী জানা (গুড়িয়া)।
- প্রাকৃতিক শব্দের সঙ্গে তবলার শব্দের মেলবন্ধন, তরুন মিশ্র।
- জল দূষণ এবং মানুষের স্বাস্থ্য, মৌসুমী মাম্মা।
- তর্কবিজ্ঞানে বচনের প্রাথমিক ধারণা, দেবাশিস গিরি।
- বিশ্ব উষ্ণায়ন পরিবেশ সমস্যা ও সমাধান, দেবাশীষ কুমার চাকি।
- ভারতীয় দার্শনিক দৃষ্টিভঙ্গিতে ঈশ্বর ধারণা, পহেলী মাইতি।

দর্শনের মূল্য কোথায় ?

ননী গোপাল দাস, স্টেট অ্যাডেড কলেজ টিচার (SACT)

দর্শন বিভাগ, স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়

আমদাবাদ, নন্দীগ্রাম, পূর্ব মেদিনীপুর, 721650

"আকাশ ভরা সূর্য তারা বিহুভরা গ্রাণ

তহারি মাঝখানে আমি পেয়েছি মোর স্থান

বিস্ময়ে তাই জাগে আমার গান" (১)।

আদিম অরণ্যচারী মানুষের চোখে বৈচিত্র্যময়ী বিশ্ব প্রকৃতি প্রথমেই জাগিয়েছিল বিস্ময় আর এই বিস্ময়ে থেকেই আসে জিজ্ঞাসা। সৃষ্টির উদ্ভাসই থেকেই মানুষের মনে তাই যে জিজ্ঞাসার আলোড়ন সৃষ্টি হয়েছে - আমি কোথা থেকে এলাম? কোথায় ছিলাম? কেনইবা এলাম? আমিবা কে? - এইসব নানান জিজ্ঞাসাগুলি থেকেই উৎপত্তি হয় দর্শনশাস্ত্রের। আর এই সব খন্ড জ্ঞান থেকে পরম তত্ত্বের সামগ্রিক জ্ঞান উত্তরণের চেষ্টাই হলো দর্শন চিন্তার ভিত্তিভূমি। তাই দর্শন শাস্ত্রের সংজ্ঞা স্বরূপ বলা যায় - জগৎ ও জীবনের স্বরূপ ব্যাখ্যা এবং তার মূল্য অবধারণ অর্থাৎ দর্শন চিন্তার বিলাসিতা নয় জীবন ও জগতের স্বরূপ অবহিত হয়ে তারই আলোকে জীবনকে সুনিয়ন্ত্রিত করা। যথার্থ পথে জীবনকে চালিত করা। এই প্রসঙ্গে দার্শনিক পেরি বলেন "Philosophy is neither accidental nor Subnatural but inevitable and normal" (২)। সংক্ষেপে বলতে গেলে যে সমস্ত বিষয়ের জ্ঞান অসম্ভব সেই সমস্ত বিষয়কে কেন্দ্র করে অনর্থক মূলচেরা বিশ্লেষণ ও বিতর্ক হল দর্শন। দর্শন শব্দটি 'দৃশ্' ধাতুর সঙ্গে 'অনর্ট' প্রত্যয় যোগে 'দর্শন' শব্দটি উৎপত্তি হয়েছে। দর্শন বলতে সাধারণত চাক্ষুষ প্রত্যক্ষ কে বোঝায় যায় না এক্ষেত্রে দর্শন মানে সত্যের প্রত্যক্ষ উপলব্ধি বা তত্ত্ব সাক্ষাৎকরন। 'দৃশ্' শব্দের অর্থ হল 'দেখা' অর্থাৎ মানুষ ব্যাপকভাবে অন্তরীক্ষিত ও বহিঃরীক্ষিতের মাধ্যমে বিশ্বব্রহ্মাণ্ড সম্পর্কে যে জ্ঞান অর্জন করে তাই হল দর্শন। আবার ইংরেজি প্রতিশব্দ

'ফিলোসফি' শব্দটির অর্থ হলো 'জ্ঞানের প্রতি বা সত্যের প্রতি অনুরাগ। Philosophy শব্দটি মূলত দুটো গ্রীক শব্দের সমন্বয়ে গঠিত হয়েছে। 'philos' শব্দটির অর্থ হল 'আলোচনা' বা 'অনুরাগ' এবং 'sophia' শব্দের অর্থ হল 'জ্ঞান'।

প্রাত্যহিক জীবনে ঘটমান রহস্য গুলি সম্পর্কে আলোচনা করাই দর্শনের কাজ আর আধিভৌতিক বিষয়গুলি দর্শন শাস্ত্রের বিষয়বস্তু। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে এটাই দর্শনের ভিত্তিভূমি নয়। জীবন কি? মনুষ্য জীবনের উৎস কোথায়? জীবনের প্রকৃত উদ্দেশ্য কি? - এই সমস্ত প্রশ্নগুলি দর্শনের মূল প্রতিপাদ্য জিজ্ঞাসা আর এইভাবে সৃষ্টি দর্শনশাস্ত্রের। দর্শনশাস্ত্র কিন্তু মানুষের জীবন এবং অভিজ্ঞতা থেকে বিচ্ছিন্ন নয়। তবুও এসবের মধ্য দিয়ে মানুষের মধ্যে সদা প্রশ্ন জাগে- দর্শনের মূল্য কি? দর্শন পাঠের উপযোগিতা কোথায়? কেননা বিজ্ঞান যেভাবে আমাদের উপকার করে সেভাবে দর্শনের উপকারিতা কোথায়? যারা বিজ্ঞান পড়েন না বা জানেন না তারাও বিজ্ঞানের দ্বারা উপকৃত বা তারাও বিজ্ঞান সম্পর্কে আগ্রহী। কিন্তু দর্শনের জ্ঞান কেবল দর্শনের ছাত্রদের মধ্যে সীমাবদ্ধ। যদিও কিছুমাত্র প্রভাব পড়ে তাও পরোক্ষভাবে। তবে এ কথা ঠিক হলেও দর্শনের মূল্য খুঁজতে গেলে প্রথমে বাস্তববাদী বা হিসেবী মানুষদের একটা সংজ্ঞা খুঁজতে হবে। যারা অর্থাৎ আমরা সমাজস্থ বিচারবুদ্ধি সম্পন্ন মানুষ। এই আমরা যদি আমাদের দৈহিক সুখ সম্পদ ও দৈহিক ক্ষুধা নিবৃত্তির মধ্য থেকে দর্শনের মূল্য খোঁজার চেষ্টা করি তাহলে সেক্ষেত্রে কখনো সম্ভবপর হবে না। মানুষের জীবনে দৈহিক সুখ-সম্পদ কাম্য হলেও তা একমাত্র কাম্য বস্তু নয়। ইতর প্রাণী দৈহিক সুখ-সন্তোষে তৃপ্তি হতে পারে, কিন্তু মানুষ আরও কিছু কামনা করে। মানুষের চাওয়া-পাওয়ার অস্ত নেই। আজ বাড়ী তো কাল গাড়ি, পরের দিন আরো অন্য কিছু, পরে আবার সুন্দর অন্যকিছু। যার আছে সে আরো চায়। তাই কবি রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের ভাষায় বলা যায়

"এ জগতে হয়, সেই বেশি চায় আছে যার ভূরি ভূরি
রাজার হস্ত করে সমস্ত কাজালের ধন চুরি" (৩)।



প্রতিফলন

সম্পাদনা
মনোজ মাইতি
ননীগোপাল দাস



মনোজ মাইতি (সম্পাদক)

মনোজ মাইতি পূর্ব মেদিনীপুর জেলায় অন্তর্ভুক্ত মহিষাদল থানার বাসুলিয়া গ্রামের বাসিন্দার। মনোজ মাইতি বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয় থেকে 2010 সালে হিউম্যান ফিজিওলজি সাবেজিও মাস্টার্স ডিগ্রি অর্জন করেন। 2011 সাল থেকে বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়ে শারীর বিদ্যা বিভাগের অতিথি অধ্যাপক হিসাবে এবং 2020 সাল থেকে স্টেট এডভেড কলেজ টিচার (SACT) হিসাবে কর্মরত। যোগদান সংসদ পালপাড়া মহাবিদ্যালয়ে এক বছর অধিক (08.11.2017 - 08.02.2019) শারীরবিদ্যা বিভাগে অধ্যাপনার কাজ এর অভিজ্ঞতা ও মহিষাদল রাজ কলেজে শারীরবিদ্যা বিভাগে প্রায় এক বছর (07.02.2019 - 04.01.2020) অধ্যাপনার অভিজ্ঞতা রয়েছে। মনোজ মাইতি তেরোটি রিসার্চ আর্টিকেল প্রকাশ করেছে ইন্টারন্যাশনাল স্ট্যান্ডার্ড সিরিয়াল নাম্বার (ISSN) সহকারে এবং ইন্টারন্যাশনাল স্ট্যান্ডার্ড বুক নাম্বার (ISBN) সহ তিনটি বুক চ্যাপ্টার প্রকাশ করেছে। তার লেখা বিভিন্ন উল্লেখযোগ্য প্রতিবেদন ও প্রবন্ধ 'রক্তশূন্যতা এবং তার প্রতিকার', 'অনলাইন পড়াশোনাতে ছাত্র-ছাত্রীদের মানসিক চাপ কমে যাচ্ছে', 'গ্রামীণ সস্তা খাদ্য ওলিতে বেশি পুষ্টিগুণ' স্থলতার কারণে হার্টের বিভিন্ন অসুখ', 'গার্ভিয়ানদের প্রতিদ্বন্দ্বিতায় নিজেদের সন্তানরাই এখন পরীক্ষিত প্রাণী', 'গর্ভাবস্থা কোন রোগ নয় এটি একটি শারীরবৃত্তীয় প্রক্রিয়া', 'শিক্ষকদের বেত্নাখাত ছাত্র-ছাত্রীদের ভবিষ্যতের চাবিকাঠি', 'কোলেস্টেরল থেকে উচ্চ রক্তচাপ এবং আরটেরিয়োস্কেলেরোসিস', গুরুত্বপূর্ণ যা বিভিন্ন পত্রিকায় প্রকাশিত।



ননী গোপাল দাস (সহ-সম্পাদক)

ননী গোপাল দাস পূর্ব মেদিনীপুর জেলার অন্তর্ভুক্ত ভূপতিনগর থানার বাজকুল গ্রামের এক মধ্যবিত্ত পরিবারের জ্যেষ্ঠ পুত্র। 2005 সালে বাজকুল বলাই চন্দ্র বিন্যাপীঠ থেকে মাধ্যমিক ও উচ্চমাধ্যমিক কাজলাগড় এম এস বি সি এম হাইস্কুল থেকে 2007 সালে পাশ করার পর দর্শন বিষয়ে 2010 সালে বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয় থেকে স্নাতক ও বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয় থেকে 2013 সালে স্নাতকোত্তর। 2016 সাল থেকে স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে দর্শন বিষয়ে অতিথি অধ্যাপক হিসাবে এবং 2020 সাল থেকে স্টেট এডভেড কলেজ টিচার (SACT) হিসাবে কর্মরত। দুটি রিসার্চ আর্টিকেল প্রকাশ করেছে ইন্টারন্যাশনাল স্ট্যান্ডার্ড সিরিয়াল নাম্বার সহকারে, Title of Article: 'Socio-economical, mental and moral perspectives after the impact of COVID-19 and it's ways to recover at present' and 'A Review on Mental Stress and its Physiological Effects with Special Reference to Yoga and Physical Exercise' এবং ইন্টারন্যাশনাল স্ট্যান্ডার্ড বুক নাম্বার (ISBN) সহ তিনটি বুক চ্যাপ্টার প্রকাশ করেছে। উনার লেখা 'উদ্বেগ সাহিত্য প্রতিকারে' একটি প্রবন্ধ "আমরা কেমন আছি" এবং "হৃদয়" প্রতিকারে বিভিন্ন লেখা কবিতা- "ধূমপানের আত্মকথা", "বৃক্কদরদী" প্রকাশিত হয়েছে।



প্রচ্ছদ
মৌমিতা গাঙ্গুলী

ইন্ডোব্রাতি সাহিত্য পত্রিকা ও প্রকাশনী



প্রতিফলন
PRATIFALLAN

প্রতিফলন প্রবন্ধ সংকলন
PRATIFALLAN PRABANDHA SANKALAN
প্রথম প্রকাশ আগস্ট ২০২১

গ্রন্থস্বত্ব
প্রতিফলন প্রবন্ধ সংকলনটির সমস্ত লেখক-লেখিকা বৃন্দ

প্রচ্ছদ

প্রকাশক: ইচ্ছেবাতি সাহিত্য পত্রিকা ও প্রকাশনী
ব্যান্ডেল নলডাঙ্গা নারায়নপুর, ব্যান্ডেল - ৭১২ ১২৩

Published by : ICCHEBATI PUBLISHER'S

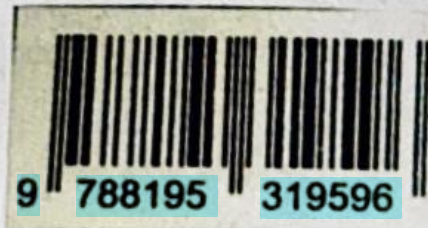
Publisher's Address : BANDEL NALDANGA NARAYANPUR NEAR
BARUN DECORATOR HOUSE &
NANDI PRESS. BANDEL, 712123
Mobile : 9123088576 / 8910899621

E-mail : icchebatimagazinepublishers222@gmail.com

Printer's Details : MONDAL DESIGN & PRINTER'S
Address : DHARAMPUR, CHINSURAH, HOOGHLY 712101

Edition Details : 1ST EDITION

ISBN



Copyright: © ICCHEBATI PUBLISHER'S

প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের
কোন অংশেরই কোনো পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না।

মূল্য - ১৫০ টাকা

সূচীপত্র

- মন ও মননে সংগীতের প্রভাব, মধুশ্রী মাইতি শাসমল।
- শিশুদের মানসিক বিকাশ ও কাউন্সেলিং, জয়দেব বেরা
- হাবিব তনবীর : ভারতীয় নাট্য-সাহিত্যের অন্যতম অধ্যায়, ড. চন্দন বারিক।
- ফুটবল খেলা প্রসঙ্গে স্বামী বিবেকানন্দ-একটি অজানা দিক, সনাতন দাস।
- কোভিড -১৯ এর যুগে আর্থসামাজিক ও মানসিক স্বাস্থ্যের অবস্থান, অতীন কুমার মাইতি।
- দর্শনের মূল্য কোথায় ?, ননীগোপাল দাস।
- সংস্কৃতির রক্ষায় প্রাচীন সংস্কৃত সাহিত্য, অমিতাভ পাহাড়ি।
- ভারতের 'বারমুডা ট্রাইএঙ্গেল', নারায়ণ চন্দ্র বেরা।
- করোনা ভাইরাস কি কি শেখালো, মনোজ মাইতি।
- মনের ক্রিয়ায় শরীরের প্রতিক্রিয়া, শীতলী জানা (গুড়িয়া) ।
- প্রাকৃতিক শব্দের সঙ্গে তবলার শব্দের মেলবন্ধন, তরুন মিশ্র।
- জল দূষণ এবং মানুষের স্বাস্থ্য, মৌসুমী মাম্বা।
- তর্কবিজ্ঞানে বচনের প্রাথমিক ধারণা, দেবশিস গিরি।
- বিশ্ব উষ্ণায়ন পরিবেশ সমস্যা ও সমাধান, দেবশীষ কুমার চাকি।
- ভারতীয় দার্শনিক দৃষ্টিভঙ্গিতে ঈশ্বর ধারণা, পহেলী মাইতি।

কোভিড -১৯ এর যুগে আর্থসামাজিক ও মানসিক স্বাস্থ্যের অবস্থান

অতীন কুমার মাইতি

স্টেট এডেড কলেজ টিচার, ডিপার্টমেন্ট অফ সোশিয়োলজি

স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়

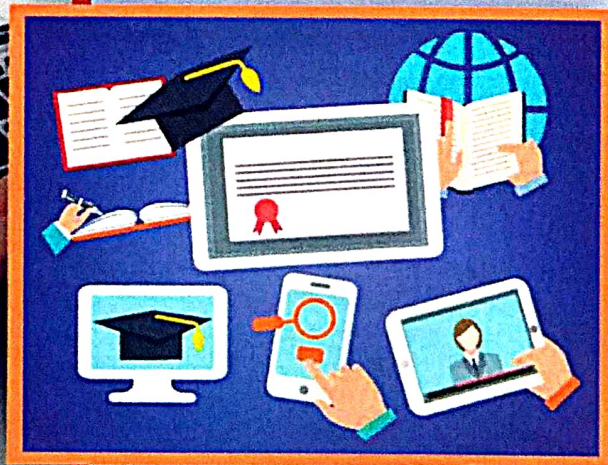
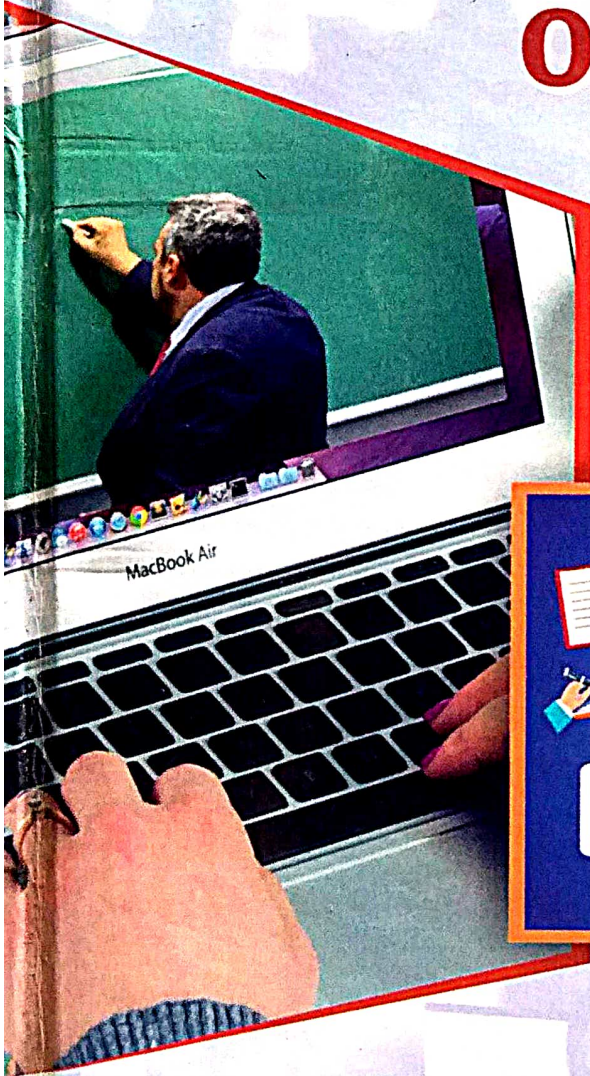
আমদাবাদ, নন্দীগ্রাম, 721650, পূর্ব মেদিনীপুর

আমরা সকলেই আজ বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়েছি নিজেদের প্রতিষ্ঠান থেকে নিজেদের আত্মীয়-পরিজনদের থেকে এমনকি আমরা নিজেদের একেবারে বাড়ির লোকেদের ও বিশ্বাস করতে ভুলে যাচ্ছি। মনে হচ্ছে ওর নিঃশ্বাস একই বিষ আছে? আমাদের মধ্যে একটা আতঙ্কের কাজ করছে, ভয়ঙ্কর সেই আতঙ্ক। আমাদের মানসিক সুস্থতা হারিয়ে যাচ্ছে। সামাজিক দূরত্ব তথা Social Distancing এর কথাবারবার উঠে আসছে সারাবিশ্বের পরিপ্রেক্ষিতে Covid-19 যে মহামারী উপস্থাপন করেছে সেই মহামারীর প্রেক্ষিতে আজ সত্যিই আমরা এতটাই বিপদগ্রস্ত যে আমরা নিজের প্রতি বিশ্বাস টুকু হারিয়ে ফেলেছি। কোন কোন জায়গা থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়ছি। আমার তো মনে হয় আমরা নিজেদের থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়ছি। আমরা প্রতিনিয়ত প্রতিদিনের অভ্যাস মত যে জীবনযাপন করতাম সেখান থেকেও বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়ছে। এই বিচ্ছিন্নতা আমাদের মানসিক অস্থিরতার জন্ম দেয়। আমাদের সামাজিক অবস্থান ধীরে ধীরে আরও বেশি বিপদ গ্রস্ত হয়ে পড়ছে।

আজ ৪ঠা মে সাল ২০২১ এই দিনে দাঁড়িয়ে আজকের পরিসংখ্যান দেখলে জানা যায় যেসারা ভারতে Coronavirus disease এর পরিসংখ্যান হলো 3,57,316 জন। Tests এর পরিসংখ্যান হলো 30শা April 2021 তারিখ পর্যন্ত tests করা হয়েছে 1,706,633 জন। অর্থাৎ india তে Total Cases 20.3M, Recovery 16.6M, Deaths 222k জন। এই পরিসংখ্যান থেকে আমরা অনুমান করতে পারছি কি ভয়ানক পরিস্থিতির মধ্য দিয়ে আমরা যাচ্ছি এবং বর্তমানের পরিস্থিতি টা আরেকটু পরিবর্তন হয়েছে। এই অবস্থায় ভারতবর্ষের পাশাপাশি আমাদের গ্রামীণ সমাজ জীবনে আমরা ঠিক একই অবস্থা পরিলক্ষিত



Challenges of Online Education during the Crisis of COVID – 19



Udayan Mandal
Ujjwal Mahato

Challenges of Online Education during the Crisis of COVID - 19
edited by *Dr. Udayan Mandal* and *Mr. Ujjwal Mahato* Published by
New Delhi Publishers, New Delhi.

© Publisher

Edition: August, 2021

ISBN: 978-93-91012-13-7

All rights reserved. No part of this book may be reproduced stored in a retrieval system or transmitted, by any means, electronic mechanical, photocopying, recording, or otherwise without written permission from the publisher and authors.



NEW DELHI PUBLISHERS

Head Office: 90, Sainik Vihar, Mohan Garden, New Delhi - 110 059

Corporate Office: 7/28, Room No.-208, Vardaan House, Mahavir Lane, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002

Branch Office: 216, Flat-GC, Green Park, Narendrapur, Kolkata - 700103

Tel: 011-23256188, 011-45130562, 9971676330, 9582248909

E-Mail: ndpublishers@rediffmail.com/gmail.com

Website: www.ndpublisher.in

Contents

<i>Preface</i>	v
<i>Acknowledgement</i>	vii
<i>About the Editors</i>	ix
1. Positive and Negative Effects of Social Media on Education during COVID-19 Situation	1
<i>Arabinda Jana</i>	
2. Effectiveness of Socio-Psycho Impact of Current COVID-19 Epidemic Situation	9
<i>Asis Manna</i>	
3. Impact of COVID-19 on School Level Learning	19
<i>Atul Kumar Biswas</i>	
4. The Problems of Online Education among the Girl Students at Graduate Level in West Bengal	27
<i>Binod Kumar Sardar</i>	
5. Online Education and COVID-19 in India	39
<i>Biswajit Das</i>	
6. Online Education and the Digital Divide in India	51
<i>Dr. Debolina Mukherjee</i>	
7. Impact of COVID-19 Pandemic on Students' Life	63
<i>Dr. Nandini Banerjee, Dr. Amarnath Das and Sreya Ghosh</i>	
8. The Problems of Online Education among the Students	73
<i>Goutam Pal</i>	
9. Impact of Online Education during COVID-19 Pandemic Situation	85
<i>Khalid Raja Khan, Jibanbandhu Gayak, Santosh Mahato, Tapas Mahato and Rajesh Paramanik</i>	
10. Health Awareness is the Best Suppressant of Pandemic in Activity of COVID-19	95
<i>Monoj Maiti and Nanigopal Das</i>	

Health Awareness is the Best Suppressant of Pandemic in Activity of COVID-19

Monoj Maiti¹ and Nanigopal Das²

¹State Aided College Teacher, Department of Physiology, Bajkul Milani Mahavidyalaya, Purba Medinipur, West Bengal, India

²State Aided College Teacher, Department of Philosophy, Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya, Purba Medinipur, West Bengal, India

Abstract: The state of complete emotion and physical well-being is health. WHO (1948) state 'health is a state of complete physical, mental and social well-being and not merely the absence of disease or infirmity'. The broad type of health is physical that mean physical or bodily functions or activity of working in peak level and mental health is denoted as well while emotional, social and psychological activity are well being. The virus means poisons contain nucleic acid DNA or RNA and an envelope of protein coat. The viruses also grow in only host cell while their living activities are noted. The corona virus disease -19 or COVID -19 is a viral infectious disease by corona virus spreads by droplet of mouth and nose of infected persons, and it's grow in throat and infects the target organ lungs including alveoli cells. The infected persons characterized by fever, dry cough, tiredness, sore throat, diarrhea, conjunctivitis, headache, loss of taste or smell and serious symptoms are shortness of breath, chest pain, loss of speech or movement and death may occurs. Total death recorded approximately 71,642 in India, in West Bengal this number is approximately 3,562, and the number of death in Purba Medinipur district is 11 till the early month of September, 2020. There is no proper treatment with co-vaccine, vaccine or medicine till now. There is best treatment is health awareness, at that time the simple some factors or process can prevent this pandemic situation as well as prevent the spreading of infections of corona virus. These are maintain of social distance or physical distance (at least 1 meter), use of clean mask, hand sanitizer repeatedly, use of soap and water for hand wash, avoid the touch your hand in mouth and nose, avoid smoking, etc. If any mention symptoms are found must be appointed with Physician. The lockdown can stop the spread this infections, but it can hampered the others activities of human lifestyle, the health awareness include maintain social distance and use of soap, hand sanitizer depress the spread the infections that must

দ্বিধা

সম্পাদনায়
পিকল দে
মৌসুমী সাহা মহানাবীশ

ICCHEBATI

a collection of Bengali Poems and Stories edited
by Pikon Dey & Mousumi Saha Mahalanabish

দ্বিতীয় প্রকাশ: 29 শে সেপ্টেম্বর 2021

প্রচ্ছদ শিল্পী: মৌমিতা গাঙ্গুলী

গ্রন্থস্বত্ব: লেখক ও লেখিকা

মুদ্রণ: Mondal Design & Printers
ধরমপুর, চুঁচুড়া, হুগলী - ৭১২১০১

প্রকাশক: ইচ্ছেবাতি সাহিত্য পত্রিকা ও প্রকাশনী
ব্যাভেল নলডাঙ্গা নারায়নপুর, ব্যাভেল - 712123
Mobile: 9123088576/8910899621

E-mail : icchebatimagazinepublishers222@gmail.com

ISBN :



বিনিময় : 250/-

প্রকাশকের লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোন অংশের কোন ধরনের
প্রতিলিপি বা পুনরুৎপাদন করা যাবে না কিংবা ইলেকট্রনিক্স পদ্ধতিতে ই-বুক
আকারে পুনঃপ্রকাশ / পুনরুদ্ভাব করা যাবে না। বইয়ের প্রচ্ছদ এবং প্রকাশনীর
লোগো কোনভাবে কপি করা যাবে না। বইটির কোন গ্রহীতার ক্ষেত্রেও তাকে
এই একই শর্ত আরোপ করতে হবে। এই শর্ত অমান্য করা হলে উপযুক্ত আইনি
ব্যবস্থা নেওয়া হবে।

রিঙ্কু পাল-৮৮), (সময়-মধুমিতা চন্দ-৮৯), (খোকা হল সাহেব-সমীর চ্যাটার্জী-৯০), (যদি এমন হতো
 ~শ্যামল বিশ্বাস-৯১), (বেয়াড়া সেই ছোট বোনটি-নিখিলরঞ্জন গুহ-৯২-৯৩), (ইচ্ছেরা জুতগৃহে-
 সুখময় সাহা-৯৪), (অনুভব-গিরিধারী দত্ত-৯৫), (ঠিকানা-নয়নাভ বিশ্বাস-৯৬), (বিনিসুতোর সীমারেখা
 ~অমিত কুমার সাহা-৯৭), (নিবেদন-রামদাস মন্ডল-৯৮), (নীরব বসন্ত-সুমনা মন্ডল-৯৯), (আমার প্রণ
 ~রামকৃষ্ণ মিশ্র-১০০), (গাইস্থ্য সঙ্গীত-চঞ্চল দূবে-১০১), (বেদুইন ঘর-সুরজিৎ সাহা-১০২), (স্বদেশের
 চিঠি-ভাস্কর দে-১০৩), (তোমার কথা-অনিরুদ্ধ বাগচী-১০৪), (ব্যস্ততা-জয়ন্ত সরকার-১০৫), (একটুকরো
 মেঘ-প্রদীপ কুন্ডু-১০৬)

অণুগল্প

(ওষুধের দাম-সৈকত ঘোষ-১০৮-১০৯), (ভগ্ন হৃদয়-ওবাইদুল্লাহ সেখ-১০৯), (বিসর্জন-কথা-১১০
 -১১৩), (জ্যোৎস্না-মোনালিসা দত্ত-১১৪), (প্রচেষ্টা-শুভ্রা মজুমদার-১১৫), (অপরাজিতা-প্রিয়াঙ্কা দাস
 -১১৬-১১৭)

গল্প

(সম্মান হত্যা-অমিতাভ শীল-১১৯-১২৪), (ফিরে আয় মিনু-রাণা চ্যাটার্জী-১২৫-১২৮), (মেয়েটির নাম
 জয়-মুকুলিকা দাস-১২৯-১৩৮), (কুহকিনী-পারমিতা ঘোষ-১৩৯-১৪৭), (মুঙ্গেরের গাঁদা বন্দুক-উজান
 ~১৪৭-১৬১), (একটা সিলিং ফ্যান এবং....-মৌপ্রিয়া গঙ্গোপাধ্যায়-১৬১-১৬৪), (শৈশব-পদ্মাবতী মন্ডল
 ~১৬৪-১৬৮), (তুমি রবে নীরবে-সুস্মিতা চৌধুরী-১৬৮-১৭১), (একটি ফাঁসি-সুজাতা সরকার-১৭২-
 ১৭৪), (এ যুগের কৃষ্ণকলি-মুনমুন মন্ডল-১৭৫-১৭৭), (রক্তের দাম-পায়েল ঘোষ-১৭৮-১৭৯), (ফিরে
 দেখা-বন্দনা দাস-১৭৯-১৮০), (কৃষ্ণচূড়া-রুদ্রাংশ সূর্য রায়-১৮১-১৯০), (ভারসাম্যহীন-সোমা পাল-
 ১৯০-১৯২), (ট্যাক্সি ড্রাইভার-অসীম কুমার চট্টোপাধ্যায়-১৯৩-১৯৮), (ভালোলাগার টানে-দেবব্রত
 সাহা-১৯৮-২০২), (তাপসদের পৃথিবী-প্রহ্লাদ দাস-২০৩-২১০), (নয়ন ও আশ্চর্য আলো-সৌম্যদীপ
 হালদার-২১১-২১৩), (ফেরারি পাখি-সমুদ্র মন্ডল-২১৪-২১৭), (Satyajit Ray: Ray of light-দীপ
 মান্না-২১৮-২১৯), (বেড়াজাল-রিয়া মিত্র-২১৯-২২০), (টান-সৌমেন ঠাকুর-২২১-২২২), (বিকেলের
 রিকশা যাত্রী-রাজদীপ ভট্টাচার্য-২২২-২২৬), (সিঁদুর-পরিতোষ বাদ্যকর-২২৬-২২৯), (লক্ষ্মীর পদচিহ্ন
 -শুভময় মন্ডল-২৩০-২৩৩), (লাঠি-রিমলী রায়-২৩৪-২৩৮), (ঋতুবদল-রিমা মজুমদার-২৩৯-২৪২),
 (পরিমাণ-বুবাই দাস-২৪২-২৪৬), (জাতে মাতাল তালে ঠিক-শঙ্খ দে-২৪৬-২৪৯), (অরুণোদয়-
 স্বাতী বণিক ঘোষ-২৫০-২৫৪), (বোন-অহনা রায়চৌধুরী-২৫৪-২৫৯), (ভ্রমণ-স্বর্ণালী বিশ্বাস-২৬০-
 ২৬৩), (স্বাধীনতা দিবসের ছুটি-কাজী সামসুল আলম-২৬৪-২৬৫), (ভালবাসা-সুস্মিতা বন্দ্যোপাধ্যায়
 ~২৬৬-২৬৭), (ডাকাত সুন্দর-কুন্তল ঘোষ-২৬৭-২৭১), (বাঙালী সন্তান-কাজী প্রিয়াঙ্কা সিলমী-২৭১
 -২৭৩), (সুইসাইড নোট-সোনালী দেবনাথ (শ্রুতি)-২৭৩-২৭৪), (গটআপ কেস-অর্ঘ্য ঘোষ-২৭৫-
 ২৮৩), (শিকার-আকাশ দত্ত-২৮৪-২৮৮)

প্রবন্ধ

(COVID 19___ মহামারীর প্রভাবে জনজীবনে আর্থ-সামাজিক, মানসিক ও নৈতিক দৃষ্টিভঙ্গি এবং
 বর্তমানে এর প্রতিকার ব্যবস্থা-ননীগোপাল দাস-২৯০-২৯৪) (দ্বিশত জন্মবার্ষিকীতে ঈশ্বরচন্দ্র
 বিদ্যাসাগর-গৌতম মান্না-২৯৫-২৯৮) (পিতৃ দিবসে ভালোবাসার আহ্বান-রাজীব কুমার নন্দী-২৯৮
 -৩০০) (নান্দনিক সৃষ্টি সুখ বাজারের শাকসবজির মাধ্যমে দেহে কীটনাশক জমা হয়ে মানবদেহে
 বিভিন্ন রোগের আবির্ভাব সৃষ্টি-মনোজ মাইতি-৩০০-৩০৪)

COVID 19 - মহামারীর প্রভাবে জনজীবনে আর্থ-সামাজিক, মানসিক ও নৈতিক দৃষ্টিভঙ্গি এবং বর্তমানে এর প্রতিকার ব্যবস্থা।

ননীগোপাল দাস

এই বিচিত্রময় মহাজাগতিক বিশ্বমানবের জগতে বিভিন্ন ঘাত-প্রতিঘাতের সমন্বয়ে গড়ে ওঠা পৃথিবীতে কোনো না কোনো সময়ে কোনো না কোনো স্থান থেকে গড়ে ওঠা ধ্বংসলীলা আমরা দেখতে পাচ্ছি। ইতিহাস পর্যালোচনা করলে দেখা যায় প্রতি একশো বছর অন্তর কোন না কোন রোগ মহামারীর আকার ধারণ করে পৃথিবীর মানব প্রজাতির জগতকে ধ্বংসের পথে নিয়ে গেছে। যেমন ১৭২০ সালে বাবনিক প্লেগ, ১৮২০ সালে কলেরা আবার ১৯২০ সালে স্প্যানিশ ফ্লু এবং বর্তমানে ২০২০ সালে নভেল করোনা ভাইরাস (সার্স কোভ-২)। এই কোভিড নাইনটিন এর প্রভাবে চলতে থাকে সারা বিশ্বব্যাপী মৃত্যুর মহা মিছিল। পৃথিবী জুড়ে শুরু হয় কারফিউ জারি, বন্ধ রাখা হয় ট্রেন ও বিমান চলাচল, বাস, ট্রাম এবং বিভিন্ন ধরনের যোগাযোগ স্থাপনকারী পরিবহন ব্যবস্থাকেও। সর্বোপরি স্কুল-কলেজ, অফিস-আদালত, শপিং মল থেকে শুরু করে বাজারহাট প্রভৃতি বন্ধ রাখার নির্দেশ দেওয়া হয়। এগুলোর পরিবর্তে আরম্ভ করা হয় কোয়ারেন্টাইন ব্যবস্থা, বিমানবন্দর পরীক্ষা, বিভিন্ন জায়গা স্যানিটাইজিং এর ব্যবস্থা এবং ঘোষণা করা হয় সামাজিক দূরত্ব বজায় রাখার কথা।

ব্যবস্থা নেওয়া হয় সরকারি হাসপাতাল গুলোর বেডের সংখ্যা বাড়ানোর, এবং তার সঙ্গে আনুষঙ্গিক চিকিৎসা ব্যবস্থাকে উন্নীত করার। এই রোগ মহামারীর রূপ ধারণ করার কারণে দেখা যায় বিগত কয়েক মাসে মানুষের জীবনে বিভিন্ন পরিবর্তন যা এখনো পর্যন্ত ঘটে চলেছে। সেই পরিবর্তনের ফলে আমাদের অর্থাৎ মানুষের মধ্যে মানসিক দৃষ্টিভঙ্গি যেন বহুলাংশে বৃদ্ধি পেয়েছে। নভেল করোনা ভাইরাসের প্রকোপের জন্য সারা বিশ্বব্যাপী শুরু হয় লকডাউন ব্যবস্থা। তৈরি হয় বিভিন্ন ভাবে মানুষের জীবন-জীবিকা লড়াই। এই লড়াইয়ে বহু মানুষ জীবিকা হারিয়েছেন এবং গৃহবন্দি হয়ে পড়ার ফলে অর্থ উপার্জনের রাস্তা প্রায় বন্ধের মুখে এসে পড়ে ফলে মানুষ এখন আর্থিক অনটনের মধ্যে।

ଆଦିବାସୀମାନଙ୍କର ସମ୍ପାଦ ଓ ଜୀବନସାଧନା

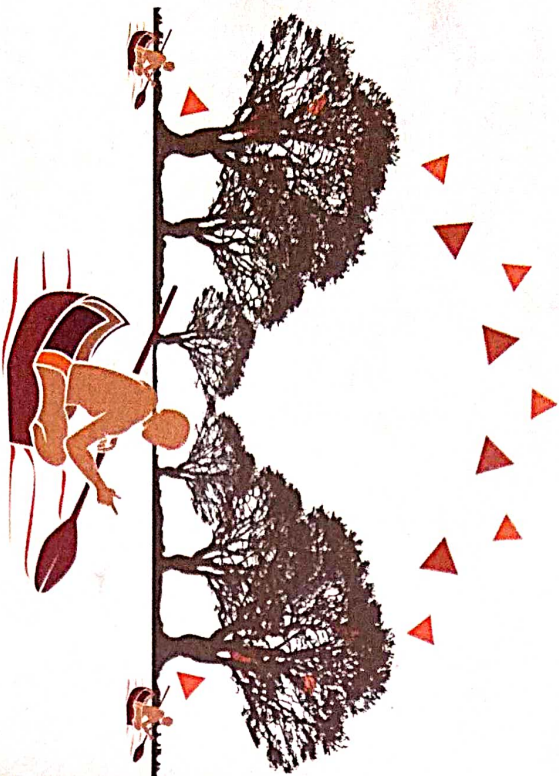
ଆଦିବାସୀମାନଙ୍କର ସମାଜ ଓ ଜୀବନସାଧନା

ସମ୍ପାଦନା : ଜୟଦେବ ବେରା



ସମ୍ପାଦନା

ଜୟଦେବ ବେରା



Adibasider Samaj O Jibanyatra
A Collection of Essay Edited by Joydev Bera
Editor: Joydev Bera
Rs. 800.00 Only



Adibasider Samaj O Jibanyatra
A Collection of Essay Edited by Joydev Bera
Editor: Joydev Bera

Edition:

1st, September, 2021

Volume:

1

Cover:

Sampad Chowdhury

Copyright @ Publisher
All Rights Reserved

Published by:

Nyra Books

An Imprint of Myth Publication
Radhanagar, Bon-Radhanagar,
Bishnupur, Bankura, W.B.,
PIN-722157

Printed by:

Jayshree Press

91/B Baithakkhana Road,
Kolkata-91

ISBN:

979-85-29166-14-7

MRP:

Rs. 800.00 Only

সূচিপত্র

বাংলার ডোকরা শিল্প এবং ডোকরা আদিবাসী শিল্পীদের
সমাজচেতনা বোধ

অনামিকা চ্যাটার্জী

১৫

ছোটনাগপুরের ওঁরাও উপজাতি : একটি ঐতিহাসিক
পর্যালোচনা

সঞ্জিত মণ্ডল

২০

আলিপুরদুয়ার জেলার টোটো উপজাতির সামাজিক ও ধর্মীয়
সাংস্কৃতিক ঐতিহ্য

সুফল সরকার

৩৪

লুসাই এবং নোয়াতিয়া উপজাতির কৃষ্টি ও কৃষি: সংক্ষিপ্ত
বিবরণ

রণজিৎ নায়ক

৫০

ডুয়ার্সের মেচ-বোড়ো জনজাতির জীবনচর্চা ও সংস্কৃতি

মনোজিৎ দাস

৫৭

বাঁকুড়া জেলার আদিবাসী জনজাতির সংক্ষিপ্ত পরিচয়

জয়ন্ত মন্ডল

৬৯

আদিবাসী রূপান্তরঃ তাত্ত্বিক দৃষ্টিভঙ্গী

ব্রহ্মদেব জানা

৮৪

ভারতীয় রাজনৈতিক প্রেক্ষাপটে জনজাতিদের পরিচিতি
সংকট

জয়দেব বর্মণ

৯৬

পশ্চিম মেদিনীপুরে উপজাতি মহিলাদের সামাজিক ও
অর্থনৈতিক অবস্থা

অক্ষয় দত্ত

১১২

আদিবাসী সমাজ ও সংস্কৃতি : অরণ্যবহি আখ্যানের প্রেক্ষিতে	
শ্যামসুন্দর হাঁসদা	৪০৮
বাসনার ধুম্ফুড়িয়া ও আদিবাসী সমাজের লোকসংস্কৃতিঃ	
একটি পর্যালোচনা	
সুবল কুমার কিস্কু	৪২৪
আদিবাসী সমাজে নারী জীবন	
শুভশ্রী ইন্দ্র	৪৩৭
বিশ্বায়নের প্রেক্ষাপটে পশ্চিমবঙ্গের আদিবাসী সমাজ	
কৃতিবাস দত্ত	৪৪৮
আদিবাসীদের করম উৎসব	
রিস্কু নাথ	৪৭০
ভারতীয় বানজারা উপজাতির জীবনযাত্রা ও ভাষা পরিচয়	
দেবপ্রিয়া বারিক	৪৭৯
গারোদের সামাজিক - সাংস্কৃতিক ও শিক্ষাগত জীবনের	
রূপরেখা	
মমতা পাত্র	৪৯৯
আদিবাসী কুড়মি সমাজের পরব পার্বণ	
সাগর মাহাত	৫১১
ভারতীয় রাজনীতিতে তফসিলী উপজাতি জনগোষ্ঠীর ভূমিকা	
সুদীপ মণ্ডল	৫৩১
পশ্চিমবঙ্গে আদিবাসী সম্প্রদায়ের আর্থ-সামাজিক, মানসিক	
অবস্থা ও এতে কোভিড-১৯ এর প্রভাব	
ননীগোপাল দাস	৫৫২
‘দেবীগর্জন’ নাটকে আদিবাসী সমাজজীবন : সমকালীন	
প্রাসঙ্গিকতা	
মৌ চক্রবর্তী	৫৬৫
লেখক পরিচিতি	
	৫৮৩

পশ্চিমবঙ্গে আদিবাসী সম্প্রদায়ের আর্থ-সামাজিক, মানসিক

অবস্থা ও এতে কোভিড-19 এর প্রভাব

নন্দীগোপাল দাস

সারাংশ (ABSTRACT)

আমরা যদি একটু পুরনো ইতিহাসের পাতাগুলোর দিকে তাকিয়ে উত্তর খোঁজার চেষ্টা করি তাহলে ব্রিটিশ সাম্রাজ্যের কথা জানতে পারবো যারা দীর্ঘ দূশত বছর ধরে আমাদের দেশ ভারতবর্ষকে শাসন করেছিল। সেই ব্রিটিশ শাসনকালে ইতিহাস থেকে আদিবাসী সম্প্রদায়ের চিত্র খুঁজে পাওয়া যায় আদিবাসী সমাজকে ব্রিটিশরা একাঘরে করে রেখে দিয়েছিল সেখানে আদিবাসীরা মানুষের মর্যাদা পেতেন না ক্রীতদাসে পরিণত করে দেওয়া হয়েছিল। তার পরবর্তী কালে দেখা যায় ব্রিটিশদের কঠোর নীতিকে সম্পূর্ণরূপে দমন করার লক্ষ্যে ইতিহাসে আমরা দেখতে পাই বিভিন্ন সময়ে বিভিন্ন আদিবাসী সম্প্রদায়ের বিদ্রোহ। তাদের মধ্যে উল্লেখযোগ্য হলো 1855 সালে সাঁওতাল বিদ্রোহ কাছারী ছিলেন সিধু কানু। তবে ভারত স্বাধীন হওয়ার পর আদিবাসীদের স্বীকৃতি দিয়েছিলেন বটে অধিকন্তু তাদের সামাজিক উন্নতি তেমন আশানুরূপ হয়নি। আদিবাসী সম্প্রদায়ের মানুষজন সমাজ প্রেমী, প্রকৃতি প্রেমী হওয়ার জন্য এরা নিরাবল জায়গা হিসেবে বন-জঙ্গল সংলগ্ন এলাকায় বসবাস করেন এবং জীবন-জীবিকা নির্বাহের জন্য এরা বন-জঙ্গল থেকে বিভিন্ন ধরনের ছাত্ত, পাতা, কাঠ, মধু, বিভিন্ন ধরনের ফল-মূল সংগ্রহ করে থাকেন। তবে বর্তমানে এরা অনেকেই এখন চাষাবাদের সঙ্গে চাষাবাস করেন এবং বর্তমানে সরকার আদিবাসীদের জন্য স্বনির্ভরশীল কিছু প্রকল্প গ্রনয়ন করায় তাদের সঙ্গে যুক্ত হয়ে জীবিকা

নির্বাহ করে। আদিবাসীরা দৃঢ় গোষ্ঠীবদ্ধ, সমাজবদ্ধ, সহজ-সরল, শান্ত প্রকৃতির মানুষ এবং এরা প্রকৃতির পরিবেশের সঙ্গে মানিয়ে নিয়ে নিজে চলতে পারে বলে এদের দেহে রোগ প্রতিরোধ ক্ষমতা প্রধর। কোনও রোগ এদের দেহে সহজেই সংক্রমণ ঘটতে পারেনি এবং মানসিক দিক থেকে এরা সবল হয় কিন্তু বর্তমানকালে তা অনেকাংশে হ্রাস প্রাপ্ত হয়েছে। এই কোভিড-19 পরিস্থিতিতেও কলোনা ভাইরাস তেমন কোনও আক্রমণ করতে সক্ষম হয়নি। এই সময়কালে দীর্ঘদিন লকডাউন এর জন্য দিশাহীন হয়ে পড়েছিলেন। যদিও ওই সময়কালে সরকারি অনুদান পেলেও তা সীমিত হওয়ার কারণে প্রত্যন্ত গ্রামে বসবাসকারী আদিবাসী মানুষজনদেরকে একাধারে জীবন-যাপন করতে হয়েছে।

ভূমিকা (INTRODUCTION)

ভারতের ইতিহাস পর্যালোচনা করলে দেখা যায় যে ভারত যখন স্বাধীন হয়নি তখনও পর্যন্ত আদিবাসীদের অস্তিত্ব ছিল। আর সেই কারণে ব্রিটিশ সরকার সহ আমাদের ভারত সরকার ও আদিবাসীদের অস্তিত্বের কথা স্বীকার করে নিয়েছে। তাছাড়া স্বাধীন ভারতে ১৯৫০ সালে যখন ভারত সংবিধান রচনা করা হয় তখন ডঃ বি.আর.আম্বেদকর এর প্রচেষ্টাতে আদিবাসীদেরকে আমাদের ভারতবর্ষের বাসিন্দা হিসেবে পরিগণিত করা হয়। স্বাধীন ভারতের তথা পশ্চিমবঙ্গের আদিবাসীরা নানা রকমভাবে বৈষম্যের শিকার হয়ে থেকে গিয়েছেন। এখন দেখা যাক আদিবাসী শব্দটির অর্থ কি? বা কাদেরকে 'আদিবাসী' বলব? উত্তরে বলা যায় 'আদিবাসী' এই শব্দটি দুটি শব্দের সমন্বয়ে গঠিত এক: 'আদি' যার অর্থ হলো 'প্রথম' এবং দুই: 'বাসি' যার অর্থ

কৃত্তিবাস দত্ত: স্টেট এইডেড কলেজ টিচার, রাস্বিবিজ্ঞান বিভাগ, জলঙ্গী মহাবিদ্যালয়, মুর্শিদাবাদ, পশ্চিমবঙ্গ এবং পি. এইচ. ডি. গবেষক, রাস্বিবিজ্ঞান বিভাগ, গৌড়বঙ্গ বিশ্ববিদ্যালয়, মালদা, পশ্চিমবঙ্গ।

রিজু ন্যাথ: ভারতবর্ষের একজন নাগরিক। তিনি পশ্চিমবঙ্গ নামক রাজ্যের পূর্ব মেদিনীপুর জেলার পটেশপুর থানার অন্তর্গত প্রতাপদিঘী গ্রামে ১৯৯৭ সালে ২রা ডিসেম্বর জন্মগ্রহণ করেন। পিতার নাম হেমন্ত নাথ ও মাতার নাম পদ্মা নাথ। ২০১৩ সালে মাধ্যমিক পরীক্ষা পাশ করেন বাগমারী নারী কল্যাণ শিক্ষা সদন থেকে। ২০১৫ সালে উচ্চমাধ্যমিক শিক্ষা লাভ করেন টিকরাপাড়া অধিকারময়ী উচ্চতর মাধ্যমিক বিদ্যালয় থেকে। ২০১৮ সালে রাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয় থেকে এডুকেশন অনার্স এ ফার্স্ট ক্লাস পেয়ে পাশ করেন। বর্তমানে তিনি বিশ্বভারতী বিশ্ববিদ্যালয়ে বিনয় ভবনে অধ্যাপনরত।

দেবপ্রিয়া বারিক:

ধাম- যাযাবর

শিক্ষা- এম.এ. (বাংলা) বর্তমান বিশ্ববিদ্যালয়।

পেশা- শিক্ষকতা

নেশা- পেন্টিং ও লেখালেখি

প্রথম আলোর ছোঁয়া ১৯৮৩। কবিতা লেখা শুরু ১৯৯৭।

এরপর জীবন ও সমাজ সংগ্রামকে আত্মস্থ করে পুনরায় সৃষ্টির আনন্দে ২০১৬ থেকে মগ্ন।

মমতা পাত্র: এম.এড. কোর্সের এর একজন ছাত্রী। তিনি বিভিন্ন পত্র-পত্রিকায় লেখা-লেখি করেন। 'সেতু' জার্নালে তার লেখা একটি আর্টিকেল "Digital Technology And Inclusive Education In India" প্রকাশিত হয়েছে।

সাগর মাহাত: পিতা— নবীন চন্দ্র মাহাত। মাতা— সীতা মাহাত। জন্ম— ১৯৯৩ সালের ১২ এপ্রিল পশ্চিম মেদিনীপুর জেলার শালবাণী ব্লকের ডেঙ্গোল গ্রামে। মেদিনীপুর কলেজ (স্বশাসিত) থেকে বাংলা বিষয়ে স্নাতক ও স্নাতকোত্তর, মেদিনীপুর ইনস্টিটিউট অফ এডুকেশন থেকে বি. এড ডিগ্রি অর্জন। ক্ষেত্র সমীক্ষার কাজ ছাড়াও মানভূম সংবাদ, সেতু, শিল্পে অন্যান্য, উপত্যকা, বিবর্তন সহ আরও অন্যান্য পত্র পত্রিকা ও সংবাদপত্রে তার লেখা কবিতা, গল্প, প্রবন্ধ, ভ্রমণ কাহিনি প্রকাশিত হয়েছে।

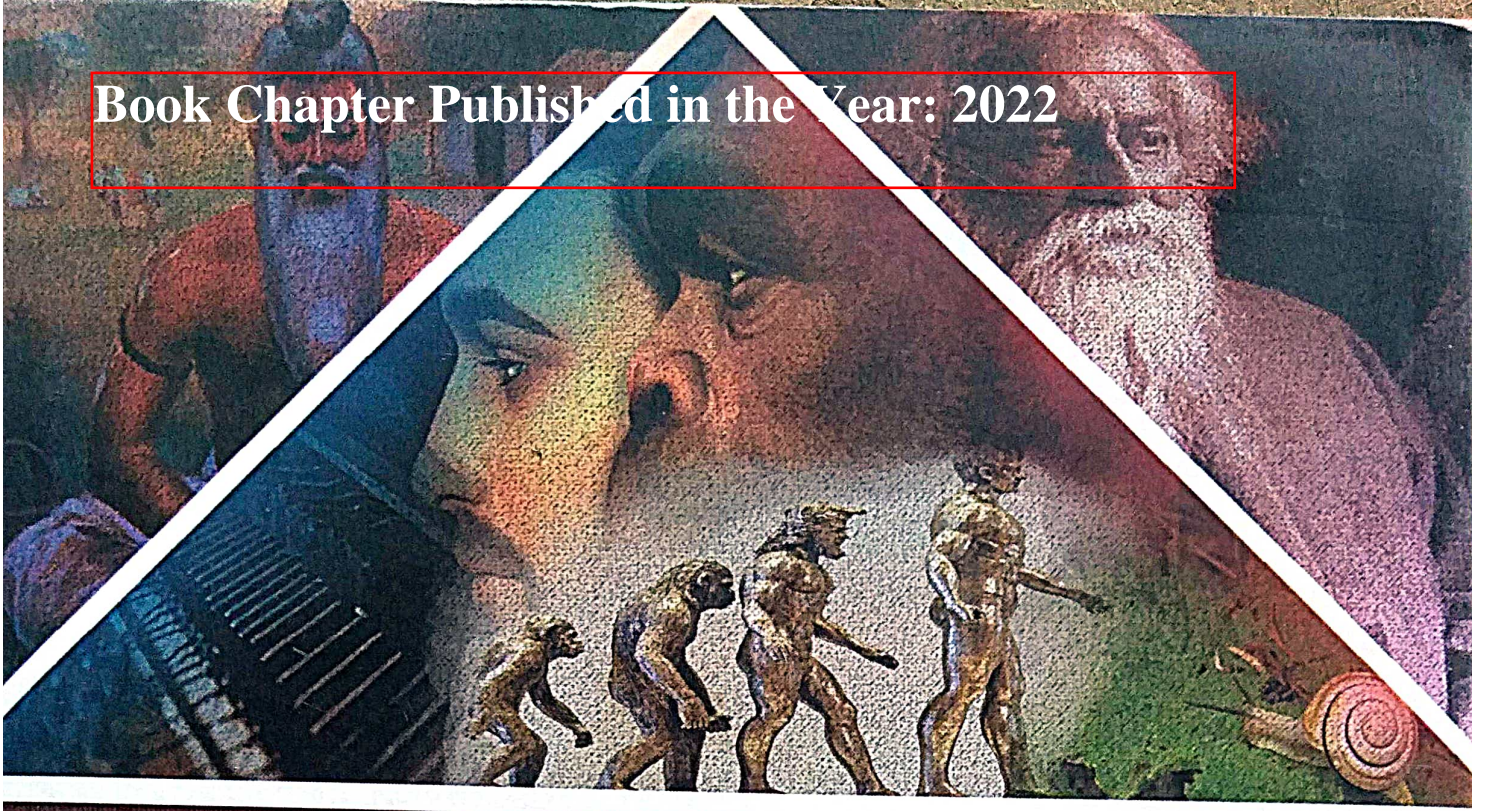
সুদীপ মন্ডল: দক্ষিণ চব্বিশ পরগনা জেলায় জন্মগ্রহণ করেন। উনি হলেন রাস্বিবিজ্ঞানের ছাত্র। বর্তমানে উনি রামকৃষ্ণ মিশন শিক্ষণ মন্দিরের ছাত্র। এছাড়াও উনি বেঙ্গল ইনস্টিটিউট অফ পলিটিক্যাল স্টাডিসের (বি.আই.পি.এস.) সদস্যও। উনি বিভিন্ন বইতে ও জার্নালে পঞ্চায়েত ব্যবস্থা এবং ভারত ও পশ্চিমবঙ্গের রাজনীতি নিয়ে নানান ধরনের লেখালেখি করেছেন। উনার উল্লেখযোগ্য একটি আর্টিকেল হল : "পাকিস্তান আইডিয়াস অফ গ্রাসরুট ডেভেলপমেন্ট এন্ড ইন্ডিয়ান ডেভেলপমেন্ট পলিসি ইন ২১st. সেঞ্চুরি"।

ননী গোপাল দাস: পূর্ব মেদিনীপুর জেলার অন্তর্গত ভূপতিদেগর থানার বাজকুল গ্রামের এক মাধ্যমিক পরিবারের জ্যেষ্ঠ পুত্র। ২০০৫ সালে বাজকুল বলাই চন্দ্র বিদ্যাপীঠ থেকে মাধ্যমিক ও উচ্চমাধ্যমিক কাজলাগড় এম এস বি সি এম হাইস্কুল থেকে ২০০৭ সালে পাশ করার পর দর্শন বিষয়ে ২০১০ সালে বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয় থেকে স্নাতক ও বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ২০১৩ সালে স্নাতকোত্তর। পরবর্তীতে দু'বছর যাবৎ বাজকুল বলাই চন্দ্র বিদ্যাপীঠ-এ আংশিক সময়ের শিক্ষক হিসেবে পড়ানোর অভিজ্ঞতা আছে এবং বর্তমানে স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে দর্শন বিভাগের স্টেট এডেড কলেজ টিচার হিসেবে অধ্যাপনার সঙ্গে নিযুক্ত। একটি রিসার্চ আর্টিকেল প্রকাশ করেছে ইন্টারন্যাশনাল

স্ট্যান্ডার্ড সিরিয়াল নাম্বার সহকারে, Title of Article: 'Socio-economical, mental and moral perspectives after the impact of COVID-19 and it's ways to recover at present'

মৌ চক্রবর্তী: লেখক, সম্পাদক, গবেষক। বর্তমানে যুক্ত সংগীত ভবন, বিশ্বভারতীতে গবেষণা কাজে। চারটি কবিতার বই, দুটি কাব্য উপন্যাস, একটি গল্প সংকলন প্রকাশিত। মেডেল প্রাপ্তি ভারতীয় স্তরে নাট্য বিষয়ে। সম্মাননা বাংলাদেশ আন্তর্জাতিক কবিতা উৎসব।

Book Chapter Published in the Year: 2022



অনুভব

সম্পাদনায় : মনোজ মাইতি এবং ননীগোপাল দাস



Anubhav

A Collection Of Eassay Edited by Monoj Maiti and Nanigopal Das

প্রকাশকাল: বইমেলা ২০২২ সাল

ISBN: 9789391506667

মনোজ মাইতি এবং ননীগোপাল দাস

গ্রন্থস্বত্ব: মনোজ মাইতি এবং ননীগোপাল দাস

মো: ৮৩৪৩০৬৯৭৪১

প্রচ্ছদ: অমর্ত্য বিশ্বাস

বর্ণসংস্থাপন ও বিন্যাস: প্লাসেন্টা টিম

নিবেদক: প্লাসেন্টা প্রকাশনী

www.placenta.in

কচিপাতা প্রকাশনার পক্ষে জয় কাপিশ, নিউ মার্কেট, পানাগড় বাজার,
পশ্চিম বর্ধমান থেকে মুদ্রিত ও কচিপাতা প্রকাশন কর্তৃক প্রকাশিত।

প্রাপ্তিস্থান: eduwalla.com, placenta.in, amazon, flipkart ও বিভিন্ন পুস্তকালয়।

বিনিময়: ₹৩৫০ টাকা মাত্র

সর্বস্বত্ব সংরক্ষিত:-

স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনো অংশেরই কোনো রূপ পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না। কোনো যান্ত্রিক উপায়ের মাধ্যমে (ইলেকট্রনিক, গ্রাফিক্স বা অন্য কোনো মাধ্যমে যেমন টেপ, ফটোকপি বা পুনরুদ্ধারের সুযোগ সংবলিত তথ্য সঞ্চয় করে রাখার কোনো পদ্ধতি) প্রতিলিপি করা যাবে না। পারফোরেটেড মিডিয়া, ডিস্ক, মেমোরী, টেপ বা অন্য কোনো তথ্য সংরক্ষণের যান্ত্রিক পদ্ধতিতে পুনরুৎপাদন করা যাবে না।



ননীগোপাল দাস, সম্পাদক:

পূর্ব মেদিনীপুর জেলার অন্তর্গত ভূপতিনগর থানার বাজকুল গ্রামের এক মধ্যবিত্ত পরিবারের জ্যেষ্ঠ পুত্র। ২০০৫ সালে বাজকুল বলাই চন্দ্র বিদ্যাপীঠ থেকে মাধ্যমিক ও উচ্চমাধ্যমিক কাজলাগড় এম এস বি সি এম হাইস্কুল থেকে ২০০৭ সালে পাশ করার পর দর্শন বিষয়ে ২০১০ সালে বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয় থেকে স্নাতক ও বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ২০১৩ সালে স্নাতকোত্তর। পরবর্তীতে দু'বছর যাবৎ বাজকুল বলাই চন্দ্র বিদ্যাপীঠ-এ আংশিক সময়ের শিক্ষক হিসেবে পড়ানোর অভিজ্ঞতা আছে এবং বর্তমানে স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে দর্শন বিষয়ে স্টেট এডেড কলেজ টিচার হিসেবে অধ্যাপনার সঙ্গে নিযুক্ত। দুটি রিসার্চ আর্টিকেল প্রকাশ করেছে ইন্টারন্যাশনাল স্ট্যান্ডার্ড সিরিয়াল নাম্বার সহকারে।

সূচিপত্র

১. প্রাচীন বাদ্যযন্ত্র গুলির বিবর্তনে প্রচলিত বাদ্যযন্ত্র, তরুন মিশ্র, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫। পৃষ্ঠা - ১৩

২. মানব জাতির উত্থান ও বিকাশে পরিবেশ ও রাজনীতি, শ্রীমন্ত দাস, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, রাজা বীরেন্দ্র চন্দ্র কলেজ, ইতিহাস বিভাগ, কান্দি, মুর্শিদাবাদ, পিন - ৭৪২১৩৭, পশ্চিমবঙ্গ। পৃষ্ঠা - ১৯

৩. রবীর পূজায় প্রেম, শম্পা মল্লিক, সংগীত বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫, পশ্চিমবঙ্গ। পৃষ্ঠা - ৩২

৪. গ্রামীণ এলাকায় শিশুদের স্বাস্থ্য বিধিসম্মত ব্যবস্থা, মৌমিতা সামন্ত, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, পুষ্টি বিভাগ, মুগবেড়িয়া গঙ্গাধর মহাবিদ্যালয়, মুগবেড়িয়া, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৪২৫। পৃষ্ঠা - ৪০

৫. মানুষ, পরিবেশ ও স্থিতিশীল উন্নয়ন - একটি বিশ্লেষণ, সুছন্দা বেরা, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, দর্শন বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, ৭২১৬৫৫, পূর্ব মেদিনীপুর, পশ্চিমবঙ্গ। পৃষ্ঠা - ৪৫

৬. রবীন্দ্র গীতধারায় বাউল দর্শনের প্রত্যক্ষতা, মধুশ্রী মাইতি শাসমল, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, সংগীত বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫, পশ্চিমবঙ্গ। পৃষ্ঠা - ৫৫

৭. একবিংশ শতাব্দীতে উত্তর ভারতীয় শাস্ত্রীয় সঙ্গীতের ঘরানার রূপরেখা, অনুপম জানা, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, সংগীত বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫, পশ্চিমবঙ্গ। পৃষ্ঠা - ৭৬

৮. স্থল শামুকের জীবন ইতিহাস, উর্মিতা চন্দ্র চৌধুরী, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, প্রাণিবিদ্যা বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, ৭২১৬৫৫, পূর্বমেদিনীপুর। পৃষ্ঠা - ৮৭

৯. প্রতিবন্ধী শিশুদের সমস্যা বিষয়ে পিতা-মাতাদের অবগতকরন, সুমন কামিলা, স্টেট এডেড

কলেজ টিচার, শিক্ষাবিজ্ঞান বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫, পশ্চিমবঙ্গ।
পৃষ্ঠা - ৯৪

১০. শিশুর সঠিক বিকাশে, রামধনু আসুক খাবার প্লেটে, রিম্পা মালাকার, রাজ্য সরকার অনুমোদিত কলেজ শিক্ষক, পুষ্টি বিভাগ, মেদিনীপুর কলেজ (স্বায়ত্তশাসিত), মেদিনীপুর, পশ্চিম মেদিনীপুর, পিন-৭২১১০১, পশ্চিমবঙ্গ।
পৃষ্ঠা - ৯৮

১১. উন্নততম জীব হিসাবে দাবীদার মানুষ (Homo sapiens sapiens) সত্যিই উন্নতির পথে না অবলুপ্তির দোরগোড়ায়; অভিব্যক্তিরহ আঙ্গিকে বিশ্লেষণ, সোমনাথ চ্যাটার্জী, স্টেট এডেড কলেজ টিচার-১, প্রাণীবিদ্যা বিভাগ, ড. ভূপেন্দ্রনাথ দত্ত স্মৃতি মহাবিদ্যালয়, হাটগোবিন্দপুর, পূর্ব বর্ধমান।
পৃষ্ঠা - ১০৯

১২. কাব্যের যুগের শাসন ব্যবস্থা, গঙ্গাধর মেইকাপ, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, ইতিহাস বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, ৭২১৬৫৫, পূর্ব মেদিনীপুর, পশ্চিমবঙ্গ।
পৃষ্ঠা - ১১২

১৩. বর্তমান সময়ে আয়ুর্বেদ চিকিৎসায় আমলকীর ব্যবহারিক প্রয়োগ, সুপ্রভাত দাস, শিক্ষার্থী, ব্যাচেলার অফ ফার্মেসি (WBUHS), হলদিয়া ইন্সটিটিউট অফ ফার্মেসী, হাতিবেড়িয়া, হলদিয়া, পূর্ব মেদিনীপুর পিন-৭২১৬৫৭, পশ্চিমবঙ্গ।
পৃষ্ঠা - ১১৫

১৪. মনুসংহিতার আলোকে প্রাচীন ভারতের যুদ্ধনীতি, অমিতাভ পাহাড়ী, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, সংস্কৃত বিভাগ, সেবা ভারতী মহাবিদ্যালয়, কাপগাড়ী, ঝাড়গ্রাম, পশ্চিমবঙ্গ।
পৃষ্ঠা - ১২৩

১৫. রবীন্দ্রনাথের সহজ পাঠ: শিশুমন ও শিশুশিক্ষা, ড. চন্দন বারিক, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, ইতিহাস বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, ৭২১৬৫৫, পূর্ব মেদিনীপুর, পশ্চিমবঙ্গ।
পৃষ্ঠা - ১২৭

১৬. নারী শিক্ষা সম্পর্কে স্বামী বিবেকানন্দের চিন্তাভাবনা: একটি পর্যালোচনা, সোনম মাইতি, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, মানব অধিকার বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫, পশ্চিমবঙ্গ।
পৃষ্ঠা - ১৩৯

অভিব্যক্তি

সম্পাদনায় : মনোজ মাইতি এবং ননীগোপাল দাস



ABHIBYAKTI

A Collection Of Bengali Essay Edited By Monoj Maiti & Nanigopal Das, Published By
Placenta Publication, Bagula College Para, Bagula, Nadia, Pin- 741502, May: 2022

ISBN: 978-93-94271-29-6

প্রকাশকাল: ২৫ শে বৈশাখ

Rs. 450. 00

প্রকাশক ও স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া কোনো উপায়েই এই গ্রন্থের কোনো অংশের কোনো রূপ
পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহন করা হবে।

সম্পাদক:

মনোজ মাইতি এবং ননীগপাল দাস

প্রচ্ছদ:

অমর্ত্য বিশ্বাস

বর্ণ সংস্থাপন:

রাহুল মণ্ডল

মুদ্রক:

লেসন কম্পিউটার, রানাঘাট

অনলাইন বিপণি:

Eduwalla.com, placenta.in ও Flipkart

Order on WhatsApp: +918637562282

অফলাইন বিপণি:

কলেজ স্ট্রিটের বিভিন্ন দোকান

মূল্য: চারশত পঞ্চাশ টাকা মাত্র

১১. বর্তমান সমাজ ও সামাজিক বিপর্যয়, অতীন কুমার মাইতি, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, সমাজবিজ্ঞান বিভাগ, স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়, আমদাবাদ, নন্দীগ্রাম, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫০।
১২. বিবেকানন্দের শিক্ষা দর্শন: প্রসঙ্গ অত্যাধুনিক শিক্ষা, সেক তাবারক আলী, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, দর্শন বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫।
১৩. ত্রুটিপূর্ণ খাদ্যভাস ও ক্যান্সার, পিউ শাসমল, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, পুষ্টি বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫।
১৪. পরিবেশের ওপর নগরায়নের প্রভাব: একটি আলোচনা, শুভদীপ ঘোষ, স্টেট এডেড কলেজ টিচার ক্যাটেগরি - ১, সমাজতত্ত্ব বিভাগ, ময়না কলেজ, ময়না, পূর্ব মেদিনীপুর।
১৫. বিবেকানন্দ ও রবীন্দ্রনাথ সম্পর্কের অতীন্দ্রিয় বন্ধন, ড. পিয়া বিশ্বাস, স্টেট এডেড কলেজ টিচার ক্যাটেগরি-১, বাংলা বিভাগ, সিউড়ি বিদ্যাসাগর কলেজ, সিউড়ি, বীরভূম।
১৬. সংস্কৃত ভাষার গৌরব, বাসুদেবতা উপলক্ষি, জগন্নাথ মেইকাপ, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, সংস্কৃতি বিভাগ, মুগবেড়িয়া গঙ্গাধর মহাবিদ্যালয়, মুগবেড়িয়া, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৪২৫।
১৭. আত্ম অনুশোচনায় জীবন, দেবশীষ গিরি, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, দর্শন বিভাগ, যোগদা সংস্ক পালপাড়া মহাবিদ্যালয়, পালপাড়া, পূর্ব মেদিনীপুর।
১৮. স্বজাতিভক্ষণ, সোমনাথ চ্যাটার্জী, স্টেট এডেড কলেজ টিচার-১, প্রাণীবিদ্যা বিভাগ, ড. ভূপেন্দ্রনাথ দত্ত স্মৃতি মহাবিদ্যালয়, হাটগোবিন্দপুর, পূর্ব বর্ধমান।
১৯. চা পানের স্বাস্থ্য উপকারিতা, রিম্পা মালাকার, পুষ্টি বিভাগ, মেদিনীপুর কলেজ (স্বায়ত্তশাসিত), মেদিনীপুর, পশ্চিম মেদিনীপুর, ৭২১১০২, পশ্চিমবঙ্গ।
২০. নারীর ক্ষমতায়ন ও জনজীবনের উন্নয়ন, মানসী মাইতি, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, শিক্ষাবিজ্ঞান বিভাগ, স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়, আমদাবাদ, নন্দীগ্রাম, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫০।
২১. ভারতের উপভোক্তা সুরক্ষা আইন: সুরীক্ষিত ক্রেতা, পদ্মাবতী চৌধুরী, স্টেট এডেড কলেজ টিচার, মানব অধিকার বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫, পশ্চিমবঙ্গ।

সূচিপত্র

১. যোগ সম্পর্কে প্রকৃত ধারণা, সৌমেন্দ্র নাথ মান্না পৃষ্ঠা - ১৮
২. বৈদিক যুগের নারী এবং বর্তমানে তাদের প্রাসঙ্গিকতা, সুদীপ্ত কুমার করণ পৃষ্ঠা - ২২
৩. মশরুম চাষের পদ্ধতি ও উপকারিতা, মৌমিতা সামন্ত পৃষ্ঠা - ৩০
৪. সাহিত্য মানবজীবন ও বর্তমান সময়: একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা, সুচেতা আদক পৃষ্ঠা - ৩৫
৫. জীববৈচিত্র্য রক্ষায় মানুষের কর্তব্য, রতন ঘোড়াই পৃষ্ঠা - ৪০
৬. মানব কল্যাণে পতঙ্গ জগতের অবদান: একটি আদিম সম্পর্কের ইতিবাচক পর্যালোচনা, শুভ্রনীল ব্রহ্ম পৃষ্ঠা - ৫১
৭. আণবিক বিশৃঙ্খলা ও মহাবিশ্বের নিয়তি, শুভদীপ জানা পৃষ্ঠা - ৬৬
৮. নারী ও নারীবাদ: আধুনিক সমাজে একটি কালো সাদা দৃশ্যকল্প, সুজিত মাইতি ও সুছন্দা বেরা পৃষ্ঠা - ৭০
৯. কাশিমবাজার, শ্রীমন্ত দাস পৃষ্ঠা - ৮১
১০. আত্মা, প্রকৃতি ও ঈশ্বর: স্বামী বিবেকানন্দের ব্যাখ্যায় বিশ্বমুক্তি, বিশ্বপ্রেম ও বিশ্বশান্তি সুরজিৎ মান্না পৃষ্ঠা - ৯১
১১. বর্তমান সমাজ ও সামাজিক বিপর্যয়, অতীন কুমার মাইতি পৃষ্ঠা - ১০০
১২. বিবেকানন্দের শিক্ষা দর্শন: প্রসঙ্গ অত্যাধুনিক শিক্ষা, সেক তাবারক আলী পৃষ্ঠা - ১০৭
১৩. ক্রটিপূর্ণ খাদ্যাভ্যাস ও ক্যান্সার, পিউ শাসমল পৃষ্ঠা - ১১৬
১৪. পরিবেশের ওপর নগরায়নের প্রভাব: একটি আলোচনা, শুভদীপ ঘোষ পৃষ্ঠা - ১৫১
১৫. বিবেকানন্দ ও রবীন্দ্রনাথ সম্পর্কের অতীন্দ্রিয় বন্ধন, ড. পিয়া বিশ্বাস পৃষ্ঠা - ১৫৬
১৬. সংস্কৃত ভাষার গৌরব, বাস্তবতা উপলব্ধি, জগন্নাথ মেইকাপ পৃষ্ঠা - ১৬৭
১৭. আত্ম অনুশোচনায় জীবন, দেবশীষ গিরি পৃষ্ঠা - ১৭২
১৮. স্বজাতি ভক্ষণ, সোমনাথ চ্যাটার্জী পৃষ্ঠা - ১৭৫
১৯. চা পানের স্বাস্থ্য উপকারিতা, রিম্পা মালাকার পৃষ্ঠা - ১৮০
২০. নারীর ক্ষমতায়ন ও জনজীবনের উন্নয়ন, মানসী মাইতি পৃষ্ঠা - ১৮৩
২১. ভারতের উপভোক্তা সুরক্ষা আইন: সুরীক্ষিত ক্রেতা, পদ্মাবতী চৌধুরী পৃষ্ঠা - ১৮৮
২২. আধুনিককালে মনুষ্যজীবনে যোগশাস্ত্রের প্রাসঙ্গিকতা, সৌরভ গোস্বামী পৃষ্ঠা - ১৯৫
২৩. স্বামী বিবেকানন্দ চিন্তাচেতনায়: জাতীয়তাবাদ, সোনম মাইতি পৃষ্ঠা - ২০
২৪. নিক্কাম কর্মই মোক্ষলাভের উপায়: শ্রীমদ্ভগবদগীতার আলোকে, সুমিত্রা সাহ পৃষ্ঠা - ২১৪
২৫. দৃষ্টি প্রতিবন্ধী শিশুদের শিক্ষার সমস্যা ও সমাধানের উপায়, সুমন কামিলা পৃষ্ঠা - ২২১

নারীর ক্ষমতায়ন ও জনগণের উন্নয়ন

মানসী মাইতি

সারসংক্ষেপ: 'To awaken the people, it is the women who must be awakened. Once she is on the move, the family moves, the village moves, the nation moves'

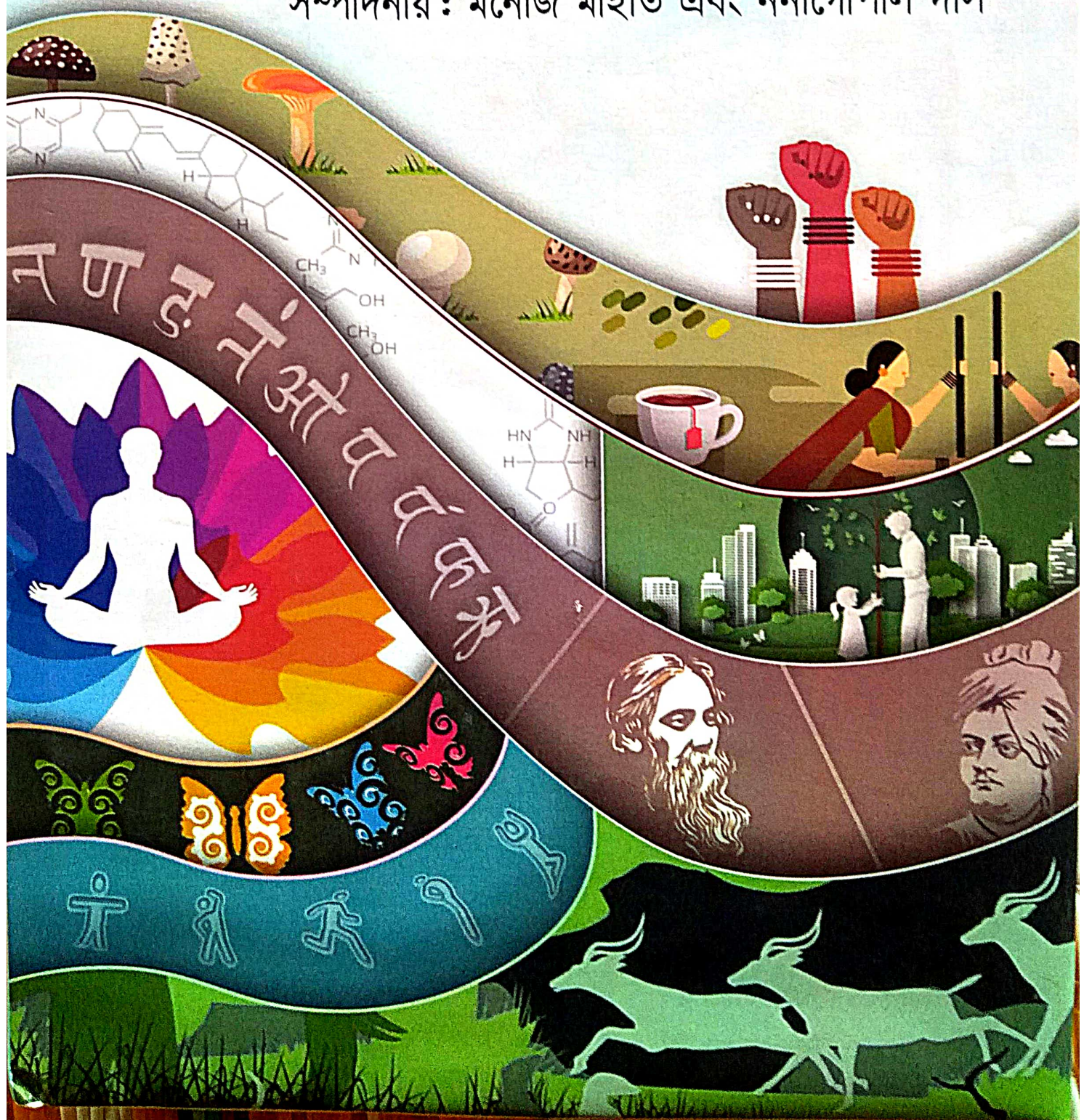
Pandit Jawaharlal Nehru: নারী শিক্ষা দেশ ও জাতীর অগ্রগতির একমাত্র প্রধান দায়িত্বপূর্ণ কর্তব্য। নারী শিক্ষার মাধ্যমে যেমন একজন নারীর মনের অবগুহ্ন, কালিমা দরীভূত হয়, তেমনি তাঁর হাত ধরেই সমস্ত সভ্যতা, পরিবার, সমাজ, রাষ্ট্র শিক্ষার অর্নিবান আলোকে উজ্জ্বল হয়ে ওঠে। নারী শিক্ষাই নারীর ক্ষমতায়নের পথ প্রশস্ত করে আবার নারী ক্ষমতায়নের মাধ্যমে নারীদের সামাজিক প্রতিটি ক্রিয়াকর্মে, প্রথায়, পরিস্থিতিতে সঠিক সিদ্ধান্ত নিতে পারার ক্ষমতা দক্ষতা তৈরি হয়। নারী ক্ষমতা প্রাপ্ত হলে বিভিন্ন দিক থেকে সমাজের আমূল পরিবর্তন সংগঠিত হয়। নারীর ক্ষমতায়নের লক্ষ্যে পৃথিবীর পাশ্চাত্য দেশগুলি বিভিন্ন পদক্ষেপ গ্রহণ করেছে যার মাধ্যমে নারীর স্বনির্ভরতা দেশের অর্থনৈতিক মানদণ্ড সংগঠিত করে। সরকারি-বেসরকারি বিভিন্ন স্তরের নিতানতুন নারী শিক্ষা ও নারী ক্ষমতায়নের উদ্দেশ্যে পদক্ষেপ গৃহীত হচ্ছে আধুনিক সমাজ ব্যবস্থায় নারী-পুরুষের সমান মর্যাদা ও বিশেষভাবে সমর্থিত, প্রশংসিত।

প্রধান শব্দবন্ধ: শিক্ষা, ক্ষমতায়ন, উন্নয়ন।

ভূমিকা: নারী ক্ষমতায়নের ইতিহাস: পৃথিবীর বহুদেশ নারী স্বাধীনতা কে প্রাধান্য দিয়ে নারী শিক্ষার পাশাপাশি ক্ষমতায়নকে বিশেষ স্বীকৃতি প্রদান করে উন্নয়নশীল ও পিছিয়ে পড়া রাষ্ট্রগুলিতে নারীকে পর্দার আড়ালে রেখে, সম্পূর্ণভাবে বহির্জগৎ থেকে পৃথক করে রাখার প্রয়াস দেখা গেছে। ভারতবর্ষে ১৯ সালের ২৬ শে জানুয়ারি সংবিধান সংগঠনের সময়, সামাজিক বৈষম্যতাকে দরীভূত করে ১৪ ও ১৬ নং ধারায় নারী ও পুরুষের সমান অধিকার ঘোষিত। ১৯৬৬ সালে ভারতের প্রধানমন্ত্রী হিসেবে দায়িত্বভার গ্রহণ করেন এক মহীয়সী রমণী ইন্দিরা গান্ধী। নারী ক্ষমতায়নের পথ এটি

অভিব্যক্তি

সম্পাদনায় : মনোজ মাইতি এবং ননীগোপাল দাস



ABHIBYAKTI

A Collection Of Bengali Essay Edited By Monoj Maiti & Nanigopal Das, Published By
Placenta Publication, Bagula College Para, Bagula, Nadia, Pin- 741502, May: 2022

ISBN: 978-93-94271-29-6

প্রকাশকাল: ২৫ শে বৈশাখ

Rs. 450. 00

প্রকাশক ও স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া কোনো উপায়েই এই গ্রন্থের কোনো অংশের কোনো রূপ
পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহন করা হবে।

সম্পাদক:

মনোজ মাইতি এবং ননীপাল দাস

প্রচ্ছদ:

অমর্ত্য বিশ্বাস

বর্ণ সংস্থাপন:

রাহুল মণ্ডল

মুদ্রক:

লেসন কম্পিউটার, রানাঘাট

অনলাইন বিপণি:

Eduwalla.com, placenta.in ও Flipkart

Order on WhatsApp: +918637562282

অফলাইন বিপণি:

কলেজ স্ট্রিটের বিভিন্ন দোকান

মূল্য: চারশত পঞ্চাশ টাকা মাত্র

পরিচিতি: ননীগোপাল দাস, সম্পাদক



অধ্যাপক ও লেখক পূর্ব মেদিনীপুর জেলার অন্তর্গত ভূপতিনগর থানার বাজকুল গ্রামের এক মধ্যবিত্ত পরিবারের জ্যেষ্ঠ পুত্র। ২০০৫ সালে বাজকুল বলাই চন্দ্র বিদ্যাপীঠ থেকে মাধ্যমিক ও কাজলগাউ এম এস বি সি এম হাইস্কুল থেকে ২০০৭ সালে উচ্চমাধ্যমিক পাশ করার পর দর্শন বিষয়ে ২০১০ সালে বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয় থেকে স্নাতক ও বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ২০১৩ সালে স্নাতকোত্তর। পরবর্তীতে দুবছর যাবৎ বাজকুল বলাই চন্দ্র বিদ্যাপীঠ-এ আংশিক সময়ের শিক্ষক হিসেবে পড়ানোর অভিজ্ঞতা আছে এবং বর্তমানে স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে দর্শন বিষয়ে স্টেট এডেড কলেজ টিচার হিসেবে অধ্যাপনার সঙ্গে নিযুক্ত। দুটি রিসার্চ আর্টিকেল প্রকাশ করেছে ইন্টারন্যাশনাল স্ট্যাডার্ড সিরিয়াল নাম্বার সহকারে - 'Socio-economic, mental and moral perspectives after the impact of COVID-19 and it's ways to recover at present' Ges 'A review on mental stress and its physiological effects with special reference to yoga and physical exercise'। তিনি রিসার্চ আর্টিকেল ইন্টারন্যাশনাল স্ট্যাডার্ড বুক নাম্বার সহকারে 'Health awareness is the best suppressant of pandemic in activity of COVID-19', 'COVID-19 মহামারীর প্রভাবের জনজীবনে আর্থ-সামাজিক, মানসিক ও নৈতিক দৃষ্টিভঙ্গি এবং বর্তমানে এর প্রতিকার ব্যবস্থা' এবং 'দর্শনের মূল্য কোথায়?' প্রকাশিত হয়েছে। উনোষ সাহিত্য পত্রিকায় প্রকাশিত হয়েছে- 'আমরা কেমন আছি', ও 'হৃদয় পত্রিকা' প্রকাশিত 'ধূমপানের আত্মকথা', 'বৃক্ষদরদী'- নামক কবিতা। তাঁর সম্পাদিত বই 'প্রতিফলন' ও 'অনুভব' প্রকাশিত হয়েছে ইন্টারন্যাশনাল স্ট্যাডার্ড বুক নাম্বার সহকারে।

সম্পাদক মন্ডলী

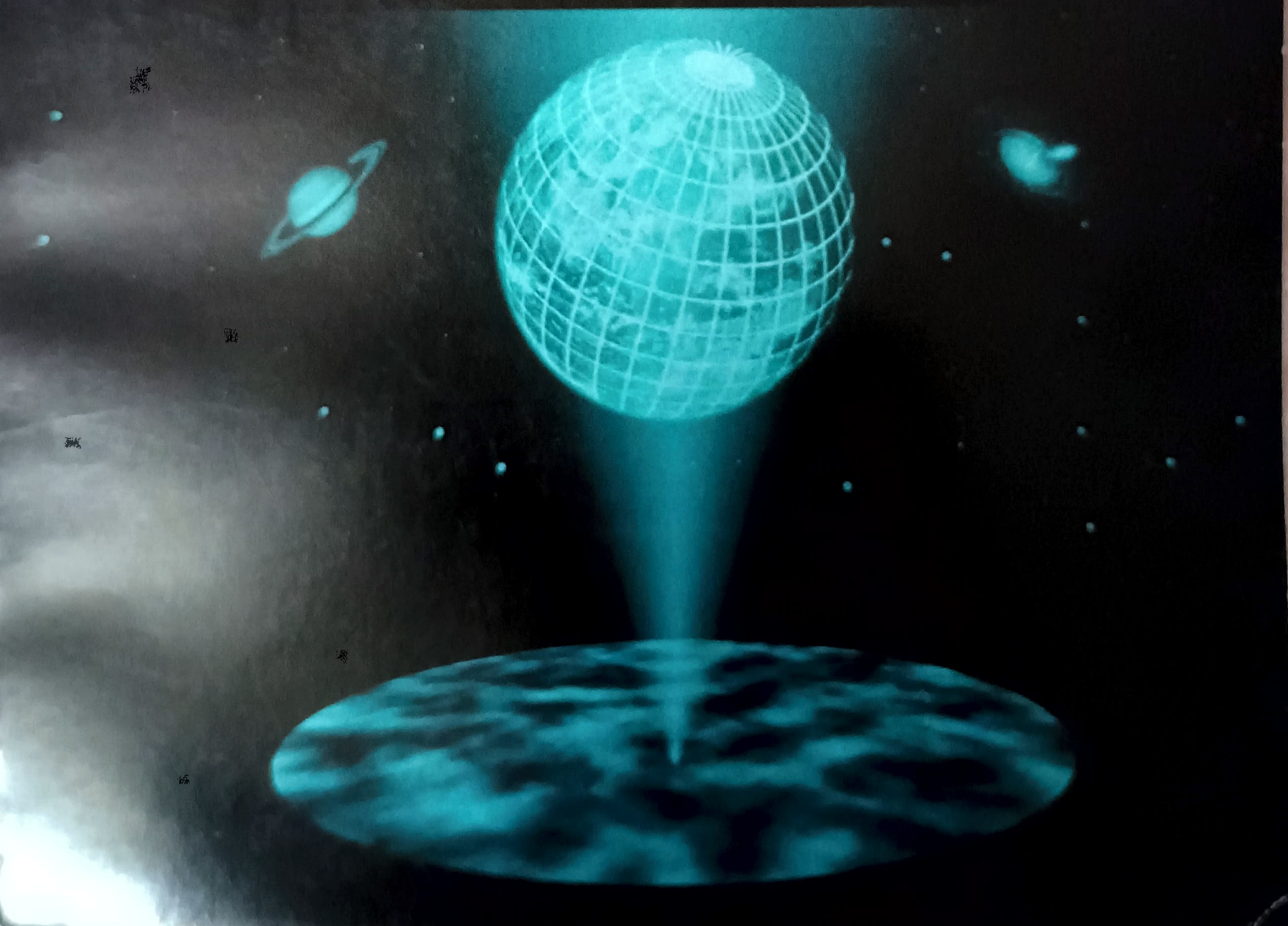
<p>১. মনোজ মাইতি, স্নাতকোত্তর (ফার্স্ট ক্লাস), হিউমান ফিজিওলজি সাবজেক্ট, বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়, পিএইচটি স্কলার (স্টেট ফর এনভায়রনমেন্টাল স্টাডিজ, বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়), অ্যাডভান্স ডিপ্লোমা ইন কম্পিউটার অ্যাপ্লিকেশন। স্টেট এডেড কলেজ টিচার, শারীরবিদ্যা বিভাগ, বাজকুল মিলনী মহাবিদ্যালয়, বাজকুল, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫৫, পশ্চিমবঙ্গ। ফর্মার গেস্ট টিচার, শারীরবিদ্যা বিভাগ, যোগদা সংসদ পালপাড়া মহাবিদ্যালয় এবং মহিষদল রাজ কলেজ।</p> <p>যোগাযোগের ঠিকানা: ৮৩৪৩০৬৯১৪১</p> <p>Email ID: matimonoj@gmail.com</p>	
<p>২. ননীগোপাল দাস, স্নাতকোত্তর, দর্শন বিষয় (ফার্স্ট ক্লাস), বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়। স্টেট এডেড কলেজ টিচার, দর্শন বিভাগ, স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়, আমদাবাদ, নন্দীগ্রাম, পূর্ব মেদিনীপুর, ৭২১৬৫০, পশ্চিমবঙ্গ।</p> <p>যোগাযোগের ঠিকানা: ৯৬৩৫৫৫৪২৫১৬</p> <p>Email ID: dasnaniGOPAL96@gmail.com</p>	
<p>৩. দেবব্রত কবি, স্নাতকোত্তর, হিফি বিষয় (ফার্স্ট ক্লাস), বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়। স্টেট এডেড কলেজ টিচার, ডিপার্টমেন্ট অফ হিফি, সিদ্ধিনাথ মহাবিদ্যালয়, পাঁশকুড়া, পূর্ব মেদিনীপুর।</p> <p>যোগাযোগের ঠিকানা - ৯৯৩২১০৭০৩</p> <p>Email ID: debabratakab03@gmail.com</p>	

১. যোগ সম্পর্কে প্রকৃত ধারণা, সৌমেন্দ্র নাথ মান্না পৃষ্ঠা - ১৮
২. বৈদিক যুগের নারী এবং বর্তমানে তাদের প্রাসঙ্গিকতা, সুদীপ্ত কুমার করণ পৃষ্ঠা - ২২
৩. মাশরুম চাষের পদ্ধতি ও উপকারিতা, মৌমিতা সামন্ত পৃষ্ঠা - ৩০
৪. সাহিত্য মানবজীবন ও বর্তমান সময়: একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা, সুচেতা আদক পৃষ্ঠা - ৩৫
৫. জীববৈচিত্র্য রক্ষায় মানুষের কর্তব্য, রতন ঘোড়াই পৃষ্ঠা - ৪০
৬. মানব কল্যাণে পতঙ্গ জগতের অবদান: একটি আদিম সম্পর্কের ইতিবাচক পর্যালোচনা, শুভ্রনীল ব্রহ্ম পৃষ্ঠা - ৫১
৭. আণবিক বিশৃঙ্খলা ও মহাবিশ্বের নিয়তি, শুভদীপ জানা পৃষ্ঠা - ৬৬
৮. নারী ও নারীবাদ: আধুনিক সমাজে একটি কালো সাদা দৃশ্যকল্প, সুজিত মাইতি ও সুছন্দা বেরা পৃষ্ঠা - ৭০
৯. কাশিমবাজার, শ্রীমন্ত দাস পৃষ্ঠা - ৮১
১০. আত্মা, প্রকৃতি ও ঈশ্বর: স্বামী বিবেকানন্দের ব্যাখ্যায় বিশ্বমুক্তি, বিশ্বপ্রেম ও বিশ্বশান্তি সুরজিৎ মান্না পৃষ্ঠা - ৯১
১১. বর্তমান সমাজ ও সামাজিক বিপর্যয়, অতীন কুমার মাইতি পৃষ্ঠা - ১০০
১২. বিবেকানন্দের শিক্ষা দর্শন: প্রসঙ্গ অত্যাধুনিক শিক্ষা, সেক তাবারক আলী পৃষ্ঠা - ১০৭
১৩. ত্রুটিপূর্ণ খাদ্যভ্যাস ও ক্যান্সার, পিউ শাসমল পৃষ্ঠা - ১১৬
১৪. পরিবেশের ওপর নগরায়নের প্রভাব: একটি আলোচনা, শুভদীপ ঘোষ পৃষ্ঠা - ১৫১
১৫. বিবেকানন্দ ও রবীন্দ্রনাথ সম্পর্কের অতীন্দ্রিয় বন্ধন, ড. পিয়া বিশ্বাস পৃষ্ঠা - ১৫৬
১৬. সংস্কৃত ভাষার গৌরব, বাস্তবতা উপলব্ধি, জগন্নাথ মেইকাপ পৃষ্ঠা - ১৬৭
১৭. আত্ম অনুশোচনায় জীবন, দেবশীষ গিরি পৃষ্ঠা - ১৭২
১৮. স্বজাতি ভক্ষণ, সোমনাথ চ্যাটার্জী পৃষ্ঠা - ১৭৫
১৯. চা পানের স্বাস্থ্য উপকারিতা, রিম্পা মালাকার পৃষ্ঠা - ১৮০
২০. নারীর ক্ষমতায়ন ও জনজীবনের উন্নয়ন, মানসী মাইতি পৃষ্ঠা - ১৮৩
২১. ভারতের উপভোক্তা সুরক্ষা আইন: সুরীক্ষিত ক্রেতা, পদ্মাবতী চৌধুরী পৃষ্ঠা - ১৮৮
২২. আধুনিককালে মনুষ্যজীবনে যোগশাস্ত্রের প্রাসঙ্গিকতা, সৌরভ গোস্বামী পৃষ্ঠা - ১৯৫
২৩. স্বামী বিবেকানন্দ চিন্তাচেতনায়: জাতীয়তাবাদ, সোনম মাইতি পৃষ্ঠা - ২০
২৪. নিষ্কাম কর্মই মোক্ষলাভের উপায়: শ্রীমদ্ভগবদগীতার আলোকে, সুস্মিতা সাহ পৃষ্ঠা - ২১৪
২৫. দৃষ্টি প্রতিবন্ধী শিশুদের শিক্ষার সমস্যা ও সমাধানের উপায়, সুমন কামিলা পৃষ্ঠা - ২২১

COSMOS: An Effortless and Evergreen Journey on Geo-environmental Track

(Volume-IV: 2021-'22:2nd Research Based Issue: An Effort from Root Level)

**Edited By:
Rabin Das & Dr. Pijush Kanti Dandapath**



Published by
Ashrudyuti Majumdar
Nectar
206, Bidhan Sarani
Kolkata-700006

First Published: 15.06. 2022

Copy Right Holder:
UG & PG Department of Geography
Bajkul Milani Mahavidyalaya
Kismat Bajkul, Purba Medinipur-721655

ISBN: 978-93-84241-71-1

Price Rs. Four hundred only

Page set-up & Printed by
Nectar
206, Bidhan Sarani
Kolkata-700006

Contents

Sl. No.	Topic	Author (s)	Page No.
1.	<i>Riverine Pollution of Haldi River: A Perception Based Study in and around the Narghat Village, Purba Medinipur, West Bengal</i>	Dr. Pijush Kanti Dandapath, Miss Sumitra Rani Jana and Dr. Baikuntha Behari Josh	1-10
2.	<i>Watershed Characterization by Hypsometric Analysis using Geospatial Techniques: Gagas Watershed, Uttarakhand, India</i>	Surajit Dutta, Sapna Bisht & Satyapriya Mahato	11-21
3.	<i>The Status of Tribal Women in West Bengal: A Qualitative Approach</i>	Aparesh Mondal	22-29
4.	<i>Feminist Qualitative Research on Education: Uncovering Gender Inequalities</i>	Sanjit Debnath	30-36
5.	<i>Armored mud balls and clay bedrock exposure sedimentation at Sankarpur-Chandpur-Tajpur Coastal Tract in PurbaMedinipur</i>	Mintu Jana & Taniya Roy	37-54
6.	<i>Flood Impact Assessment on Landscape: A Case Study of Chistipur-I Village at the Lower Catchment of Keleghai River Basin of PurbaMedinipur in West Bengal</i>	Susanta Ban & Rakesh Patra	55-69
7.	<i>A Brief Theological and Theoretical Review of the Origin, Evolution and Nature of Humans, Culture and Religion</i>	Rabin Das	70-82
8.	<i>The Globalization of Environmental Education</i>	Dr. Debashis Manna	83-86
9.	<i>Impact of Coastal Erosion on Habitation and Occupation of the Fishing Community of Chandpur Village under Ramnagar-I C.D Block in Purba Medinipur District, West Bengal</i>	Dr. Baikuntha Behari Josh, Miss. Sumitra Rani Jana, Dr. Pijush Kanti Dandapath & Pabitra Samanta	87-103
10.	<i>Impacts of Shrimp Farming on the Rural Livelihood and Local Environment: A Perception Study on Chhanberia Village under Deshapran CD Block of Purba Medinipur District in West Bengal</i>	Bishnupada Pal & Rabin Das	104-136
11.	<i>Geo-environmental Connection between Human Health and Townscape as well as Streetscape: A Fission-Fusion Study on Ward-01 under Haldia Municipality in Purba Medinipur District, West Bengal</i>	Jibanananda Samanta & Rabin Das	137-168
12.	<i>Impact of Covid-19 Pandemic on Informal Sector: A case study on tourism centric Worker and Women domestic Worker at Digha Surrounding Village in West Bengal, 2020-2021</i>	Putul Das, Bikash Bhunia, Sikha Kar	169-181
13.	<i>Aquaculture Dynamics and Its Impacts on Livelihood and Environment: A Case Study on Nandigram-I CD Block in Purba Medinipur District</i>	Shakir Alam Shah, Rabin Das & Nirupama Ranjit	182-208
14.	<i>An Optimistic Policy Journey from 5R's to 7R's: A Unique Pathway and Technique in Essence towards Zero Waste Management and Environmental Sustainability</i>	Suman Pahari & Rabin Das	209-221
15.	<i>A Perception Study on the Recent Water Degradation in Narayandari Village under Bhagwanpur-I CD Block in Purba Medinipur District, West Bengal</i>	Sk. Haphejul Islam & Rabin Das	222-250

The Status of Tribal Women in West Bengal: A Qualitative Approach

- **Aparesh Mondal**
- Assistant Professor and Head, Dept. of Geography, Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya

I. Introduction:

West Bengal is a state in eastern India with a diverse population and a rich cultural heritage. The state is home to several tribal communities, including the Santals, Oraons, Mundas, and others. Women in tribal societies in West Bengal play important roles in their communities, often contributing to the household economy and participating in decision-making processes.

In many tribal societies in West Bengal, women are responsible for agriculture and household chores, including cooking, cleaning, and caring for children. They may also participate in local markets, selling goods such as vegetables, handicrafts, and traditional medicines. Women often work alongside men in fields and forests, collecting firewood, fodder, and other resources.

Tribal societies in West Bengal often have a strong sense of community and collective decision-making. Women may participate in community meetings and decision-making processes, although their level of participation may vary depending on the specific community and its customs.

However, like many other parts of India, tribal societies in West Bengal also face challenges related to gender inequality and discrimination. Women may have limited access to education and healthcare, and may be subject to gender-based violence and other forms of discrimination. The literacy rate among tribal women in West Bengal is significantly lower than the state average, and they face barriers in accessing education due to poverty, social norms, and lack of infrastructure. Many tribal women are also engaged in manual labor or work in informal sectors, and their work is often undervalued and underpaid.

Despite these challenges, several government and non-government organizations are working to improve the socio-economic status and empower tribal women in West Bengal through various programs and initiatives. These initiatives include providing education and vocational training, improving healthcare facilities, and promoting women's rights and gender equality.

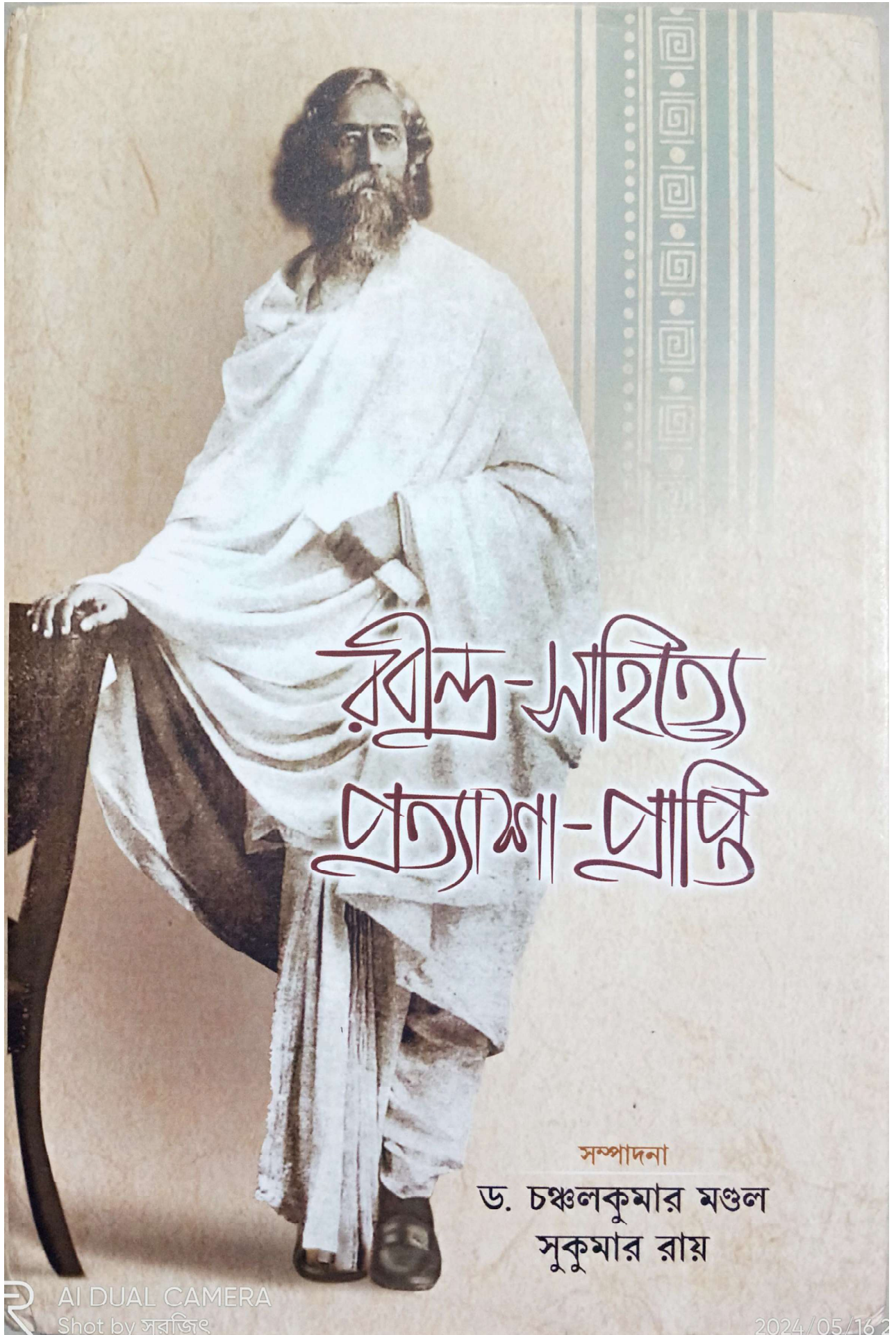
II. The status and role of tribal women in West Bengal:

2.1 Tribal Women and Society:

Tribal women in West Bengal play a crucial role in the society, particularly in the areas of agriculture, forest-based livelihoods, and handicrafts. They are also the custodians of traditional knowledge and cultural practices of their communities. In many tribal societies, women play important roles in the family and community. They are often responsible for the care of children, the preparation of food, and the maintenance of the household. They may also be involved in traditional crafts and other forms of production, such as weaving, pottery, or basket-making. In some cases, women also participate in subsistence activities, such as hunting, fishing, or farming.

References:

- Chanda, Anuradha. Tribal Women. In Bagchi, Jadodhara (ed.) The Changing Status of Women in West Bengal, 1970- 2000 The Challenge Ahead, New Delhi. Sage Publication. 2005. Pp 130-144
- Mitra, A. 2008. "The Status of Women among Scheduled Tribes in India", Journal of Socio Economics, 37(3):1202-1217.
- Murdock, G P. 1949. Social Structure, Macmillan, New York.
- Sharma, S.P. and Mittal, A.C. 1998), The Tribal Women in India, Vol. 2, Radha Publications, New Delhi.
- Singh, S.K. and Singh, A.K. (2006), "Sustainable Development and Tribal women", Land and Forest Rights of the Tribals Today (ed.)
- Sinha, Archana (2006), "Economic Empowerment and Amelioration of Tribals in India", Kurukshetra, Vol. 54, No. 9, July, pp. 3- 13
- Verma P. (1960). Socio-cultural Organizations of Tribals. Metro Publishers, Rajasthan.
- Vyas, N.N. (1971). "Tribal Development in Rajasthan", Tribe, 7, (4), pp. 1-3.



বীন্দ্র-আহিত্যে প্রত্যাশা-প্রাপ্তি

সম্পাদনা

ড. চঞ্চলকুমার মণ্ডল
সুকুমার রায়



AI DUAL CAMERA
Shot by সুরজিৎ

2024/05/16 2

রবীন্দ্র-সাহিত্যে প্রত্যাশা-প্রাপ্তি

সম্পাদনা

ড. চঞ্চলকুমার মণ্ডল

সুকুমার রায়

প্রজ্ঞাবিকাশ

৯/৩ রমানাথ মজুমদার স্ট্রিট, কলকাতা-৭০০ ০০৯

Rabindra-Sahitye Pratyasa-Prapti

by : Dr. Chanchal kr. Mondal & Sukumar Roy

ISBN : 978-93-91321-03-1

গ্রন্থস্বত্ব : ড. চঞ্চলকুমার মণ্ডল ও সুকুমার রায়

স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই গ্রন্থের কোনো অংশেরই কোনোরূপ পুনরুৎপাদন বা কোনো যান্ত্রিক উপায়ের মাধ্যমে প্রতিলিপি করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা হবে।

প্রকাশক :

বিকাশ সাধুখাঁ

৯/৩, রমানাথ মজুমদার স্ট্রিট

কলকাতা-৭০০ ০০৯

প্রথম প্রকাশ : জুন ২০২২

অক্ষর বিন্যাস :

অক্ষর লেজার

২, হেমেন্দ্র সেন স্ট্রিট

কলকাতা-৭০০ ০০৬

মুদ্রক :

স্পেকট্রাম অফসেট

৫বি, কুণ্ডু লেন

কলকাতা-৭০০ ০৩৭

মূল্য : ৪০০ টাকা মাত্র

সূচি

□ যুগল মিলন শ্রোতে : রবীন্দ্র-গান ও কবিতা —নিরুপম আচার্য	১১
□ লিপিকা : আমার অনুভবে —ড. মানস আচার্য	১৭
□ ‘মুক্তধারায়’ যন্ত্রভাবনা ও মানুষের প্রত্যাশা —ড. মৃদুল ঘোষ	২৮
□ ‘ঈশ্বর চেতনা’ রবীন্দ্র-সাহিত্যের এক অনন্য প্রত্যাশা —সুব্রত রায়	৩৪
□ রামায়ণের রূপকার্থ সন্ধানী রবীন্দ্রনাথ —মৃন্ময় কুমার মাহাত	৪০
□ রবীন্দ্রনাথের শিক্ষা বিষয়ক ভাবনা —অমলেশ পাত্র	৪৭
□ ‘মালিনী’ কাব্যনাট্য : মালিনীর বিবর্তন —ড. অরূপ পলমল	৫৬
□ বাঙালি শিশুর প্রাইমার ভাবনায় রবীন্দ্রনাথের সহজ পাঠ —সৌরভ দাস	৬০
□ রবীন্দ্র-নৃত্যনাট্যে প্রতিবাদ : প্রত্যাশা ও প্রাপ্তি —ড. মৌমিতা সরকার	৬৬
□ প্রত্যাশায় লোকসংস্কৃতিবিদ রবীন্দ্রনাথ ও প্রাপ্তি রবীন্দ্র-কাব্যে —ড. সুশান্ত মণ্ডল	৭৩
□ প্রেম-মনস্তত্ত্বের আলোকে ‘কঙ্কাল’ : প্রত্যাশা ও প্রাপ্তি —ড. হৈমন্তী দে	৮৪
□ রবীন্দ্র-সাহিত্য ও মননে বাউল চেতনা —ড. কেয়া চক্রবর্তী	৯১
□ সময়ের সংকেত : রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের ছোটগল্প —শতাব্দী শিকদার	৯৬
□ বৈষ্ণবপদাবলীর আলোকে রবীন্দ্রসঙ্গীত —সুরজিৎ মণ্ডল	১০৪
□ পল্লীউন্নয়ন ভাবনায় রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর —আকবর হোসেন	১১১
□ রবীন্দ্র-ছোটগল্পে ট্রাজেডি ভাবনা —দীপক বর্মণ	১১৭

2024/05/16 21:24

বৈষ্ণবপদাবলীর আলোকে রবীন্দ্রসঙ্গীত

সুরজিৎ মণ্ডল

মধ্যযুগের বাংলা সাহিত্যে অন্যতম শাখা হল বৈষ্ণবপদাবলী। রাধাকৃষ্ণের প্রেমকাহিনি যার মূল বিষয়। এই প্রেম যুগ যুগ ধরে মানুষের হৃদয়কে মুগ্ধ করেছে, অল্পুত করেছে। বৈষ্ণবপদকর্তাগণও এই প্রেমের মোহে মুগ্ধ। এই মুগ্ধতাই ফুলে-ফলে সমৃদ্ধি লাভ করেছে বৈষ্ণবপদাবলীতে। বৈষ্ণবকবিতা একদিকে চিরন্তন প্রেমের কাহিনি অন্যদিকে অতলান্ত বেদনার মর্মান্তিক পরিচয়। এই কবিতা শুধুমাত্র মধ্যযুগে নয়, যুগ যুগ ধরে মানুষের হৃদয়কে জয় করেছে। আধুনিক যুগেও এর প্রভাব সুদূরপ্রসারী। আধুনিক সাহিত্যের প্রতিটি শাখায় কম বেশি প্রভাব থাকলেও রবীন্দ্রসাহিত্যে বৈষ্ণবপদাবলীর প্রভাব সুস্পষ্ট। কবিগুরু রবীন্দ্রনাথ নিতান্ত শিশুকাল থেকে মধ্যযুগের বাংলা কাব্য বিশেষতঃ বৈষ্ণবপদাবলীর প্রতি গভীরভাবে অনুরক্ত হয়ে পড়েন। ‘জীবনস্মৃতি’ গ্রন্থে একথা কবি নিজেই স্বীকার করেছেন। শুধুমাত্র বৈষ্ণবপদাবলী নয়, ‘ব্রজবুলি’ ভাষার প্রতিও তাঁর আকর্ষণ লক্ষণীয়। ‘ভানুসিংহের পদাবলী’ তার প্রমাণ। যা পড়তে গিয়ে আজও আমাদের সামনে ভেসে ওঠে বৃন্দাবনের কুসুমকুঞ্জের ছবি, আর দূর থেকে ভেসে আসা হৃদয় উজাড় করা কৃষ্ণের সুমধুর বংশীধ্বনি—

“গহন কুসুম কুঞ্জ মাঝে
মৃদুল মধুর বংশী বাজে,
বিসরি ত্রাস লোক লাজে
সজনি, আও আও লো।”

রবীন্দ্রনাথের বৈষ্ণবসাহিত্য পাঠের ফল লক্ষ্য করা যায় ‘ভূবন মোহিনী প্রতিভা’, ‘বিদ্যাপতি’, ‘চণ্ডীদাস ও বিদ্যাপতি’, ‘বিদ্যাপতির রাধিকা’ প্রভৃতি প্রবন্ধে। এছাড়াও ‘কড়ি ও কোমল’ কাব্যের ‘দেহের মিলন’, ‘সোনার তরী’ কাব্যের ‘বৈষ্ণব কবিতা’য় বৈষ্ণবপদাবলীর প্রসঙ্গ বারে বারে উঠে এসেছে। রবীন্দ্রসঙ্গীতে, কথাসাহিত্যে, নাটকে, এমনকি বিভিন্ন চিঠিপত্রেও বৈষ্ণবপদাবলীর প্রভাব লক্ষ্য করা যায়। মাত্র চব্বিশ বছর বয়সে তিনি তাঁর সাহিত্যিক বন্ধু শ্রীশচন্দ্র মজুমদারের সহযোগিতায় ‘পদরত্নাবলী’ প্রকাশ করেন।

রবীন্দ্রনাথ বৈষ্ণবপদাবলীর দ্বারা প্রত্যক্ষভাবে প্রভাবিত। ‘গীতবিতান’এর বিভিন্ন গানে রাধার কথা, কৃষ্ণের কথা, কুসুমকুঞ্জের কথা, বৃন্দাবন-মথুরার প্রসঙ্গ বারে বারে ঘুরে ফিরে এসেছে। যেমন—

“বাঁশরি বাজাতে চাই, বাঁশরি বাজিল কই।
বহিরিছে সমীরন কুহরিছে পিকগন,

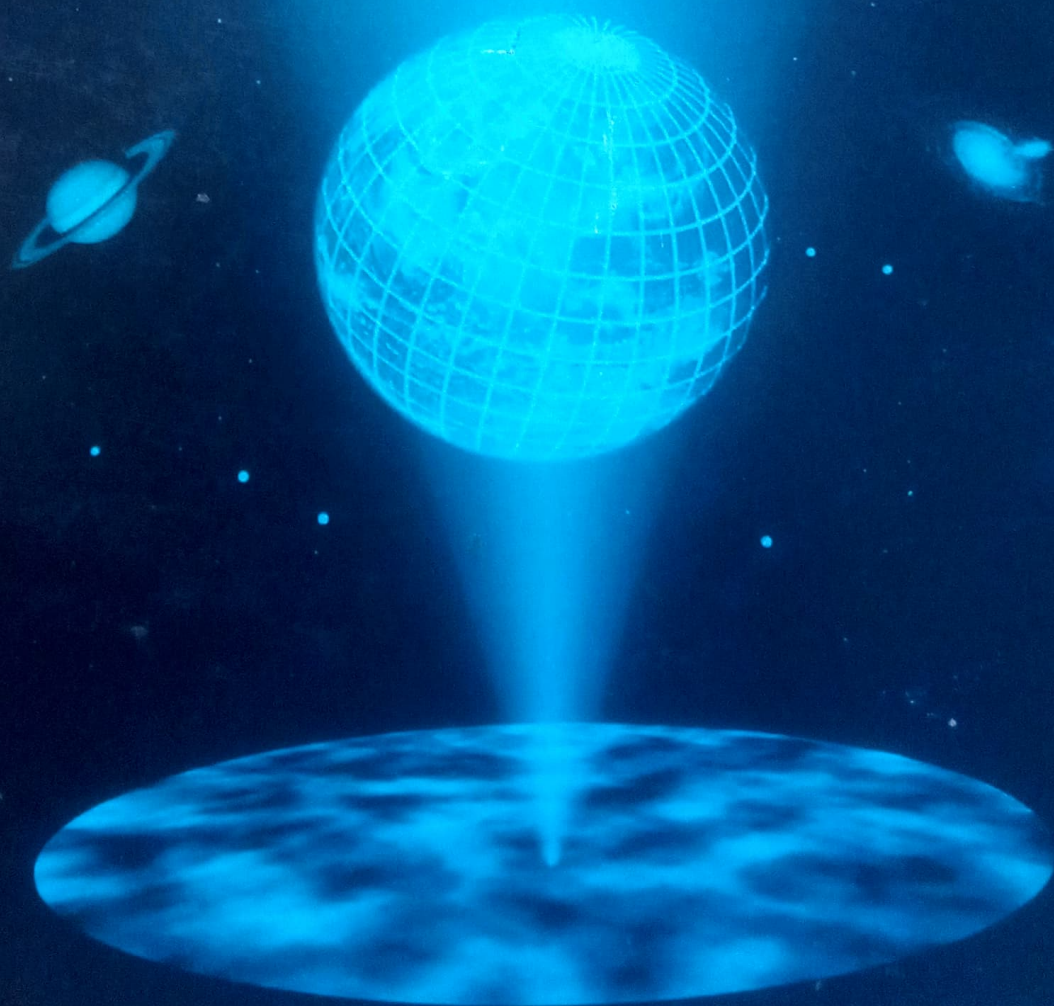
লেখক পরিচিতি

- ১। ড. নিরুপম আচার্য—সহযোগী অধ্যাপক ও বিভাগীয় প্রধান, বাংলা বিভাগ, ভাঙড় মহাবিদ্যালয়। প্রাক্তন সম্পাদক কলাবতী সাহিত্য পত্রিকা। উল্লেখযোগ্য গ্রন্থ ‘অধরা মাধুরী চেতনায় রবীন্দ্রনাথ’, ‘শ্রী চৈতন্যচন্দ্রোদয় চৈতন্যচন্দ্রোদয় কৌমুদী’, ‘গল্পের অন্দরমহল পরম্পরা’, ‘কৃষ্ণকুমারী অন্বেষণ’, ‘আধুনিকতার পর্বাস্তর ও সমাজবীক্ষা’।
- ২। ড. মানস অচার্য—সহকারী অধ্যাপক, বাংলা বিভাগ, বিনোদ বিহারী মাহাতো কয়লাঞ্চল বিশ্ববিদ্যালয়, ধানবাদ।
- ৩। ড. মৃদুল ঘোষ—সহকারী অধ্যাপক, বাংলা বিভাগ, কোচবিহার কলেজ, কোচবিহার।
- ৪। সুব্রত রায়—সহকারী অধ্যাপক ও বিভাগীয় প্রধান, বঙ্গভাষা ও সাহিত্য বিভাগ, বঙ্গাইগাঁও কলেজ, বঙ্গাইগাঁও, আসাম।
- ৫। মৃণ্ময় কুমার মাহাত—সহকারী অধ্যাপক, বাংলা বিভাগ, ময়না কলেজ, পূর্ব মেদিনীপুর।
- ৬। অমলেশ পাত্র—অধ্যাপক, বাংলা বিভাগ, খেজুরী কলেজ, পূর্ব মেদিনীপুর।
- ৭। ড. অরুণ পলমল—সহকারী অধ্যাপক, বাংলা ভাষা ও সাহিত্য বিভাগ, সরকারি মহাবিদ্যালয়, গোপীবল্লভপুর-দুই, ঝাড়গ্রাম।
- ৮। সৌরভ দাস—সহকারী অধ্যাপক, শিলিগুড়ি শিক্ষক-শিক্ষণ মহাবিদ্যালয়।
- ৯। ড. মৌমিতা সরকার—অধ্যাপিকা, বাংলা বিভাগ, আচার্য জগদীশচন্দ্র বসু কলেজ।
- ১০। ড. সুশান্ত মণ্ডল—সহশিক্ষক, নূতনগ্রাম হাইস্কুল, কালনা, বর্ধমান।
- ১১। ড. হৈমন্তী দে—শিক্ষিকা। ভূতপূর্ব গবেষক, বাংলা বিভাগ, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়।
- ১২। ড. কেয়া চক্রবর্তী—অধ্যাপিকা, বাংলা বিভাগ, ড. বি. আর. আশ্বেদকর শতবার্ষিকী মহাবিদ্যালয়, বাগদা, হেলেধা, উত্তর ২৪ পরগণা।
- ১৩। শতাব্দী শিকদার—স্টেট এডেড কলেজ টিচার, বাংলা বিভাগ, ফকির চাঁদ কলেজ। গবেষক।
- ১৪। সুরজিৎ মণ্ডল—স্টেট এডেড কলেজ টিচার, বাংলা বিভাগ, স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়, পূর্ব মেদিনীপুর। প্রাক্তন অতিথি অধ্যাপক—মহিষাদল রাজ কলেজ, পূর্ব মেদিনীপুর।
- ১৫। আকবর হোসেন—সহকারী শিক্ষক, ভগবানপুর হাই মাদ্রাসা (উ. মা.), রাতুয়া, মালদা। গবেষক, বাংলা বিভাগ, রাঁচি বিশ্ববিদ্যালয়, রাঁচি।
- ১৬। দীপক বর্মণ—স্টেট এডেড কলেজ টিচার, বাংলা বিভাগ, যোক্ষাডাঙ্গা বীরেন্দ্র মহাবিদ্যালয়।
- ১৭। পারমিতা ভট্টাচার্য—গবেষক, বাংলা বিভাগ, বর্ধমান বিশ্ববিদ্যালয়।
- ১৮। গৌরঙ্গ বিশ্বাস—গবেষক, বাংলা বিভাগ, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়।

COSMOS: An Effortless and Evergreen Journey on Geo-environmental Track

(Volume-IV: 2021-'22:2nd Research Based Issue: An Effort from Root Level)

**Edited By:
Rabin Das & Dr. Pijush Kanti Dandapath**



Published by
Ashrudyuti Majumdar
Nectar
206, Bidhan Sarani
Kolkata-700006

First Published: 15.06. 2022

Copy Right Holder:
UG & PG Department of Geography
Bajkul Milani Mahavidyalaya
Kismat Bajkul, Purba Medinipur-721655

ISBN: 978-93-84241-71-1

Price Rs. Four hundred only

Page set-up & Printed by
Nectar
206, Bidhan Sarani
Kolkata-700006

COSMOS: Volume-IV: An Effortless and Evergreen Journey on Geo-environmental Tract

Contents			
Sl. No.	Topic	Author (s)	Page No.
1.	<i>Riverine Pollution of Haldi River: A Perception Based Study in and around the Narghat Village, Purba Medinipur, West Bengal</i>	Dr. Pijush Kanti Dandapath, Miss Sumitra Rani Jana and Dr. Baikuntha Behari Josh	1-10
2.	<i>Watershed Characterization by Hypsometric Analysis using Geospatial Techniques: Gagas Watershed, Uttarakhand, India</i>	Surajit Dutta, Sapna Bisht & Satyapriya Mahato	11-21
3.	<i>The Status of Tribal Women in West Bengal: A Qualitative Approach</i>	Aparesh Mondal	22-29
4.	<i>Feminist Qualitative Research on Education: Uncovering Gender Inequalities</i>	Sanjit Debnath	30-36
5.	<i>Armored mud balls and clay bedrock exposure sedimentation at Sankarpur-Chandpur-Tajpur Coastal Tract in PurbaMedinipur</i>	Mintu Jana & Taniya Roy	37-54
6.	<i>Flood Impact Assessment on Landscape: A Case Study of Chistipur-I Village at the Lower Catchment of Keleghai River Basin of PurbaMedinipur in West Bengal</i>	Susanta Ban & Rakesh Patra	55-69
7.	<i>A Brief Theological and Theoretical Review of the Origin, Evolution and Nature of Humans, Culture and Religion</i>	Rabin Das	70-82
8.	<i>The Globalization of Environmental Education</i>	Dr. Debashis Manna	83-86
9.	<i>Impact of Coastal Erosion on Habitation and Occupation of the Fishing Community of Chandpur Village under Ramnagar-I C.D Block in Purba Medinipur District, West Bengal</i>	Dr. Baikuntha Behari Josh, Miss. Sumitra Rani Jana, Dr. Pijush Kanti Dandapath & Pabitra Samanta	87-103
10.	<i>Impacts of Shrimp Farming on the Rural Livelihood and Local Environment: A Perception Study on Chhanberia Village under Deshapran CD Block of Purba Medinipur District in West Bengal</i>	Bishnupada Pal & Rabin Das	104-136
11.	<i>Geo-environmental Connection between Human Health and Townscape as well as Streetscape: A Fission-Fusion Study on Ward-01 under Haldia Municipality in Purba Medinipur District, West Bengal</i>	Jibanananda Samanta & Rabin Das	137-168
12.	<i>Impact of Covid-19 Pandemic on Informal Sector: A case study on tourism centric Worker and Women domestic Worker at Digha Surrounding Village in West Bengal, 2020-2021</i>	Putul Das, Bikash Bhunia, Sikha Kar	169-181
13.	<i>Aquaculture Dynamics and Its Impacts on Livelihood and Environment: A Case Study on Nandigram-I CD Block in Purba Medinipur District</i>	Shakir Alam Shah, Rabin Das & Nirupama Ranjit	182-208
14.	<i>An Optimistic Policy Journey from 5R's to 7R's: A Unique Pathway and Technique in Essence towards Zero Waste Management and Environmental Sustainability</i>	Suman Pahari & Rabin Das	209-221
15.	<i>A Perception Study on the Recent Water Degradation in Narayandari Village under Bhagwanpur-I CD Block in Purba Medinipur District, West Bengal</i>	Sk. Haphejul Islam & Rabin Das	222-250

Feminist Qualitative Research on Education: Uncovering Gender Inequalities

- **Sanjit Debnath** (sanjitkbhs@gmail.com)
- Assistant Professor & Head, Department of Sociology
- Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya, Amdabad, Purba Medinipur

Abstract:

Feminist qualitative research has emerged as a powerful tool for understanding the complex social, cultural and political dynamics that shape educational experiences. Drawing on feminist theories and methodologies, this approach seeks to uncover the ways in which gender, race, class and other intersecting identities influence the experiences of students and teachers in educational settings. This article explores the key principles and practices of feminist qualitative research on education including its focus on empowerment, reflexivity and social justice. Through a review of existing literature and case studies, this article demonstrates how feminist qualitative research can contribute to the development of more equitable and inclusive educational policies and practices.

Keywords: *Feminism, Qualitative research, Education, Methods, Positionality, Pedagogy.*

I. Introduction:

In the field of education, feminist qualitative research has become increasingly popular in the last few decades. Its fundamental principle is that research should be conducted in a manner that challenges power dynamics and advocates for social justice. At the heart of feminist qualitative research on education is a commitment to empowerment. This involves not only giving voice to those who have been traditionally silenced, but also supporting them in their efforts to challenge oppressive structures and enact positive change. Through a focus on reflexivity and critical self-awareness, researchers can work collaboratively with participants to generate knowledge that is situated, context-specific, and meaningful (Donna Haraway, 1988).

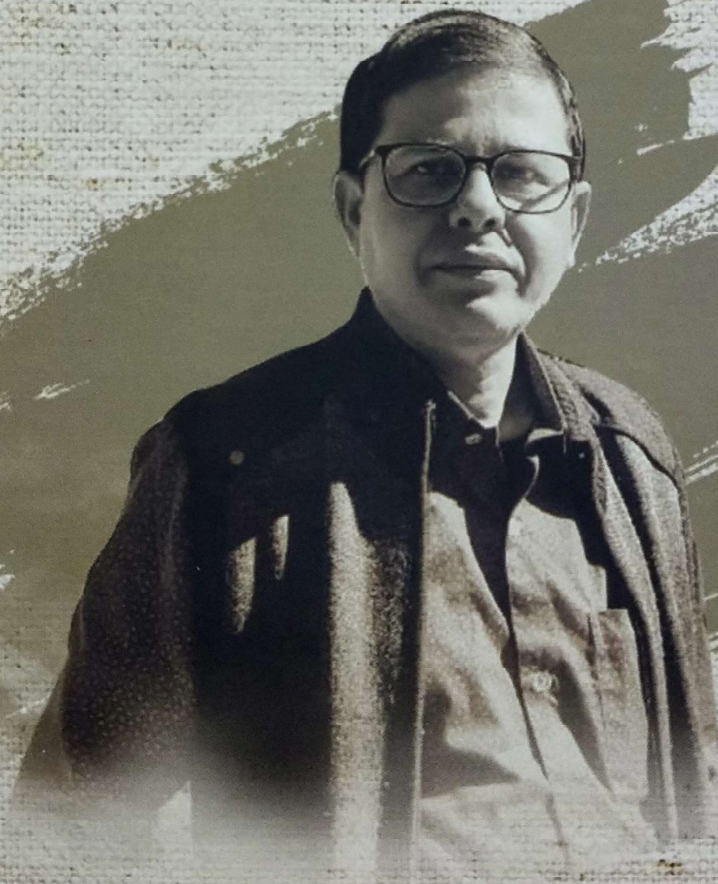
Feminist qualitative research commences with the recognition that all knowledge is situated in the physical bodies and subjectivities of individuals, specifically women and those groups who have been historically marginalized. This article will examine some of the key principles and practices of feminist qualitative research on education, and provide examples of how this approach has been applied in various contexts. By shedding light on the ways in which gender intersects with other axes of identity and power, feminist qualitative research can help to inform more just and equitable educational policies and practices. Ultimately, this approach has the potential to contribute to a more inclusive and socially just educational system, one that values diversity and empowers all learners and educators to reach their full potential.

II. Epistemology of Feminist Research:

A significant part of the conceptual groundwork that underpins feminist qualitative Research today emerged from the scholarship of second-wave feminism. Harding (1991, 2004) argues that

ଆଇଚିଆ ଏକ ପାଠକ

ସମ୍ପାଦନା ହରପ୍ରସାଦ ମାହୁ



AI DUAL CAMERA
Shot by ସୁରଜିତ୍

2024/05/16 21:



AI DUAL CAMERA
Shot by সুরজিৎ

কণীক কান্ত কবচীত

হুগল ন্যায়গুণ

ভূমিকা

প্রথম প্রকাশ

জুলাই ২০২২

প্রকাশক

বাকপ্রতিমা

মহিষাদল, পূর্ব মেদিনীপুর ৭২১৬০৩

চলভাষ : ৯৪৭৪৪০৬৯৭৯ / ৮৭৫৯৪৪৭৮৩৯

E-mail : bakpratima20@gmail.com

ISBN 978-93-91957-02-5

প্রচ্ছদ

মৃণাল শীল

মুদ্রক

দীপক প্রিন্টার্স

৫০, সীতারাম ঘোষ স্ট্রিট, কলকাতা-৯

২০০.০০

2024/05/16 21:26

সূচিপত্র

লক্ষ্যের পথে অবিচল এক পথিক / ড. শম্পা বসু	৯
আমার চোখে প্রভাসদা / ড. সুবিকাশ মুখোপাধ্যায়	১৩
একজন সহজ-সরল ভালো মনের মানুষ / ড. নীলাংশু অধিকারী	১৫
বন্ধুত্ব : এক নাড়ির টান / ড. বিমল গোমস	২১
বিশিষ্ট অধ্যাপক-শিক্ষাব্রতী-সমালোচক / ড. পলাশ খাটুয়া	২৪
আমার ছাত্র প্রভাস / হারাধন বিশ্বাস	২৭
অকপট প্রভাসকুমার / শিশিরকুমার বাগ	৩০
বন্ধু প্রভাস / রত্না সাহা	৩২
এক উদ্ভাসিত সৃজন / সুরত মাইতি	৩৪
শূন্য থেকে শিখরে / হরপ্রসাদ সাহু	৩৬
মানবতার এক উজ্জ্বল নক্ষত্র / রিত্তা সামন্ত	৪১
অভিভাবক-স্থানীয় ও প্রেরণাদায়ক / যাদব মান্না	৪৪
সেদিন থেকে আজ : এক ছাত্রের ডায়েরি / রাখালরাজ দিত্তা	৪৭
স্থির হাস্যমুখর মায়ামণ্ডিত মুখ / শ্যামল গায়েন	৫০
পুরানো সেই দিনের কথা / সুভাষচন্দ্র মন্ডল	৫৭
চরম দারিদ্র্য থেকে জাত এক দরদি অধ্যাপক / সুশীলকুমার বিশ্বাস	৬৩
এক অনন্য ব্যক্তিত্ব / সুরজিৎ মণ্ডল	৬৪
আমার প্রণম্য স্যার / মল্লিকা সাঁতরা	৬৬
স্যার প্রভাস রায় : আমার জীবনে ধ্রুবতারা / সনাতন মান্না	৬৮
আমার পথের দিশারি / অভিজিৎ মাইতি	৭০
সহজ-সরল উজ্জ্বল-প্রাণ অধ্যাপক / সন্দীপ চক্রবর্তী	৭৩
অধ্যবসায় ও একাগ্রতা : 'শিক্ষক' থেকে 'অধ্যাপক' / নীরেশচন্দ্র ভৌমিক	৭৭
ঔপন্যাসিক প্রভাসকুমার রায় ও তাঁর 'রাজদীপ' / ড. তাপস হাইৎ	৭৮
আত্মশক্তির মনীষা 'জ্যোতির্ময়ী আলো' / দেবনাথ দে	৮১
প্রভাসবাবু ও তাঁর 'রাজদীপ' / অনীতা মাইতি	৮৬
আলোর দিশারি / বিউটি রায়	৮৭
আত্মীয়তার বন্ধন / সুনন্দা পন্ডা দীক্ষিত	৮৯
আমার শিক্ষাগুরু / সোমাত্মী মান্না মাইতি	৯২
একটি ব্যক্তিত্বের উপলব্ধি / সুবর্ণা পট্টনায়ক	৯৪
ছেলেটি / শুকলাল কীর্তনিয়া	৯৬
স্মৃতির টুকরো কথা / নৃপেন বিশ্বাস	১০১
বাংলা বিভাগের তথা কলেজের গৌরব / পূজা মাইতি	১০৩
'কোনো মেধাবি ছাত্র এখন বাংলা নিয়ে পড়ছে না' / সাক্ষাৎকার : দেবাজ্ঞান হাজরা	১০৫
প্রভাসকুমার রায় : জীবনপঞ্জি	১১৫
লেখক পরিচিতি	১১৬

এক অনন্য ব্যক্তিত্ব সুরজিৎ মণ্ডল

১৯৬২ সালে পূর্ব পাকিস্তানের ফরিদপুর জেলায় তিনি জন্মগ্রহণ করেন। শৈশব সেখানেই অতিবাহিত হয়। তাঁর বয়স যখন ৯ বছর, তখন পূর্ব পাকিস্তানে শুরু হয় মুক্তিযুদ্ধ। সেই সঙ্গে শুরু হয় সাম্প্রদায়িক দাঙ্গা। প্রভাসকুমার রায় এই মুক্তিযুদ্ধ ও সাম্প্রদায়িক দাঙ্গার প্রত্যক্ষদর্শী বালক। এই যুদ্ধ ও দাঙ্গা কেড়ে নিয়েছে লক্ষ লক্ষ মানুষের প্রাণ। প্রাণভয়ে পূর্বপাকিস্তানের হিন্দুরা তখন দলে দলে পশ্চিমবঙ্গে চলে আসতে থাকে। প্রভাসকুমার রায় ছিলেন এই উদ্বাস্তু মানুষের প্রতিনিধি। জন্মভিটে ছেড়ে অজানা ঠিকানায় পাড়ি দেয় পূর্ব পাকিস্তান থেকে পশ্চিমবঙ্গে। শুরু হয় জীবনের আর এক অধ্যায়।

সমস্ত অভাব অভিযোগকে পেছনে ফেলে অদম্য উৎসাহে ভর করে স্কুলের গাি পেরিয়ে গোবরডাঙা হিন্দু কলেজে বাংলা বিভাগে ভর্তি হন। তারপর ক্রমে ক্রমে কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয় থেকে এম.এ., রবীন্দ্রভারতী বিশ্ববিদ্যালয় থেকে এম.ফিল এবং রাঁচি বিশ্ববিদ্যালয় থেকে পিএইচ.ডি ডিগ্রি অর্জন করেন। ১৯৮৮ সাল থেকে স্কুলে শিক্ষকতা শুরু করেন এবং ১৯৯২ সাল থেকে কলেজে অধ্যাপনা শুরু করেন। বর্তমানে তিনি মহিষাদল রাজ কলেজে বাংলা বিভাগের বিভাগীয় প্রধান (স্নাতকোত্তর)।

পড়াশোনা ও অধ্যাপনার মাঝে তিনি একাধিক গ্রন্থ সম্পাদনা করেছেন। লিখেছেন বহু মৌলিক গ্রন্থ। প্রভাসকুমার রায়ের মৌলিক গ্রন্থগুলি হল — ‘জ্যোতির্ময়ী আলো’ ২০১২ (কাব্যগ্রন্থ), ‘ছোট প্রস্নের আলোকে রবীন্দ্রনাথ ও বিবেকানন্দ’ ২০১৩, ‘প্রফুল্ল রায়ের কথাসাহিত্যে দাঙ্গা ও দেশভাগের প্রসঙ্গ’ ২০১৯, ‘রাজদীপ’ ২০২১ উপন্যাস। এছাড়া সম্পাদিত গ্রন্থের তালিকায় রয়েছে ‘বাংলা সাহিত্যে সাম্প্রদায়িকতা : সমস্যা ও সম্প্রীতি’ ২০০৮, ‘বাংলা সাহিত্যে নারীর জগত’ ২০০৮, ‘নানা রবীন্দ্রনাথ’ ২০১১, ‘আশাপূর্ণা দেবী; নানা চোখে’ ২০১১, ‘রবির আলোয়’ ২০১২, ‘অনন্য বিবেকানন্দ’ ২০১৩, ‘বিদ্যাসাগরের শকুন্তলা’ ২০১২, ‘অমৃত পুরুষ বিদ্যাসাগর’ ২০১৯। এছাড়াও বিভিন্ন পত্র-পত্রিকায় তিনি নিয়মিত লিখে চলেছেন।

এবার ব্যক্তিগত প্রসঙ্গে আসি। সৌভাগ্যক্রমে প্রভাসকুমার রায়ের সঙ্গে আমার পরিচয় কর্মসূত্রে। ২০১৮ সালে মহিষাদল রাজ কলেজে আমি অতিথি অধ্যাপক হিসেবে জয়েন করি, তারপর দীর্ঘ দেড় বছর ওনার সান্নিধ্যে থেকেছি। সর্বদাই প্রভাসবাবুকে আমরা শিক্ষক হিসাবে কাছে পেয়েছি। ক্লাসে পড়ানোর ক্ষেত্রে যখন সমস্যায় পড়েছি, তখনি ছুটে গিয়েছি স্যারের কাছে। ওনার সহজ সরল ব্যবহার ও পাণ্ডিত্যে আমরা সর্বদাই আশ্বস্ত হয়েছি। বিভিন্ন অনুষ্ঠানে কিংবা সেমিনারে স্যারের বক্তব্য আমরা মন্ত্রমুগ্ধের মতো শুনতাম। তৃপ্তি পেতাম। একই ভাবে তৃপ্তি পেয়েছি স্যারের বিভিন্ন গ্রন্থগুলি পড়ে। প্রসঙ্গক্রমে ‘রাজদীপ’-এর কথা না বললেই নয়। ‘রাজদীপ’ যেন প্রভাসকুমার রায়ের শৈশবের লীলাভূমি।

সুবিকাশ মুখোপাধ্যায়

১৯৭০ খ্রিস্টাব্দে জন্ম। এমএসসি, এমফিল, পিএইচডি। মহিষাদল রাজ কলেজের অর্থনীতির অ্যাসোসিয়েট অধ্যাপক এবং বিভাগীয় প্রধান। থাকেন মহিষাদলে।

সুব্রত মাইতি

১৯৫৩ খ্রিস্টাব্দে ৪ অক্টোবর জন্ম। এমবিবিএস, চিকিৎসক। চেন্নার রঙ নামে একটি লিটল ম্যাগাজিন সম্পাদনা করেন। ‘শিকড়ের সংসার’ ও ‘পুতুলমানুষ’ নামে দুটি গল্পগ্রন্থ প্রকাশিত হয়েছে। থাকেন মহিষাদলে।

সুভাষচন্দ্র মণ্ডল

১৯৬০ খ্রিস্টাব্দে জন্ম। এমএ., বিএড। অবসরপ্রাপ্ত শিক্ষক। নাটক লেখা, নির্দেশনা ও অভিনয় করেন। তাঁর লেখা ও অভিনীত উল্লেখযোগ্য নাটক : ভাসান, বাদাবনের জননী, ময়না কথা কও, রক্তাক্ত রাজপুতানা, সোনার গাঁয়ের সোনার মেয়ে প্রভৃতি। থাকেন কলকাতার গড়িয়ায়।

সুরজিৎ মণ্ডল

১৯৯০ খ্রিস্টাব্দে জন্ম। তাম্রলিপ্ত মহাবিদ্যালয় থেকে এমএ। সেট পাশ। আমদাবাদ স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ে অধ্যাপনা করেন। বিভিন্ন পত্র-পত্রিকায় তাঁর লেখা প্রকাশিত হয়েছে। থাকেন বাজকুলে।

সুশীলকুমার বিশ্বাস

১৯৫১ খ্রিস্টাব্দে জন্ম। কানাড়া ব্যাক্ষে উচ্চ পদে চাকরি করতেন। সমাজসেবী ও যুক্তিবাদী সম্ভের সদস্য। থাকেন উত্তর ২৪ পরগনার পলতায়।

সোমাস্রী মান্না মাইতি

১৯৯৫ খ্রিস্টাব্দে জন্ম। এমএ, বিএড। ২০১৮ খ্রিস্টাব্দে বিদ্যাসাগর বিশ্ববিদ্যালয়ে বাংলা অনার্সে স্বর্ণপদকপ্রাপ্ত। থাকেন চৈতন্যপুরে।

হারাধন বিশ্বাস

১৯৪৫ খ্রিস্টাব্দে জন্ম। অবসরপ্রাপ্ত শিক্ষক ও সমাজসেবী। থাকেন উত্তর ২৪ পরগনার বাড়ি বনগাঁ মহকুমা রামশংকরপুর গ্রাম।

হরপ্রসাদ সাহু

১৯৫৯ খ্রিস্টাব্দে জন্ম। এমএ, বিএসসি, বিএড। শিক্ষকতা। ‘লোককৃতি’ পত্রিকার সম্পাদক। পনেরোটি কাব্যগ্রন্থ, আঠারোটি সম্পাদিত গ্রন্থ এবং পাঁচটি আঞ্চলিক ইতিহাসগ্রন্থ রচনা করেছেন।

Empowering WOMEN

THROUGH EDUCATION

Prof. (Dr.) Mita Banerjee

Dr. Aniruddha Saha



KANYASHREE UNIVERSITY

Krishnagar Govt. College Campus
Krishnagar, Nadia, West Bengal 741101

Empowering Women through Education

Edited by

Prof. (Dr.) Mita Banerjee

Vice Chancellor, Kanyashree University

Vice Chancellor, Murshidabad University (additional charge)

&

Dr. Aniruddha Saha

Assistant Professor, Asannagar Madan Mohan

Tarkalankar College, Asannagar, Nadia

Guest Faculty, Kanyashree University



Kanyashree University

Krishnagar Govt. College Campus

Krishnagar, Nadia, West Bengal 741101

Empowering Women through Education
Edited by Prof. (Dr.) Mita Banerjee & Dr. Aniruddha Saha

Copyright © Kanyashree University, Krishnagar, Nadia

First Edition : 15th December, 2022

ISBN : 978-81-953829-6-5

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or stored or transmitted or utilised in any form or by any means not known or hereinafter invented, mechanical, electrical or digital, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without the prior permission in writing to the editor through Alpana Enterprise. Enquiries concerning reproduction should be sent to the editor through Alpana Enterprise at the address below.

Published by :

Alpana Enterprise

9, Bir Ananta Ram Mondal Lane,

Sinthee, Kolkata-700 050

Mobile : 9804135725//9836821125

E-mail : alpanaenterprise05@gmail.com

Type Setting : Sudip Chowdhury

Printed by : S. I. Pvt. Ltd., Kolkata- 700 009

Cover Design By : Arindam Biswas

Price : 795.00

Contents

1. Empowering Women through Education Prof. (Dr.) Dibyendu Bhattacharyya	11
2. A Study on Women's Empowerment in India: Progress and Prospect Dr. Abhedananda Panigrahi & Arpita Chakrabarti	21
3. Empowering Rural Women Through Tourism : An Overview Arpita Majumder	32
4. Empowering Women: A Path to an Empowered Country Amrita Datta	42
5. Role of Kanyashree Prakalpa to Prevent the Barriers of Women Education in Murshidabad District Shreya Bhattacharjee	59
6. Empowering Women Towards a Better Future for Humanity and Achieving Gender Equity in Education in India Dr. Sanjoy Ghosh	67
7. Effectiveness of Life Skills in Women Empowerment: An Overview Shabana Yasmin	81
8. The Role of ICT to Improve Quality of Education of Woman's in India Bijay Gayen	91
9. Modern Concept of Woman Education According to Swami Vivekananda's Views Ranjusree Sarkar	99

10. Relationship between Education and Women Empowerment in India	105
Jaba Pal	
11. Indian Constitutional Jurisprudence Vis-À-Vis Women Educational Rights Concerning the State of West Bengal	118
Mir Shatil	
12. Harassment in Higher Educational Institutions: Impacts on Female Students	128
Rukshana Aktar Mazumder	
13. A Study on ‘Pygmalion Effect’: Kanyashree Prakalpa and Women Empowerment	138
Samrat Sikder	
14. Role of Education in Women Empowerment	148
Dr. Disari Roy	
15. Role of Education in the Empowerment of Women in India: Issue and Impact	158
Anusree Paul	
16. Recitation; A Prospective Way Towards Women Empowerment Needs More Institutional Support	167
Sujal Dutta	
17. Women Empowerment and use of Information and Communication Technology in the Context of Urban Women of West Bengal	174
Ms. Ambika Thapa & Dr. Barnali Mandal	
18. Is Posthuman Motherhood a Step Towards Women Empowerment ?	185
Tiyasa Dey	

19. Education, Women Empowerment and Islam: Problems and Prospects	191
Mosira Parvin	
20. The History of Women Education In India and Government Initiatives	202
Rakesh Kumar Roy	
21. Ecology and Gender based Violence : Explaining the Link between Gender-based Violence and Ecology	221
Dr. Shamoli Bhattacharya	
22. A Study of Female Teacher Self-Empowerment of Secondary School of Paschim Medinipur District	234
Dr. Nirnjan Maity, Dr. Smriti Roy & Dr. Arun Maity	
23. Kanyashree Prakalpa: An Apparatus for the Empowerment of Adolescent Girls in West Bengal	242
Santu Biswas	
24. Women Empowerment and Cyber Security: Sustaining Cyberspace through Quality Education	255
Subhra Shankha Chakraborty & Dr. Subhankar Ghosh	
25. Women Empowerment through Education as Visioned by Raja Rammohan Roy	263
Sanghamitra Basu Roy & Prof. (Dr.) Mita Banerjee	
26. Aspect Analysis of Knowledge from the Vedantic Philosophy of Swamiji on Women education	272
Partha Sarathi Sarkar	
27. Psycho-Social Problems of Women's Education	279
Ujjwal Mahato, Suchismita Sau, Milan Mandal, Dr. Udayan Mandal	

28. A Study on Gender Equality and Women Empowerment: A New Insight into Sustainable Development Goals Sania Sami & Prof. (Dr.) Soma Roychowdhury	287
29. Quenching The Thirst for Education: A Study on Government Initiatives to Women Education Saheli Chatterjee	297
30. A Study for Gender Discrimination in 21st Century of West Bengal (India) Rimi Mondal	307
31. The Essentiality of Education in Women Empowerment Nilufa Yasmin	313
32. Women and Education :Problems of Women's Education Mrityunjoy Mazumder	324
33. Understanding The Status of Women's Education in North East India Dipak Sah	328
34. Women and M (Other): Education and Empowerment Women and Empowerment Rajat Suvra Mandal	337
35. Women Empowerment in 21st Century in India Binoy Roy & Tapasi Howlader	347
36. Women Empowerment in The Vedic Litarature Bandana Das	358
37. Women Empowerment: An Approach Towards Gender Equality Nishat Yasmin	367

38. Women Empowerment through Art and Craft (Patachitra): A Case Study on the Woman Patua of Naya Village	378
Sangeeta Koley	
39. Women's Awareness on Seeking the Right to Information Act (RTI) - A Case Study among Postgraduates Students in Coimbatore	385
S. Nithyanantham & Dr. P.E.Thomas	
40. Women's Empowerment: NEP 2020 and Changing Roadmaps	392
Dr. Tulika Chakraborty	
41. নিম্নবর্ণ ও নারী - সর্বর্ণ ভারি ! (ঔপনিবেশিক ভাবাদর্শ, পুরুষতান্ত্রিকতা, নারীসংস্কার ও শিক্ষানীতি)	405
আশুতোষ বাল	
42. ইসলামি বাংলা প্রাইমার : নারীশিক্ষা ও নারীনির্মাণে ফিরোজ খান	413
43. নারীর ক্ষমতায়নের অধিকার : প্রাচীন ভারতের প্রেক্ষিতে	427
ড. সোমনাথ কর	
44. শিক্ষার মাধ্যমে নারীর ক্ষমতায়ন ও নারী শিক্ষার সমস্যা	433
দূর্বা দে	
45. Empowering Women Through Education	439
Swagata Sarkar	
46. Women Empowerment through Self Help Groups (S.H.G.) at Ward No. 18 in Nabadwip Municipality, Nadia, West Bengal	450
Lisha Saha	

47. Commercial Ad films and Women Education Deboleena Dutta	458
48. Position of Women in Nineteenth Century through the Light of Rasasundari Devi's "Amar Jibon" ("My Life") Moumita Mandal	465
49. Effect of Internship on Female Teacher Education in B.Ed. Programme Dr. Sangita Roy	471
50. Educational Status of Women in Vedic Period Arpita Sinha	483
51. Rights of Children of Sex Workers in India Dr. Marisha Chakrabarti	488
52. List of Contributors	509

3

Empowering Rural Women Through Tourism : An Overview

Arpita Majumder

Abstract

In most developing countries, gender inequality is a great hindrance for development. Discrimination between men and women is a practice in every patriarchal society throughout the world. Women are basically designated as care giver, home maker, someone's mother, daughter, wife and so on. They have very little freedom to spend a rupee without her father or husband's consent. They have no freedom to take decision for their life as well . Women empowerment actually means the process of strengthening them to make capable for their own decision making as they can make capable themselves for their family ,community , traditional forces of gender biases and so on. Over decades tourism activities and its associated sectors are flourishing over the world in many aspect to develop the areas in local level or national level. Tourism is using as a tool to empower women and help them to increase power and control over nature and natural resources. Tourism development can be a great incentive for development and assist women for economic, educational, and political empowerment. Tourism offers many opportunities for developing countries and it can be a machine for empowering women of rural society. Many countries are practicing different kind of tourism activities and women are participating actively in this sector. Of all people employed in the tourism sector 60-70% are women(UNWTO, 2008). This paper tries to show the potentials and success of the tourism activities to empower the rural women along with the role of women in tourism development in sustainable way.

Keywords : Gender Inequality, Women's Empowerment, Tourism Development, Gender Tourism.

LIST OF CONTRIBUTORS

Prof. (Dr.) Dibyendu Bhattacharyya
Department of Education
University of Kalyani

Dr. Abhedananda Panigrahi
Coordinator, B.Ed.,
School of Education,
Netaji Subhas Open University,
Kolkata.

Arpita Chakrabarti
SACT, Dept of Education,
Dumdum Matijheel
Rabindra Mahavidyalaya

Arpita Majumder
Assistant Professor, Department
of Geography,
Swarnamoyee Jogendranath
Mahavidyalaya,
Purba Medinipur
E-mail : arpitaindian@gmail.com

Amrita Datta
Assistant Professor,
Kamala Devi Sohanraj Singhvi Jain
College of Education

Shreya Bhattacharjee
Email id - shreyabhattacharjeesb@gmail.com

Dr. Sanjoy Ghosh
Principal of Prabharani B. Ed. College
Berhampore, Murshidabad,
West Bengal, Pin – 742102
Email Id – sanjoyghosh1981@yahoo.com

Shabana Yasmin.
Assistant Professor,
Department of Education,
Sadhan Chandra Mahavidyalaya,
South 24 Parganas

Bijay Gayen
Independent Scholar
South 24 Paraganas,
West Bengal, India

Ranjusree Sarkar
Assistant Professor,
S.C.B.C. College, Lalbagh, Murshidabad

Jaba Pal
Department of Education,
The University of Burdwan,
West Bengal, India
E-mail : jabapal2017@gmail.com

Mir Shatil
Asst. Professor in Law,
Bimal Chandra College of Law
E-mail : mirshatil19@Gmail.Com

Rukshana Aktar Mazumder
E-mail : aktarukshana@gmail.com

Samrat Sikder
Ph.D. Research Scholar
Baba Saheb Ambedkar Education
University
(Erstwhile the West Bengal
University of Teachers'
Training, Education Planning and
Administration),
Kolkata, West Benegal
E-mail : samrat.phdedu@gmail.com

Dr. Disari Roy
Assistant Professor in Women's Studies,
Diamond Harbour Women's University
E-mail : disari.presi24@gmail.com

Anusree Paul
Student, 3rd Semester
Department of Education
Kanyashree University
E-mail: anusreepaul2000@gmail.com

Sujal Dutta
Assistant Teacher,
Balagarh High School
(H.S), Hooghly, W.B.,
E-mail: sujalsnehadutta@gmail.com

Book Chapter Published in the Year: 2023



আয়ুর্বেদ কালে কালান্তরে

ড. নবনীতা বাগ মাইতি

ড. বিভাস মিস্ত্রী

সম্পাদিত

প্রথম প্রকাশ
আগস্ট ২০২৩

প্রকাশক

বাকপ্রতিমা

মহিষাদল, পূর্ব মেদিনীপুর ৭২১৬২৮

ই-মেল : bakpratima20@gmail.com

ISBN 978-93-91957-15-5

প্রচ্ছদ

মৃণাল শীল

মুদ্রক

দীপক প্রিন্টার্স

৫০ সীতারাম ঘোষ স্ট্রিট, কলকাতা-৯

মূল্য

৬৫০ টাকা

আয়ুর্বেদ এবং অন্যান্য পরম্পরাগত চিকিৎসাপদ্ধতির মৌলিক নীতি

সঞ্জিত দেবনাথ

১৩৩

তুলসীর ঔষধীয় উপাদান এবং হোমিওপ্যাথ

খোকন মাইতি

১৪৩

সংক্রমক রোগ নিরাময়ে চরকসংহিতার অবদান

বিপাশা কর্মকার

১৫২

মানবদেহের আরোগ্য কামনায় চরকসংহিতার চিকিৎসাস্থানের অবদান :

একটি সমীক্ষাত্মক অধ্যয়ন

রাজকুমার চক্রবর্তী

১৬৭

বর্তমান সমাজে আয়ুর্বেদশাস্ত্রের প্রয়োজন উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশ

রাহুল দাঁ

১৭৫

প্রাচীন ভারতীয় আয়ুর্বেদ ও চিকিৎসাশাস্ত্রে মহর্ষি সুশ্রুতের অবদান

বিধানচন্দ্র রায়

১৮২

মানবকল্যাণে বৈদিক-পৌরাণিক পরিবেশ ও স্বাস্থ্যবিধি

প্রলয় মণ্ডল

১৮৮

গরুড় পুরাণে বর্ণিত আয়ুর্বেদের গুরুত্ব

কুহেলী প্রামানিক

২০২

ভারতীয় আয়ুর্বেদে চরকসংহিতার অবদান

নিমাই পাল

২১৩

বাতব্যাদির লক্ষণ ও চিকিৎসা সংক্রান্ত বিস্তৃত আলোচনা

মহঃ ইসরাফিল

২২৩

আয়ুর্বেদের আলোকে ফ্যাটি লিভার ও তার উপশম : একটি পর্যবেক্ষণ

জনি খাঁ

২৩১

বাল্মীকি রামায়ণে আয়ুর্বেদ বিবেচনা

মধুশ্রী লাহা

২৪২

দিব্যতুলসীর আয়ুর্বেদিক গুরুত্ব

মধুমিতা জানা

২৫০

আয়ুর্বেদ শাস্ত্রে রস সমীক্ষা

শ্রীশ্রবণ বিশ্বাস

২৫৭

দৈনন্দিন আহারে আয়ুর্বেদ : একটি সংক্ষিপ্ত অধ্যয়ন

মধুমিতা পান

২৬৮

আয়ুর্বেদের দৃষ্টিতে সাংখ্যশরীরতত্ত্ব একটি সমীক্ষাত্মক আলোচনা

নীলকান্ত দাস অধিকারী

২৭৬

আয়ুর্বেদ এবং অন্যান্য পরম্পরাগত চিকিৎসাপদ্ধতির মৌলিক নীতি

সঞ্জিত দেবনাথ

বিশ্বের অন্যতম প্রাচীন ও সুপ্রসিদ্ধ চিকিৎসা পদ্ধতি হিসাবে ভারতীয় আয়ুর্বেদ তার সুনাম ধরে রাখতে সমর্থ হয়েছে এবং একই সাথে যুগের সঙ্গে তাল মিলিয়ে আরও বিকশিত হয়ে চলেছে। আয়ুর্বেদ একটি সুসংহত পদ্ধতি হিসাবে কাজ করে, যেখানে বিশ্বাস করা হয়, যে প্রকৃতির সাথে সামঞ্জস্য রেখে মানবদেহের গঠন হয়েছে এবং এর কার্যপ্রণালী প্রকৃতি তথা মহাবিশ্বের বিভিন্ন উপাদানের সমষ্টি দ্বারা প্রভাবিত হয়। মানবদেহের কার্যপ্রণালীকে সুসংহত করতে বা কার্যপ্রণালীতে ব্যাঘাত ঘটলে প্রকৃতি নির্ভর ঔষধী প্রয়োগ করা হয়। তাই আয়ুর্বেদ প্রকৃতি নির্ভর বনৌষধির বিশাল জ্ঞানভাণ্ডারকে উন্মোচিত করে। আয়ুর্বেদ এবং অন্যান্য পরম্পরাগত চিকিৎসাপদ্ধতিকে বাঁচিয়ে রাখার জন্য এবং আরও বিকশিত করতে এই ক্ষেত্রের সাথে যুক্ত গবেষক, অনুশীলনকারী, এবং বিশেষজ্ঞদের বিশেষ দায়িত্ব গ্রহণ করতে হবে। তবে প্রচলিত ভাষায় এই সম্পর্কিত সাহিত্যের অভাব এবং বিভিন্ন নুকুলগোষ্ঠী থেকে উৎসারিত প্রাচীন চিকিৎসা পদ্ধতির মৌলিক নীতি ও ইতিহাস সম্পর্কে সচেতনতার অভাব বিশ্বজুড়ে ঐতিহ্যগত চিকিৎসাপদ্ধতিগুলি থেকে তথ্য বিনিময়ের ক্ষেত্রে বাধার সৃষ্টি করে, যা পরম্পরাগত চিকিৎসা পদ্ধতিকে টিকিয়ে রাখার ক্ষেত্রে প্রধান অন্তরায়স্বরূপ। বিভিন্ন নুকুলগোষ্ঠী জ্ঞানধারার মধ্যে পারস্পারিক আদান প্রদানের মাধ্যম হিসাবে ভেষজ ঔষধ গবেষণার একত্রীকরণ এবং অগ্রগতিতে নিজেদের অবদান রাখতে পারবেন। উক্ত বিষয়গুলিতে তখনই সাফল্য অর্জন করা সম্ভব যখন কেউ নুকুলগোষ্ঠীর জ্ঞানপদ্ধতি, নীতি ও তাদের ইতিহাস সম্পর্কে সঠিক জ্ঞান অর্জন করতে পারবে। একই সাথে বিভিন্ন পরম্পরাগত চিকিৎসা পদ্ধতিগুলির মধ্যকার সমরূপতাগুলি সনাক্তকরণের মধ্য দিয়ে সামগ্রিকভাবে ঐতিহ্যগত চিকিৎসা পদ্ধতিকে অধিক বিকশিত করা সম্ভব। তাই আলোচ্য গবেষণা পত্রটি আয়ুর্বেদসহ প্রধান প্রধান ঐতিহ্যগত চিকিৎসাপদ্ধতিগুলির মৌলিক নীতির উপর আলোকপাত করবে।

কোন দেশের স্বাস্থ্যব্যবস্থার উপর সেই দেশের উন্নতি অনেকাংশে নির্ভর করে। ভারতের মতন বিপুল জনসংখ্যার দেশে প্রত্যেক নাগরিকের নিকট উন্নত স্বাস্থ্যপরিষেবা পৌঁছে দিতে হলে প্রচলিত পরম্পরাগত স্বাস্থ্যব্যবস্থাকে যেমন উন্নত করতে হবে তেমনই